राका

1984-85

राका

(1984-85)

प्रधान सम्पादक
डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव

राजधानी कॉलेज, नई दिल्ली
दिल्ली विश्वविद्यालय

सम्पादक-मंडल

हिन्दी	:	डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव
अंग्रेजी	:	श्री आर० एस० जी राव
		श्री अनिल भट्ट
संस्कृत	:	डॉ० राममुरेश पांडेय

छात्र-सम्पादक

अखिल अनूप	संजय अग्रवाल
रमेश कुमार	महेन्द्र भट्ट

छात्र-सम्पादक की कलम से—

लिखने की शुरुआत प्राय: शौक से होती है, किन्तु इसमें सार्थकता तभी आती है, जब लिखना धर्म बन जाय। सामाजिक सरोकारों से नाता तोड़कर सृजन करना, दरअसल, सृजन को उपहासास्पद बनाना है। यह कहना तो गलत होगा कि सामाजिक सरोकारों से संबद्ध रचनाएँ लिखी नहीं जा रही, पर कम लिखी जा रही हैं, यह सच है। हालांकि यह स्थिति चिन्तनीय कही जा सकती है, किन्तु हमेशा ऐसा ही हुआ है, जब सचेत रचनाकारों ने परम्परागत लीक से हटकर एक दृष्टि अपनाई और विकसित की। युग की आवश्यकताओं के अनुरूप मान्यताओं में परिवर्तन करके, तदनुरूप रचना करना कंटकाकीर्ण भले ही हो, निरर्थक नहीं होता। इसी समझ को आज और अधिक विकसित और व्यापक करने की जरूरत है।

कुछ लोग इस बात पर अक्सर टिप्पणी करते हैं कि सामाजिक संरचना में उत्तरोत्तर सम्मिलित होती जा रही नई पीढ़ी के पास कोई दिशा नहीं है। वह प्रतिक्रियावादी है तथा रचनात्मक कार्यों से विमुख। वस्तुत: ऐसा सोचना गलत है। आज, जबकि अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर युवा वर्ष मनाया जा रहा है, इस तरह के दिग्भ्रमित दृष्टिकोण पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। गत वर्ष पोठिका के रूप में हमने 'दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी का नव चिन्तन' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया था। उसमें चकित कर देने वाले निष्कर्ष सामने आये थे। किसी ने भी युवा वर्ग की दिशाविहीनता के लिए उसे ही जिम्मेदार नहीं माना। कुछ ने तो उसे दिग्भ्रमित मानने से ही इन्कार कर दिया। कुल मिलाकर बात यह निकली कि जिसे आम तौर पर युवा-वर्ग की दिशाहीनता माना जाता है वह, दरअसल, एक नई दिशा की खोज की छटपटाहट है।

अन्य वर्षों की भांति इस वर्ष भी रचनाएँ कम नहीं मिलीं, लेकिन सार्थक-सोद्देश्य रचनाओं का खासा अभाव रहा। इसके बावजूद हमारी कोशिश रचनाकारों के साथ न्याय करने की रही है। फिर भी यदि किन्हीं को इस पत्रिका के पृष्ठों में स्थान नहीं मिल सका, तो इसका कारण रचना की गुणवत्ता में कमी ही नहीं, हमारे पास सीमित पृष्ठों का होना भी था। यों भी प्रकाशन मात्र निमित्त होता है, अभीष्ट नहीं। रचनाकारों की नियति ही संघर्ष की होती है। वे संघर्ष करें। सृजन का संघर्ष। प्रकाशन के दरवाजे अपने आप खुल जाएंगे। 'राका' के प्रकाशन का पूरा श्रेय सदाशयी रचनाकारों को है; और इसमें निहित सभी कमियों की जिम्मेदारी हमारी। अपने शुभचिन्तकों और लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता का निर्वाह नहीं, अपने अन्तर में कृतज्ञता अनुभव करना है।

सभी साथियों के प्रति अनन्त शुभकामनाओं सहित

—अखिल अनूप

विषय–क्रम

		पृष्ठ सं०
१.	बढ़ती आबादी : एक बीमारी	आनन्द सिंह ५
२.	राजधानी कालेज	जितेन्द्र नारंग ७
३.	हम क्या-क्या खाते हैं	जितेन्द्र नारंग ७
४.	बापू और हम	संजय वालिया ८
५.	प्रगति का शत्रु : प्रदूषण	राजीव कुमार दुबे ९
६.	किस्मत का थैला	राजीव नारंग १२
७.	शिक्षा-प्रणाली कैसी हो ?	दीनदयाल चतुर्वेदी १३
८.	सावधान ! मेहमान आ रहे हैं !	डा० रमाशंकर श्रीवास्तव १७
९.	दर्द के मंज़र	विमल २३
१०.	अचानक	अनिल कुमार मित्तल २४
११.	नारी ! तुम क्या हो ?	नरेन्द्र कुमार २५
१२.	शाप	विजय कुमार २६
१३.	जिन्दगी	कैलाश चन्द तंवर २७
१४.	समय	विजय सिंह २८
१५.	संस्मरण	राम हित नन्दन २९
१६.	भारत माता	राहुल देव शर्मा ३०
१७.	मर्जी	सुनील गुप्ता ३१
१८.	अनमोल मोती	रजनीश गुलाटी ३१
१९.	प्रेम और मित्रता	वीरेन्द्र कुमार ३२
२०.	साम्प्रदायिकता की आग	दर्शन सिंह ३४
२१.	विचित्र परिभाषाएँ	राजेन्द्र राना ३६
२२.	एक बलि और	राकेश मांगलिक ३७
२३.	नैतिकता	सुदेश नंदवानी ३९
२४.	दुकान एक भाषण की	विनोद बंसल ४१
२५.	वैधव्य	श्री अनिल भट्ट ४२
२६.	साहब जी, चाय ?	डा० रमाशंकर श्रीवास्तव ४३
२७.	वह क्या था ?	भारत भूषण ४९
२८.	अवलोकन	कालेज रिपोर्ट ...

बढ़ती आबादी : एक बीमारी

आनन्द सिंह
बी०ए०, राजनीति शास्त्र, विशेष (द्वितीय वर्ष)

प्रत्येक जीव में सुरक्षा और प्रजनन के भाव स्वाभाविक रूप से पाए जाते है। सन्तानोत्पति इसी स्वाभाविक भावना की देन है। इसी कारण पृथ्वी पर जनसंख्या का बोझ बढ़ता जा रहा है। जनसंख्या का इस दृष्टि से बढ़ना उचित है कि जनसंख्या श्रम शक्ति का स्रोत होती है। किन्तु यदि जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ना आरम्भ कर दे तो यह विकास के मार्ग में बाधक सिद्ध होती है। वर्तमान शताब्दी में भारत भी इसी दौर से गुजर रहा है। जनसंख्या के आकार की दृष्टि से भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा देश है। जनसंख्या की बढ़ती रफ्तार आज चिन्ता का कारण बनी हुई है!

सरकार की भरपूर कोशिशों के बावजूद हमें जनसंख्या की इस गति को रोकने में उतनी सफलता नहीं मिल पाई जितनी मिलनी चाहिए थी। आखिर क्यों हमें सफलता नही मिली? इसके कुछ कारण है। सर्वप्रथम-भारत में पिछले कुछ सालों से मृत्युदर में कमी आई है जिसके मुकाबले में जन्मदर बढ़ती रही है। और भारत की जलवायु गर्म है। ऐसी जलवायु में लड़के और लड़कियों में जल्दी परिपक्वता आ जाती है। लड़कियाँ प्रायः १४ वर्ष की अवस्था में ही परिपक्व हो जाती हैं। जनसंख्या की इस समस्या के लिए भारतीय समाज भी जिम्मेदार है। भारत में प्रत्येक के लिए विवाह करना एक सामाजिक अनिवार्यता है। अविवाहित लड़के, लड़की तथा निःसन्तान स्त्री पुरुष को समाज में हीन दृष्टि से देखा जाता है। इसके अलावा भारत में अशिक्षित ग्रामीण जनता में लड़के लड़कियों की शादी छोटी उम्र में ही कर दी जाती है। वास्तव में भारत में छोटी उम्र में शादी करने की प्रथा आज तक प्रचलित है। अनुमान है कि ८० प्रतिशत लड़कियों की शादियां १४ से १९ वर्ष की आयु में हो जाता है। उस पर हिन्दू धर्म में पिता की मुक्ति के लिए कम से कम एक पुत्र अनिवार्य माना जाता है। इस अभिलाषा की पूर्ति में जन्मदर अधिक होती है।

हमारे देश में बढ़ती आबादी के लिए आर्थिक कारण और अशिक्षा भी जिम्मेदार है। भारत एक निर्धन देश है। यह अधिक सन्तान की देन है। इसके कई कारण हैं; एक तो माँ-बाप यह सोचते है कि अधिक बच्चे अधिक कमाकर लायेंगे दूसरे, निर्धन व्यक्तियों के पास मनोरंजन का साधन उनकी पत्नियाँ होती हैं। तीसरे, पर्याप्त पौष्टिक भोजन न मिलने के कारण निर्धन परिवारों में बच्चों की मृत्यु दर भी अधिक होती है। फलस्वरुप ऐसे परिवार अधिक बच्चे पैदा करने पर बल देते हैं। जिससे कुछ बच्चे तो जीवित रहकर परिवार को चला सकें। इसके अलावा भारत के गाँवों में अधिकांश लोग अशिक्षित हैं। वे भाग्यवादी है। और अधिक सन्तान को 'भाग्य का लक्षण' तथा 'भगवान की देन' मानते है। वे अधिक सन्तान का आर्थिक प्रभाव नहीं समझते और न ही वे परिवार

नियोजन के साधनों के महत्व को समझते हैं। इसका परिणाम आज हमारे सामने है। देश आज जनसंख्या की बढ़ती रफ्तार के कारण कई समस्याओं की चपेट में फंस गया है।

देश में आबादी की इस भीड़ ने बेरोजगारी में वृद्धि कर दी है। सरकार द्वारा काफी व्यय करने के बावजूद पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते और बेरोजगारी की समस्या विकट रूप धारण करने लगी है। जिसका प्रभाव कृषि पर पड़ना स्वाभाविक है। हमारे लिए ये खुशी की बात है कि भारत आज खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर है। लेकिन अगर जनसंख्या की इस बाढ़ को कम न किया गया तो हो सकता है हमें खाद्यान्नों की समस्या उत्पन्न हो जाए। इसके अलावा भारत में जितनी आर्थिक प्रगति होती है वह आबादी के सामने छिप जाती है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य और मकान आदि की कठिनाई उत्पन्न होने लगी है। अगर जनसंख्या इसी रफ्तार से बढ़ती रही तो भारत इस शताब्दी तक १०० करोड़ की जनसख्या को पार कर जाएगा। और एक समय ऐसा आएगा जब हमें खेलने, कूदने के लिए बनाए गए पार्कों व क्रीड़ा स्थलों को काट कर मकान बनाने होंगे। जिसका दुष्परिणाम आने वाली पीढ़ी को भुगतना पड़ेगा।

देश को इस विकट समस्या की चपेट में और अधिक फँसने से बचाने के लिए हम नव–युवकों व देश के भावी कर्णधारों को इस समस्या के समाधान के लिए सरकार के हाथ मजबूत करने होंगे। हम नव-युवकों का यह कर्त्तव्य है कि हम अशिक्षित स्त्री-पुरुषों को शिक्षा दें। उन्हें इस समस्या से अवगत कराएं और छोटे व बड़े परिवार के गुण तथा अवगुण बताएँ। जनसख्या पर नियंत्रण पाने के लिए और जन्मदर को कम करने के लिए यह भी आवश्यक है कि स्त्रियों का समाज में स्तर उठाया जाए। उन्हें चार दीवारों से मुक्ति दो जाए और बराबर का स्थान दिया जाए ताकि वे पुरुषों के लिए केवल मनोरंजन का साधन बन कर न रह जाएं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में स्त्रियों को ये सब दिया गया है लेकिन व्यवहार में कम और अव्यावहारिक अधिक है। गाँवों में तो अभी भी वही पुरानी स्थिति है। इस स्थिति से निबटने के लिए नवयुवकों को और अधिक कारगर होकर अपनी भूमिका निभानी चाहिए। और ऐसा वातावरण तैया करना चाहिए जिसमें ग्रामीण जनता को परिवार नियोजन का महत्व बताया जाए और उपायों का प्रसार किया जाए। उन सामाजिक तथा धार्मिक रिवाजों में सुधार किया जाए जिनके कारण जनसंख्या बढ़ी है।

आज हमारे देश में राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं समाज सेवा में लगी हुई है। इसके अतिरिक्त कालेजों, विश्वविद्यालयों में भी राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर तथा अन्य संगठन इस प्रकार के कार्यों में लगे हुए हैं। इस संस्थाओं के माध्यम से हम नवयुवक देश को इस समस्या से उबार सकते हैं।

यदि भारत अपनी बढ़ती हुई जनसंख्या पर अंकुश लगाने में सफल हो जाता है तो देश के इतिहास में एक नए अध्याय का श्रीगणेश होगा, जिसमें बेरोजगारी, भूखमरी, भीख माँगना, गरीबी तथा दूसरी सामाजिक आर्थिक बुराइयों को कोई स्थान नहीं मिलेगा। बढ़ती आबादी हमारे राष्ट्र के लिए आज एक बीमारी है। हमारा राष्ट्र तभी स्वस्थ हो सकेगा जब उसे इस बीमारी से मुक्ति मिलेगी।

राजधानी कालेज

जितेन्द्र नारंग
बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष)

सबसे प्यारा सबसे न्यारा,
'राजधानी कालेज हमारा ।
दूर-दूर से विद्यार्थी आते,
अच्छी – अच्छी शिक्षा पाते ।
इसकी अच्छी विशेषताओं से,
गर्व से सर ऊँचा है हमारा ।
सबसे प्यारा सबसे न्यारा,
राजधानी कालेज हमारा ।
दूर–दूर तक ख्याति पा रहा,
शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठा रहा ।
नित नये प्रयासों से,
अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ा रहा ।
सबसे प्यारा सबसे न्यारा,
राजधानी कालेज हमारा ।

हम क्या–क्या खाते हैं ?

बहुत-सी चीजें हैं जो हम खाते तो हैं, लेकिन उनकी ओर हमारा ध्यान नहीं जाता । हम दिन में बहुत चीजें खाते हैं जैसे रोटी, दाल, चावल, सब्जी वगैरह वगैरह । परन्तु जिन चीजों की बात मैं कर रहा हूँ वे मुँह से नहीं खाई जातीं । और अगर इन चीजों को ध्यान में रखें तो पता चलता हैं कि मनुष्य को खाने के अतिरिक्त और कोई काम ही नहीं है ।

सबसे पहले जब हम सुबह-सुबह कालेज के लिए निकलते हैं तो चलते-चलते बस स्टाप तक धूल खाते हैं । बस में चढ़ने के लिए धक्के खाने पड़ते हैं और यदि बस ठीक समय पर कालेज न पहुँची तो टीचर की डाँट खाते हैं । कुछ लोग (मेरे जैसे) तो कालेज में आते ही हैं हवा खाने के लिए । कुछ व्यक्ति बोलते समय कुछ शब्द ही खा जाते हैं । दो विरोधी दल एक-दूसरे से खार खाते हैं । अनपढ़ व्यक्ति इस संसार में धोखा खाते हैं । लड़के लड़कियों को छेड़ने पर थप्पड़ खाते है और यदि फिर भी बाज न आयें तो सैंडिल खाते हैं । यदि किसी दफ्तर में कोई काम करवाना हो तो किसी को घूस खिला दीजिए और देखिये कितनी जल्दी काम होता है ।

इस प्रकार ये चीजें हम रोज खाते और खिलाते हैं, मगर इन पर कभी ध्यान नहीं देते ।

बापू और हम

संजय वालिया
बी०ए०, इतिहास (विशेष) द्वितीय वर्ष

बापू ने तो उपदेश दिया था, खादी पहनो भाई ।
हमने टेरालीन पहन कर अपनी धाक जमाई ।

बापू ने माल विदेशी की थी, होली सदा जलाई,
हमने माल विदेशी लेकर, होली सदा मनाई ।
चीज नशीली बन्द करो, तुमने आवाज उठाई,
हमने ठर्रा बेच-बेच कर अपनी आय बढ़ाई ।

बापू ने तो हिन्दी में ही अपना उपदेश सुनाया,
हमने अंग्रेजी बक-बक कर अपना रोब जमाया ।
सत्य अहिंसा का था बापू तुमने पाठ पढ़ाया,
हम ने बोला झूठ सदा और हिंसक कदम उठाया ।

बापू ने आज़ादी में सारी शक्ति लगाई,
हमने तोड़ रेलवे लाईन, बस और जीप जलाई ।
जेलों में तुम गये, देश की खातिर लाठी खाई ।
मगर गये हम जेल, पड़ोसी की कर खूब पिटाई ।

हमें सदा अपनी करनी पर होता है पछतावा,
राजघाट पर सूत कात कर करते रहे दिखावा ।

—०—

प्रगति का शत्रु : प्रदूषण

राजीव कुमार दुबे
बी० एस-सी० (द्वितीय वर्ष)

हाल में हुई भोपाल घटना के बाद बहुत से लोग यह संतोष अनुभव कर रहे हैं कि उनका घर भोपाल में नहीं है परन्तु वे जहां आज रह रहे हैं वहां भोपाल अब भी है और यह साकार कब होगा, पर्यावरण की दृष्टि से इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। पर्यावरण का अर्थ केवल ज़मीन, हवा या पानी मात्र ही नहीं, अपितु वह सभी संसाधन, जिन पर टिकी है हम सबकी जिंदगी इसलिए पर्यावरण का ह्रास मनुष्य की जिंदगी से भी बहुत गहरे ढंग से जुड़ा है कि वह इन संसाधनों का उपयोग किस ढंग से कर रहा है।

पर्यावरण में वायु–जल-ध्वनि हर क्षेत्र में प्रदूषण है। अभी जनसंख्या वृद्धि, आणविक युद्धों में तेजी जैसी समस्यायें सुलझी ही नहीं कि पर्यावरण में प्रदूषण की समस्या ने हमें सोचने को विवश कर दिया है। क्या प्रदूषण इस विज्ञान की देन है ? क्योंकि औद्योगिक प्रगति के साथ–साथ प्रदूषण भी उसी अनुपात से बढ रहा है। वही उद्योग तो अमेरिका में भी है, यूनियन कारबाईड ने भोपाल जैसा कारखाना वेस्ट वर्जीनिया(अमेरिका)में भी लगाया है। फिर वहां क्यों नहीं ऐसी चुनौती का सामना करने की नौबत आई ? यदि हम मोटर-वाहनों को प्रदूषण तत्वों की मात्रा में तेजी के लिए दोषी ठहराते हैं तो भारत में ही क्यों प्रदूषण समस्या है जबकि अमेरिका या जापान में वाहनों की संख्या हमसे कही ज्यादा है। जाहिर है कि देश का पर्यावरण खतरे में है तथा इन सबकी जिम्मेदारी हम पर ही आती है। तो क्या हम प्रदूषण से देश के पर्यावरण को बचा सकेंगे ?

'नेशनल एनवाईनमैंटल इंजीनियरिंग एण्ड रिसर्च इंस्टिट्यूट (NEERI) का कहना है कि कलकत्ता शहर प्रतिदिन लगभग 1299 टन प्रदूषक आसमान में बिखेरता है। यहां औद्योगिक और बिजली उत्पादक सयत्र के अलावा घरों में जलाये जाने वाले घटिया दर्जे के कोयले से भी काफी मात्रा में सल्फर-डाई-आक्साईड फलता है। इससे 60% लोग सांस की बीमारियों से पीड़ित हैं। उस प्रदूषण का असर दिन में बीस सिगरेट पीने वाले व्यक्ति को पहुंचे नुकसान के बराबर है। दम घुटना, गले में खराश, आंखों में जलन आदि बहुत से रोग शहर भुगत रहे हैं। हमारी लापरवाही में पनपते उद्योग मोटर-वाहनों तथा घरों में सुधरे चूल्हों के उपयोग से वातावरण में सल्फर डाई आक्साईड, कार्बन डाई आक्साईड, वोला टाईल हाईड्रोकारबक्स तथा ओजोन आदि फलाते हैं। जो कई नई बीमारियों को जन्म देती है, एसिड बर्षा करती है, तथा मिट्टी जलाशय व पौधों को प्रभावित करती है।

दिल्ली के बदरपुर तथा इन्द्रप्रस्थ ताप बिजली घरों से रोजाना 180 टन फलाईएश तथा 70 टन सल्फर डाई आक्साईड उगली जाती रही है। परन्तु हमारी सरकार ने लगभग सभी ईकाइयों पर पर इलेक्ट्रोस्टेटिक प्रिसीपिटेटर लगवा कर प्रदूषण को काफी हद तक रोकने की कोशिश की है, परन्तु क्या ये आधुनिक उपकरण हमेशा ठीक ढंग से कार्य करते रहेंगे ? दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला, राष्ट्रपति भवन, जामा मस्जिद तो काली ही पड़ रही है। इलेक्ट्रोस्टेटिक प्रिसीपिटेटर की कीमत एक से तीन करोड़ के मध्य होने के कारण इतने व्यय के लिए हमारी हिम्मत नहीं पड़ती परिणाम स्वरुप हमारे इन उद्योंगो के प्रभाव से नजदीक के गांव भी बुरी तरह प्रभावित हुए हैं।

देश में करीब सड़सठ रासायनिक खाद और कीटनाशी दवा के कारखाने हैं जिनमें बहुत से शहरों के बीच स्थित हैं। बम्बई का चेंबूर क्षेत्र तो बिल्कुल गैस चेम्बर है। उत्तर प्रदेश में मथुरा रिफाईनरी से कुछ दूर स्थित ताज़ पर क्या-क्या बीमारियाँ लग रही हैं ? इस प्रकार हर प्राचीन व आधुनिक इमारत प्रदूषण से प्रभावित है। ताज को बहुत से वैज्ञानिक 'स्टोन कैंसर' से पीड़ित बताते हैं। इस तरह अनुमानत: आने वाले वर्षो में यह बुरी तरह तबाह हो सकता है।

'देश का पर्यावरण' गाँधी शांति प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित रिर्पोट के अनुसार यदि कार्बन डाई आक्साईड आज की तरह ही बढ़ती रही तो सन् 2000 व 2025 तक यह क्रमश: 5100 से 17,800 करोड़ टन हो जायेगो। वातावरण में इसकी मात्रा का जमाव 2000 तक लगभग 400 PPM और सन् 2025 तक 425 से 500 PPM तक हो जायेगा। इस प्रकार कार्बन डाई आक्साईड की मात्रा जिस तरह बढ़ रही है इसका लोगों पर सीधा प्रभाव तो नहीं पड़ेगा परन्तु कालांतर में धरती का तापमान बढ़ सकता है। ओजोन को खत्म करने में हमारी पूरी जिम्मेदारी है। ओजोन हमारी पृथ्वी का आवरण है जो सूर्य द्वारा आने वाली उष्मा को ग्रहण कर एक छोटा-सा भाग पृथ्वी पर भेजती है। इस प्रकार आने वाले बर्षो में दिन में अत्याधिक गर्मी तथा रात को अत्याधिक सर्दी पड़ने जैसे परिणाम हमारे सामने आ सकते हैं। जिससे जीव-जन्तु तो प्रभावित होंगे ही, साथ ही साथ फसलों के पकने में भी रुकावट आयेगी।

भारत उष्ण कटिबंधीय राष्ट्र है। प्रदूषक तत्व धूलि कण की मात्रा वायु में और देशों को वनिस्पत कही ज्यादा है। इसलिए अपनी गतिविधियों से पदा होने वाले प्रदूषक तत्वों को नियत्रित कदना और भी जरुरी हो जाता है। जगह जगह का कूड़ा-करकट तथा मृत जीव-जन्तुओं से उत्पन्न प्रदूषण को रोक कर हर सामान्य नागरिक, अपनी कुछ भूमिका निभा सकता है। मोटर वाहनों में कैटेलेटिक कनवर्टर का उपयोग कर प्रदूषण काफी हद तक रोका जा सकता है। इजन को ठीक न रखना, इंजन को पुराना हो जाने पर भी लगातार प्रयोग में लेते रहना ही इसके प्रमुख कारण हैं।' सेंट्रल पब्लिक हैल्थ इंजीनियरिंग रिसर्च इस्टिट्यूट' की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की नई कारों से कार्बन मोनो आक्साईड 6 प्रतिशत निकलता है जबकि अमेरिका या जापान तकनीक पर बनी नई कारों में ज्यादा से ज्यादा 2 प्रतिशत का० मो० आक्साईड निकलता है।

आज देश में उपलब्ध पानी का 70% भाग प्रदूषित है। इस प्रकार प्रदूषित जल द्वारा टाई-फाईड, पीलिया, हैजा, अतिसार और पेचिश आदि बीमारियां हर वर्ष देखने को मिलती हैं। जल प्रदूषण में जितना हाथ हमारे आधुनिक उद्योगों का हैं उससे कहीं ज्यादा हमारे घरों व बस्तियों का

भी है। प्रोटीन का मुख्य स्रोत मछली समाप्त होती जा रही है। मिर्जापुर के निकट कागज व रासायनिक कारखानों के अवशेषों से प्रदूषित जल में मछलियों की संख्या काफी घट गई हैं। भारत वर्ष के लाखों लोगों का धंधा मछली पालन ही है जिस तरह मछली उद्योग तबाह हो रहा है। बेकारी की समस्या और भी विकट रूप ले लेगी। दिल्ली की यमुना नदी के 48 कि० मी० के क्षेत्र में प्रतिदिन 20 करोड़ लिटर पानी बिना साफ किये गिरता है। यदि सभी 17 गंदे नालों के पानी को यमुना में डालने से पहले साफ नहीं किया गया तो यह यमुना नदी उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद तक प्रभावित होगी। नदी-नहरों में कूड़ा-करकट डालने से वायु तथा जल दोनों प्रदूषित होते हैं।

शोर केवल आफत ही नही अपितु स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है। हम भारतीय इस समस्या के प्रति बिल्कुल बहरे हैं। कारखानों, मोटर-वाहनों के अतिरिक्त हमारे धार्मिक व सामाजिक उत्सवों ने ध्वनि प्रदूषण को बढ़ा दिया है। हवाई अड्डे पर पर 90 डेसीबल शोर की मात्रा मापी गई है बल्कि 'सोकलीन' के अनुसार एक बार बम्बई के घने मोहल्लों में गणेश उत्सव पर सर्वेक्षण से शोर की मात्रा 97 डेसीबल पाई गई (डेसीबल शोर मापने की वैज्ञानिक ईकाई है) शोर से स्थाई बहरापन, पागलपन तथा मौत जैसे बुरे परिणाम देखने को मिलते ही रहे हैं। हमारे यहां जन्म दिन हो या शादी, मौत हो या कुछ और, शोर करके ही हमें आनन्दमय वातावरण अनुभव होता है। जब कि हम भूल करते हैं कि शोर मुसीबत ही नहीं, नुकसान देह भी है।

केन्द्रीय सरकार ने 1981 में वायु प्रदूषण निवारण व नियंत्रण कानून लागू किया है। इसी तरह जल व ध्वनि प्रदूषण भी संविधान को धारा 252 के अन्तर्गत सम्मिलित हैं। परन्तु क्या यह सब लागू है? लागू करवाया नहीं, किया जाता है। हमारी सरकार में हम सभी हैं इसलिए सामान्य नागरिक अपने उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक होकर ही पर्यावरण को सुरक्षित रख सकता है।

प्रकाश गहरे-से-गहरे अंधकार का नाश करता है।

—महात्मा गाँधी

किस्मत का थैला

—राजीव नारंग
बी० काम० (द्वितीय वर्ष)

जिंदगी एक राशन की लाईन - सी
आड़ी – तिरछी गुज़र रही है ।
आगे लोग हैं, पीछे लोग हैं
और इन लोगों की धक्का - मुक्की में
पिस रहा हूँ मैं ।
ज़िंदगी की इस लाईन में
सब
अपनी किस्मत का थैला लटकाए
आगे बढ़ने की कोशिश में
धक्का मारते हैं
और आगे वाले
उन्हें रोकने के लिए
पीछे धकेलते है ।
और
बीच में मैं,
इन दो पाटों के बीच
आटे - सा पिस जाता हूँ ।
जिंदगी की इस लाईन में
हजारों मोड़ों से गुज़रते - गुज़रते
लोगों के धक्के
सहते - सहते;
पिसते - पिसते
थक गया हूँ मैं ।
और
अपने आप को
छोड़ दिया है मैंने इस
लाईन के हवाले;
दोनों तरफ से पड़ने वाले
इन धक्कों के लिए ।
मैं धक्कों को सहते - सहते
आगे बढ़ने की कोशिश में
पीछे रह जाता हूँ
अपनी किस्मत का
फटा हुआ थैला लटकाए ।

०

हमारी शिक्षा-प्रणाली कैसी हो ?

दीनदयाल चतुर्वेदी
बी० काम० आनर्स (तृतीय वर्ष)

किसी भी देश के शैक्षिक आदर्श उस देश की संस्कृति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था तथा नैतिक मूल्यों पर निर्भर करते हैं। अमरीका अथवा सोवियत संघ या किसी अन्य देश में प्रचलित शिक्षा-प्रणाली भारतीय शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती।

शिक्षा एक ऐसा विज्ञान है जिसके अनेक पहलू है, जिनमें एक बौद्धिक विकास हैं और जो कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस भौतिक ससार में चाहे हमें यह ज्ञात न हो कि हम शिक्षा प्राप्त करने के लिए जी रहे हैं अथवा जीने के लिए शिक्षा प्राप्त करते है, किंतु यह तथ्य स्वीकार्य है कि ऐसी शायद ही कोई वस्तु होगी जिसे हम शिक्षा के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकते।इस संसार में जीवन का चरम लक्ष्य कुछ भी क्यों न हो, किंतु आज का मनुष्य इसे धनार्जन से अधिक कुछ नहीं समझता, जो कि शिक्षा के माध्यम से सहज ही संभव है। संस्कृत का एक श्लोक अनायास ही मुझे याद आ जाता है :—

विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनात् धर्मः ततः सुखम् ॥

अर्थात् विद्या नम्रता प्रदान करती है, नम्रता से योग्यता प्राप्त होती है। योग्यता से धन प्राप्त होता है। पश्चात् धर्मानुकूल रहकर मनुष्य अक्षय सुख को प्राप्त होता है।

प्राचीन काल से ही भारत शिक्षा प्रधान देश रहा है। यहां के विश्वगुरुओं से विश्व के अन्यान्य भूभाग के लोग शिक्षा प्राप्त करने आते थे। अंग्रेजों के आने से पूर्व अध्यापक, जिन्हें आदर की दृष्टि से 'गुरु' कहा जाता था, के घरों में शिक्षा दी जाती थी।

इन स्थानों को गुरुकुल कहा जाता था। विद्यार्थी गुरुजनों के शिष्य के रूप में निवास करते थे तथा उनकी सेवा आदि करते थे। किंतु दुर्भाग्यवश, इस प्रणाली के माध्यम से ऐसे बहुत कम छात्र थे, जो वास्तव में पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सके। वैसे तो यह प्रणाली विद्या प्रदान करने की उत्कृष्ट व्यवस्था थी, किंतु यह केवल उच्चजाति के वर्गों तक ही सीमित थी। अन्य जाति के बालक, जिन्हें गुरुकुल में प्रवेश निषेध था, प्रायः शिक्षा विहीन रह जाते थे। कन्याएं अपनी संपूर्ण शिक्षा घर पर ही प्राप्त करती थीं। विभिन्न जाति के बच्चों को उनकी जाति के अनुकूल शिक्षा दी जाती थी।

ब्राह्मण पुत्र यज्ञोपवीत संस्कार के उपरान्त वेद, पुराण, उपनिषद तथा अन्य साहित्यिक, आध्यात्मिक विषयों की शिक्षा ग्रहण करते थे। क्षत्रियों को युद्ध-विद्या की शिक्षा दी जाती थी। शूद्रों से अन्य जाति के लोगों की सेवा की अपेक्षा की जाती थी। महाभारत में गुरु द्रोणाचार्य द्वारा एक भील बालक एकलव्य को शिक्षा देने से मना करना शिक्षा क्षेत्र में दोहरी नीति का एक ज्वलंत उदाहरण है। राजा-महाराजाओं की सभा व कचहरी में भी ब्राह्मणों और क्षत्रियों को उच्च दर्जे देना इस बात का एक प्रमाण है।

मुगल काल में भी शिक्षा को कुछ कम महत्व नहीं दिया गया। इस काल में अनेक साहित्यिक रत्नों द्वारा विभिन्न ग्रन्थों की रचना की गई। विभिन्न विद्यालय खोले गये। संभवतः अकबर को छोड़कर शेष सभी सम्राट् शिक्षित और प्रबुद्ध थे।

आँग्ल शासन काल (British Rule) के मध्य शिक्षा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। गुरुकलों की जगह विद्यालयों को स्थापना हुई। एक भाषा जिसकी अब तक कमी थी— अंग्रेजी माध्यम लेकर अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को इस तरह नियोजित किया, जिसका एकमात्र लक्ष्य कम बुद्धि के लिपिक और कम वेतन के कर्मचारियों को पैदा करना था जिससे कि संपूर्ण प्रशासन विदेशी हाथों में निर्विघ्न चलता रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन मूल्यों और मान विंदुओं से दूर रखा। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मूल्यों से अनभिज्ञ छात्र राष्ट्र के भावी कर्णधार के रुप में तयार किए जा रहे थे। अतएव अंग्रेज भारत के लोगों को कमजोर बनाना चाहते थे, जिससे वे विदेशी शासन के प्रति मात्र मूक द्रष्टा एवं असहाय बने रहें।

१५ अगस्त १९४७ को हमने स्वतंत्रता प्राप्त की और अब हमें स्वतंत्र हुए ३७ वर्ष हो चुके हैं, किंतु विडंबना है कि देश की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरुप शिक्षा का नवीनीकरण नहीं कर पाए हैं। अत्यधिक लज्जा का विषय है कि हम भौतिक रूप में तो परतंत्रता के बंधन से मुक्त हो चुके हैं, किंतु संस्कृति सभ्यता, भाषा, सामाजिक व्यवस्था व नैतिक मूल्यों की दृष्टि से देखा जाए तो अब भी दासता की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं। विदेशी राज के कारण हमारी शिक्षा प्रणाली का स्तर अत्यंत निकृष्ट हो गया। किंतु राजनतिक स्वार्थों से परिपूर्ण सरकार का दायित्व भी कुछ कम नहीं है।

भारतीय शिक्षा-प्रणाली एक गहरे सागर में गोते खा रही है। हम यह भी निश्चित नहीं कर पाते कि अंततः शिक्षा-प्रणाली का क्या स्वरुप होना चाहिए। केवल प्रयोग के लिए पुरानी शिक्षा प्रणाली को बदलकर नई शिक्षा-प्रणाली ले आते हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व उच्चतर माध्यमिक से वरिष्ठ माध्यमिक (10+2 शिक्षा प्रणाली) का परिवर्तन प्रयोग मात्र ही था। पुनः इस प्रणाली में परिवर्तन किए गए और अभी कुछ और परिवर्तन किए जा रहे हैं। सरकार के प्रयोग चलते रहते हैं। छात्रों को क्षति पहुंचती है और वे पाते हैं कि वे या तो कहीं नहीं है अथवा वहीं पर जहां वे पहले थे। प्रतिवर्ष पाठ्यक्रम व पुस्तकें बदलने से करोड़ों रुपयों की पुस्तकें एक रुपये किलो के भाव बिक जाती हैं। फलतः वे निर्धन छात्र जिनका अध्ययन दूसरे छात्रों से मांगी पुस्तकों से चलता है, उनकी दशा शोचनीय होती है, जिन्हें इन पुस्तकों का नवीन संस्करण खरीद कर पढ़ना पड़ता है।

वर्तमान शिक्षा–प्रणाली बहुसंख्यक समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में पूर्णरूपेण असफल रही है। महाविद्यालयों के क्षात्र समृद्धि एवं वैभवपूर्ण जीवन की कल्पना करते हैं। किन्तु विश्वविद्यालय से निकलने पर उनकी इच्छाएं व आशाएं कठिन वास्तविकताओं की चट्टानों से टकराकर चूर हो जाती हैं। युवा ऊर्जा देश की समृद्धि में कड़ी न बनकर यूँ ही व्यर्थ हो जाती है। अत: शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता है जिससे युवा वर्ग की महत्वपूर्ण समस्या– 'बेरोजगारी' का सामना कर सकें। शिक्षा का मुख्य लक्ष्य एक अच्छा पेशा और सुरुचिपूर्ण और आरामदायक जीवन है। भारत जैसे निर्धनता से पीड़ित देश के लिए लघु उद्योग व विशेषकर हथ–करघा उद्योग ही उचित है। शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो देशवासियों को स्वावलम्बी बना सके। ऐसी हो जो साहित्यिक होने की अपेक्षा प्रयोगात्मक तथा तकनीकि हो। गांवों में तो विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की समुचित तथा पर्याप्त व्यवस्था भी नहीं है। जहां देश की 3/4 जनसंख्या रहती है, वहां शुद्ध पेय जल भी उपलब्ध नहीं है। विशेषकर गांवों में शिक्षा क्षेत्र में विशेष सुधार की आवश्यकता है।

शिक्षा पद्धति हमारे देश का एक प्रश्न है। राज्य सरकार को किसी भी तरह की शिक्षा प्रणाली अपनाने की छूट है। एक राज्य से दूसरे राज्य में विद्यालय या विश्वविद्यालय बदलना भी एक समस्या है। कई बार विद्यार्थी इस कारण एक वर्ष नष्ट कर देते हैं। कुछ विद्यालय जैसे कि केन्द्रीय विद्यालय में सम्पूर्ण भारत में एक ही पाठ्यक्रम है। किन्तु यदि किसी विद्यार्थी को किसी अन्य विद्यालय में जाना हो तो उसे नई पुस्तकों अथवा नए पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ना पड़ता है। स्थानीय लोगों द्वारा संचालित विद्यालयों में छोटी कक्षाओं की पुस्तकों तथा पाठ्यक्रम में आकाश-पाताल का अन्तर होता है।

एक अन्य समस्या भी है जो मानसिक परतंत्रता का प्रमाण व प्रत्यक्ष उदाहरण है, वह है भाषा। विभिन्न राज्यों में प्राय: शिक्षा प्रादेशिक भाषा के माध्यम से दी जाती है। जो उस राज्य की भाषा है, जिसमें वह शिक्षा संस्थान स्थित है। कहने को तो सरकार हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने की दुहाई देती है, किन्तु जनमानस की अंग्रेजी के प्रति मानसिक दासता अथवा पर्याप्त प्रोत्साहन (Incentives) के अभाव में इस कथनी का अनुसरण नहीं हो पाता। लगभग समस्त विषयों की सर्वोत्तम पुस्तकें सामान्यत: विदेशी लेखकों की होती हैं, जो अंग्रेजी भाषा में लिखी होती हैं, और प्रत्येक पुस्तक का हिन्दी भाषा में यथाथ अनुवाद करना भौतिक रूप से संभव नहीं है। परिणामस्वरूप कक्षाओं में अध्यापक मुख्यत: अंग्रेजी भाषा में ही पढ़ाते हैं। लगभग समस्त प्रतियोगितात्मक प्रवेश परीक्षाएं आंग्ल माध्यम में ही होती हैं। ऐसी स्थिति में विद्यालयों में हिन्दी माध्यम से पढ़ाना न केवल विद्यार्थियों का शोषण करना ही है वरन् उन्हें उस सुनहरे भविष्य से वंचित कर देना है जो वे अंग्रेजी माध्यम से पढ़कर प्राप्त कर सकते थे। भाषाओं का ज्ञान अहित–कारी नहीं होता। अधिक भाषाओं के ज्ञान से समाज, राष्ट्र व विश्व को समझा जा सकता है, उसके अनुकूल बना जा सकता है अथवा समाज व राष्ट्र को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, परन्तु किसी विदेशी भाषा की आड़ में राष्ट्र भाषा की विस्मृति अपनी संस्कृति, सभ्यता और नैतिकता को तिलांजलि देना है।

शिक्षा-प्रणाली राष्ट्र का एक गंभीर प्रश्न है और इस दिशा में कतिपय कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है। शिक्षा–प्रणाली मात्र प्रयोग का विषय नहीं होना चाहिए। और यह उचित समय है कि सुदृढ़ व स्थायी शिक्षा पद्धति की स्थापना होनी चाहिए। उच्चस्तरीय तकनीकि शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए तथा शिक्षकों को अच्छा वेतन मिलना चाहिए। गांवों की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है जिससे लोग वहां जायें और काम करने में सकुचाएं नहीं, जिससे अन्ततः वहां की शिक्षा में सुधार हो सके। शैक्षिक वातावरण कलुषित हो गया है। महाविद्यालयों में विद्यार्थियों पर अंकुश न होने के कारण वे हड़ताल, आगजनी, तोड़फोड़ तथा हिंसक घटनाओं में अग्रसर रहते हैं। आज चारित्रिक विकास की आवश्यकता है। हमारी शिक्षा में नैतिक व आध्यात्मिक विचारों का भी समावेश होना चाहिए। महामना मालवीय जी के शब्दों में—'हमारी शिक्षा तब तक अधूरी है, जब तक उसमें धार्मिक विचारों का समावेश नहीं किया जाता।' शिक्षा में राजनीति का प्रवेश शैक्षिक पर्यावरण में दूषण के लिए जिम्मेदार है। राजनीति को शिक्षा से दूर किये बिना विद्यार्थियों का चारित्रिक व नैतिक विकास संभव नहीं हो सकता। शिक्षा क्षेत्र में कतिपय और सुधार की आवश्यकता है। विभिन्न विषयों के पाठ्य क्रम प्रतियोगितात्मक, तकनीकि व प्रयोगात्मक दृष्टिकोण से होने चाहिए। हिन्दी को सार्वभौमिक रूप में राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने के लिए जनमानस पटल पर चेतना जागृत करने के लिए आंदोलन किये जाने चाहिए। इस संदर्भ में अब तक किये गए सरकार के प्रयास सराहनीय हैं तथा और अधिक सुधार के लिए सरकार से अपेक्षा की जाती है। वर्तमान सरकार इस दिशा में संकेत भी दे रही है कि भारत की शिक्षा-प्रणाली में शीघ्र ही परिवर्तन होगा। विश्वास है कि यह परिवर्तन देश की प्रगति में सहायक सिद्ध होगा।

'सत्य के लिए किसी से भी न डरना।
गुरू से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।'

सावधान ! मेहमान आ रहे हैं !

डा० रमाशंकर श्रीवास्तव
(हिन्दी विभाग)

वर्षों बाद पता चला कि मेरे एक खास दोस्त इस शहर में अफसर बनकर आए हैं। बड़ी खुशी हुई। मैं जाकर उनसे मिल आया। वे भी बहुत खुश थे। पुरानी दोस्ती का मजा ही कुछ और है। हमने एक-दूसरे के परिवार का हालचाल पूछा। एक-दूसरे के यहाँ आते-जाते रहने की बात तय हुई। मैंने आग्रह किया यार, पहले तुम्हीं अपने बच्चों को लेकर मेरे यहाँ आओ। वे मान गए।

मैंने घर आकर बीवी-बच्चों से बता दिया कि मेरे एक पुराने मित्र आने वाले हैं। बच्चों ने अनेक जिज्ञासाएं कीं— पापा, आपके दोस्त कैसे हैं ? क्या करते हैं? उनके बच्चे कितने हैं? मैंने उनका संक्षिप्त परिचय देकर घर में सभी को सावधान कर दिया कि देखो भाई, मेहमान के स्वागत-सत्कार में कोई कमी न रह जाय।

पत्नी को समझाया तो लेकिन उन पर मनोवांछित प्रभाव नहीं पड़ा। कभी नहीं पड़ता। वे करेला से चिढ़ती हैं। मेरे प्रस्ताव को जुबान की तेजधार छुरी से काटते हुए बोलीं—इस बरसात में करेला कोई खाने की चीज है ? तुम्हें जो पसन्द है, समझते हो सारी दुनिया की भी पसन्द वही है। यह करेला-फरेला नहीं चलेगा। हमारे भारतीय व्यंजन की बदनामी होगी। वे बेचारे विदेश से लौटे हैं।

तब तय हुआ कि सब्जी में उन्हें भिंडी खिलाई जाय। श्रीमती जी तनिक चिंतित हुई कि भिंडी बाजार में छ रुपए किलो है। तीन मिनट की बहस में लगे हाथ मेरी बाजारू क्षमता पर भी उँगली उठाई गई कि मैं बाजार से हर चीज मंहगी उठा लाता हूँ। भीतर से मन तो कुलबुलाया कि उन्हें तुरन्त जवाब दे दूँ — दहेज के बाजार से तो कभी तुम्हें भी मैं ही उठा लाया था। तो क्या मैं मान लूँ कि तुम भी मुझे मंहगी ही पड़ी हो? लेकिन इस युद्ध के लिए मैं अभी पूरी तरह से तैयार नहीं था। मैं मूक बना रहा और वे बोलती रहीं कि इस घर की बर्बादी का एक मात्र कारण मैं हूँ। जब वे बाजार जाती हैं तो यहीं भिंडी तीन रुपए किलो में उठा लाती हैं। महीने के अंत में हर वेतनभोगी को विवेक से काम लेना चाहिए। इस चौबीस तारीख को मेहमान को निमंत्रण देने की क्या जरुरत थी ! मैंने उनसे यह कहकर आत्मसमर्पण कर दिया कि भाई इस देश में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि गलतियाँ कर चुके हैं, और आज भी राजनेताओं से गलतियाँ हो जाती हैं। फिर मैं तो एक सामान्य नागरिक

हूँ। अब जो हो गया, हो गया। भविष्य में ध्यान रखूँगा। भिंडी जब पचास पैसे किलो बिकेगी तभी मेहमानों को अपने घर बुलाऊँगा।

विवाद समाप्त हो गया। फिर चिन्ता हुई कि मेहमान के आने के एक दिन पहले इस घर की पूरी तरह सफाई हो जानी चाहिए। मेहमान लोग दो-ढाई घंटे यहाँ रहेंगे। क्योंकि वे लोकल हैं। बाहर के होते तो सप्ताह भर रहते और दिल्ली का लालकिला, जामा मस्जिद सब देख-पढ़कर वापस लौटते। लोकल गेस्ट हर हालत में बेहतर होते हैं। क्योंकि उन्हें भी बाजार-भाव की जानकारी रहती है। हमने विचार किया कि मेहमानों को ड्राइंग रूम के एक ही सोफे पर हवाई जहाज की सीट की तरह बाँधकर बैठाए रखना ठीक नहीं होगा। बाहर भी दो-चार कुर्सियाँ लगा दी जायं। उनके बच्चे नहीं मानेंगे। वे जरूर इधर-उधर घूमेंगे। नौकर को समझा दिया गया कि उन बच्चों पर निगाह रखना। मित्र की श्रीमती जी भी केवल ड्राइंग रूम में ही नहीं बैठी रहेंगी। स्वेटर का पैटर्न जानने के बहाने वे किचेन में जा सकती हैं या दूसरे कमरे में भी ताक-झांक कर सकती हैं। इसलिए उस दिन हर कमरा-बरामदा साफ रहना चाहिए।

मैंने बच्चों को हिदायत दे दी— यह चूहा पकड़ने वाला पिंजरा एक दो रोज के लिए घर के पिछवाड़े रख आओ। मेहमान वापस चले जाएंगे तो चाहे फिर उठा लाना। पप्पू से कहा— भई, तुम अपने पतंगबाजी का सामान जाकर छत पर रख आओ। श्रीमती जी ने नौकर को समझाया कि आज साफ-सुथरे कपड़े पहन ले भाई। नहीं तो मेहमान कहेंगे, अपने तो ये लोग ठाठ- बाट से रहते हैं, और नौकर मसालची की शक्ल बनाए हुए है। पानी का गिलास और खाने की थाल उनके सामने तुम्हें ही रखना है। ये बाल-बाल भी जरा ठीक कर ले। ला तेरे नाखून काट दूँ।

मेहमान लोग शाम में आने वाले थे। सुबह में घर की एक-एक वस्तु का पूरे ध्यान से निरीक्षण किया गया। सफाई हुई। जो वस्तु जहाँ आवश्यक समझी गई, रख दी गई। शोकेस में रबर की छिपकली की जगह निश्चित करने में हम पति-पत्नी में तकरार होने से बचा। मैं छिपकिली हटा देने के पक्ष में था। किन्तु उनका सौंदर्य-बोध मेरे प्रतिकूल पड़ता था। इस बोध पर उन्होंने हमेशा मेरे साथ विपक्षी दल की तरह प्रतिकूलता दिखाई है। मैं जिसे सुंदर कह दूँ, वह उन्हें बड़ी भद्दी, और बदशक्ल जान पड़ती है।

बेटा चिल्लाता मेरे पास आया— पापा ! नौकर ने चमेली का पौधा उखाड़ फेंका। मैं दौड़ा गया। यह तूने क्या किया रामू ? रामू बोला— सफाई की है। हमेशा पत्ते गिरते रहते थे। मेहमान लोग क्या कहते? उसका जवाब सुन मुझे न हाय मारते बना और न गुस्सा करते। घंटे भर बाद मालूम हुआ कि प्रेशर कूकर खराब है। मरम्मत कराने दौड़ा। मिस्त्री ने बड़ी गंभीरता से उसे उलटने पलटने के बाद अपना विचार प्रकट किया जैसे प्रेस-सम्मेलन में वक्तव्य दे रहा हो— खराबी ज्यादा है। कुछ दिन पहले लाना चाहिए था। शुरू में कम खर्चे में बन जाता। अब देखिए, मैं कोशिश करूँगा। प्रेशर कूकर छोड़ जाइए। दो दिनों बाद ले जाइएगा। मैंने झुंझलाते हुए उससे विनती की— नहीं भाई ! आज शाम में मेहमान आने वाले हैं। प्रेशर कूकर बहुत जरुरी है। दुकानदार होते हुए

भी उसने मुझ जैसे ग्राहक पर विश्वास कर लिया और दो रोज के लिए उसने अपना प्रेशर कूकर दे दिया।

हम दम्पति ने एक साथ महसूस किया कि मेहमान के सामने हमारे कपड़े-लत्ते ठीक-ठाक होने चाहिए। वे अपनी बार्डर वाली साड़ी पर ज्यादा जोर दे रही थीं। मैं चाहता था, वे नीले रंग वाली प्लेन साड़ी पहनें। थोड़ी चख-चुख इस आइटम पर भी हो गई। यहाँ भी मात मुझे ही खानी पड़ी। क्योंकि उन्होंने मेरा मुँह यह कहकर बन्द कर दिया कि साड़ी मु झे पहननी है या तुम्हें। तुम अपनी पैंट पर ध्यान दो। अब फटने जा रही है।

मेहमान के आने में अब सिर्फ तीन घंटे की देर थी। पहले तो समझाया ही था, एक बार फिर फाइनल रिहर्सल के लिए सभी को सामने बुला लिया। तीनों बच्चों को समझा दिया कि अंकल अंटी को केवल होंठ हिलाकर नमस्कार मत करना बेटे। कायदे से हाथ जोड़कर नमस्कार करना। घर की डिसिप्लीन पर एक छोटा भाषण भी मैंने दे डाला। नन्हें को इस बात की खास हिदायत दी गई कि ड्राइ ग रूम के दीवान पर बिछी चादर को इधर-उधर खींच-खांच मत करना। अंकल तुम्हारा नाम और पढ़ाई के बारे में पूछें तो शर्माना मत। बड़ों की तरह हर बात का जवाब मुस्करा कर देना चाहिए।

सभी के सामने यह भी तय हुआ कि भोजन करते समय मेहमान अगर दुबारा कोई चीज माँगें तो पहले कौन उठकर देगा। बिटिया सब में बड़ी थी। सारे कायदे-तमीज की जिम्मेदारी उसने अपने कंधों पर ज्यादा महसूस की।

मैंने श्रीमती जी को भी थोड़ी सावधानी बरतने के लिए कह दिया। क्योंकि मुझे डर था कि वे मेहमानों के लिए बनने वाली सब्जी में मिर्च ज्यादा डालती हैं। यों वे मिर्च खाती भी ज्यादा हैं। जुबान शायद इसीलिए तेज है। क्या पता वे लोग मसाले कम खाते हों। आश्चर्य हुआ कि घर में मेरी बात बिना हुज्जत के मान ली गई। दीवार पर लगी फोटो आदि को फिर से पोंछकर साफ कर दिया गया। इसी सफाई में मेरा दाढ़ी बनाने वाला शीशा गिरकर टूट गया। आँखों में शंका और उदासी भरकर पत्नी बोलीं— शीशे का टूटना शुभ नहीं होता। मैंने थोड़ा झिड़का— यह शुभ अशुभ छोड़ो। साढ़े छ बज रहे हैं। अब वे लोग आना ही चाहते हैं। हर स्कूटर या कार की आवाज पर हम लोग दरवाजे की तरफ देखते या खिड़की झांकते। बाहर फाटक की आवाज हुई, वे लोग आ गए शायद। हम खड़े हो गए। अन्दर श्रीमती जी ड्रेसिंग टेबुल के सामने खड़ी मुँह का पाउडर ठीक कर रहीं थीं। मैंने पुकारा— जल्दी करो। वे लोग आ गए। आगे बढ़ो और स्वागत करो। बिटिया चित्र बना रही थी। आदमी की एक ही आँख बनी थी कि हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई। स्याही की दावात उलट गई और उसके लाल फ्राक पर काले धब्बे फैल गए। वह रुकी नहीं। बाहर दौड़ी आई तो देखा कि दूध वाला महादेव अपना हिसाब माँगने आया है। कितना धोखा हुआ! हम सभी घर में फिर शान्त होकर बैठ गए।

बीस मिनट बीते कि वे लोग आ गए। नौकर ने आगे बढ़कर हाथ जोड़े, प्रणाम किया। सिखाया यह गया था कि पप्पू के बाद नौकर प्रणाम करेगा। पप्पू ने वहीं डॉट दिया— पापा ने तुम्हें क्या सिखाया था ?

—कोई बात नहीं भाई। जाने दो। —मैंने कहा !

मित्र बैठकर मुझसे बातें करने लगे— पान वाले इधर तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं। अब पान खाने लगे हो क्या ?

—अरे भाई ! छोटे मुहल्ले में तो लोग एक दूसरे को जानते ही हैं।

हम लोग इधर-उधर की बातें करने लगे। मुझे याद आया—अरे हाँ, वह आपके एक चाचाजी होते थे पुलिस में। हैं या रिटायर हो गए ?

—क्यों पुलिस में कोई जरुरत है ?

मैं कुछ कहूँ कि नौकर बोल पड़ा— साहब जी, वह पड़ोस वाला बहुत तंग करता है। हमेशा हमारे फाटक के सामने अपनी गाड़ी लगा देता है। पूछो तो झगड़ा करता है।

तभी बिटिया नाश्ते की प्लेट लेकर आई। पीछे पप्पू था। बिटिया ने अतिथि को नमस्कार किया। बेटा चिल्ला उठा— देखिए पापा, दीदी अंकल जी को केवल होंठ हिलाकर नमस्कार कर रही है। आपने ही तो कहा था कि हाथ जोड़कर नमस्कार करना चाहिए।

मित्र हँस पड़े और बोले— जाने दो बेटे। कोई बात नहीं।

—नहीं, बात क्यों नहीं अंकल ! मुझसे कोई गलती हो जाती है तो दीदी तुरंत शिकायत कर देती है।

बिटिया से नहीं रहा गया —तू भी तो भूल गया। मम्मी ने क्या सिखाया था ? कहा था कि पापा के कोई दोस्त आवें तो फाटक पर जाकर सबसे पहले हैलो अंकल कहना। तूने कहा ?

—मैं भूला नहीं था जी। उस समय मैं अपनी टाई ठीक कर रहा था कि अंकल आ गए। कहो अभी से हैलो कर दूँ।

अतिथि हँसने लगे। उनके साथ मैं भी इस भाव में हँसने लगा कि क्या खूब, बालक भी कितने भोले होते हैं। पर मन के भीतर चिनगारियाँ भड़क रही थीं— इस पप्पू नालायक के दो तमाचे में मुँह लाल कर देता। बच्चों को कुछ सिखाओ तो बुरा, न सिखाओ तो भी बुरा। इतने में एक दूसरा पहाड़ सिर पर आ गिरा। रसोई में मेरी श्रीमती जी नौकर पर बुरी तरह बिगड़ रही थीं। नौकर ऊँची आवाज़ में कह रहा था— बीबी जी, धीरे बोलिए। मेहमान लोग आए हैं। साहब ने परसों आपको क्या सिखाया था ?

—तुम्हारे साहब का सिखाया-पढ़ाया जाय चूल्हाभाड़ में ! यह जो तूने मेरी सात रुपए की प्लेट तोड़ दी । ये पैसे तेरी तनख्वाह से काटूँगी ।

—मेरी गलती हो तो कहिए·····

—तेरी गलती ! तू गलती पूछता है ?

जिस कमरे में मै मेहमानों के साथ बैठा था वहाँ से यह महाभारत-संवाद स्पष्ट सुनाई पड़ रहा था । मैंने मित्र से कहा—जरा ठहरिए, मैं अन्दर से आता हूँ ।

—अजी छोड़ो ! यह सब तो घर में होता ही रहता है । यह देखिए मेरा अलबम ।
वे अपनी विदेश-यात्रा के फोटो दिखाने लगे ।

अन्दर से खबर आई कि खाना तयार है । हम लोग खाने बठे । नौकर परोस रहा था । कटोरे की मसालेदार सब्जी लेकर आगे बढ़ा कि बिटिया बोल पड़ी — रामू ! तुझे मम्मी ने मसालेदार सब्जी परोसने से मना किया था । तुमसे सब्जी गिर जाती है । बिटिया ने झट कटोरा अपने हाथ में ले लिया । तभी रसेदार सब्जी छलककर मेहमान की पैंट पर जा गिरी । वे हड़बड़ाकर उठ पड़े । उनका खाने-पीने का सारा उत्साह ढीला पड़ गया । मैंने तीन बार सौरी कहा किन्तु उनके चेहरे का रंग नहीं बदला । बोले— अरे भाई साहब ! आज रात में बॉस के पास भी जाना था ।
वे उदास हो गए ।

उनकी बिटिया उठी और मेरी बिटिया से बातें करने लगी । वह एक सांस में कई सवाल पूछ गई । दीदी को चुप देख पप्पू बोला— जवाब क्यों नहीं देती ? इतनी शर्म करोगी तो पापा बिगड़ेंगे । मेहमान लोग क्या सोचेंगे ?

मेहमान तो समझ गए कि हमारे आने के पहले इस घर में एक अच्छा-खासा ट्रेनिंग कोर्स चला है । मै दिखा रहा था कि मेरे परिवार में सब कुछ सहज-स्वाभाविक है । मेहमान मेरे आंगन के गमले की तारीफ कर रहे थे । उनमें सुन्दर-सुन्दर फूल थे । उनका लड़का फूल तोड़ने लगा मेरी बिटिया बोल पड़ी— उसे मत तोड़ना । यह तिवारी अंकल का गमला है ।

—तिवारी अंकल ! — मित्र ने जिज्ञासा की ।

बिटिया ने समझाया— हाँ, यह गमला उनके ही घर से तो कल आया है ।

मेरी पत्नी ने सुन लिया । अलग से पुकारा— सुधा, जरा इधर आना ।

खाने-पीने के बाद चाय का अंतिम दौर चलने लगा।

—लगता है, बड़े बिजी रहते हो। कभी-कभी मिलने आ जाया करो।

मित्र ने कहा।

—जरूर आऊँगा। अरे बिजी क्या हूँ। नहीं भी हूँ और हूं भी। जबसे इस मुहल्ले में आया हूं मिलने-जुलने आने वालों की संख्या बढ़ गई है। सामाजिक सेवा में अपना समय नष्ट करो और लाभ कुछ नहीं।

—क्या भरोसा। चुनाव के बाद कोई तुम्हें बढ़िया आफर मिल जाय।

काल बेल बजी। हमारी बातचीत भंग हो गई। देखा, पड़ोस का बनिया गंभीर चेहरा लिए सामने खड़ा है।

—क्यों भाई रामलाल! इस वक्त? अच्छा वही काम न! कल सवेरे आना, करा दूँगा।

—जी नहीं बाबूजी। वह काम हो गया। इंस्पेक्टर से कहा। उन्होंने कहा— आजकल सूखी बातचीत किसी डिपार्टमेंट में नहीं चलती। मैंने डेढ़ सौ दिए। काम हो गया। वैसे मैं दूसरे काम से आया था।

—हाँ, हाँ, बोलो।

मेरी मति मारी गई। मैंने जरुरत से ज्यादा उत्साह का प्रदर्शन कर दिया। रामलाल बनिया —बोलातीन महीने हो गए। चार सौ अठाइस रुपए बाकी हैं। चालीस रुपए का डालडा आज सुबह नौकर लेकर आया है।

रामलाल कुछ और बोले कि मैं कंधा पकड़ उसे बाहर ले गया— यार, तुम मौका-बे मौका भी नहीं देखते? मैं तो तुम्हें इतना बेवकूफ नहीं समझता था। सामने मेहमान बैठे हैं और तुमने मेरा उधार-खाता खोल दिया। जाओ, कल बात करेंगे।

जिन स्थितियों से मैं बचने की कोशिश करता था, वे ही सामने आ जाती थीं। आज मेरा भाग्य शत्रु बनकर आया था।

उन्हें मेरा कुत्ता बहुत पसन्द आया। कहते गए— इसी नस्ल का एक कुत्ता मेरे लिए भी मंगवा दीजिए। मैंने उत्साह बटोर कर कहा— क्यों नहीं, जरुर मंगा दूँगा।

वे लोग घर से बाहर निकलने लगे। मेरी पत्नी के चेहरे पर गुस्सा था कि नौकर और बच्चों ने सारी शिक्षा-दीक्षा पर पानी फेर दिया था। वे विदा होने लगे। हम लोग हाथ जोड़कर एक-दूसरे को नमस्कार करने लगे। इसी बीच पप्पू ने अपनी मम्मी को टोक दिया— मम्मी, नमस्कार करते समय मुस्कुराना चाहिए। पापा ने तुम्हें सिखाया था। तुम इस समय गुस्से में हो।

पप्पू की मम्मी मुस्कुराई कि नहीं, यह मैंने नहीं देखा। लेकिन मेरे मित्र मुस्कुराते हुए चले गए। उनके जाते ही मैंने महसूस किया कि मेरी टांगों की ताकत कहीं चली गई है और मैं सिर थामे वहीं बैठ गया।

—:—

दर्द के मंज़र

विमल
बी० काम०, आनर्स (तृतीय वर्ष)

खुशियों के मुकाम समझा था जिन्हें मैं,
इक सिरे से वो सब दर्द के मंज़र निकले।
फूल समझकर था जिन्हें सीने से लगाए मैं,
करके नासूर वो सब के सब नश्तर निकले।
परछाइयां बन के चली संग मेरे रुसवाइयां,
जहां भी हम गए जिधर भी हम निकले।
हमने तो थामा था दामन किनारों का,
थे हमी गफ़लत में या वो भंवर निकले।
सुलह-औ-सफाई की भी न रही गुंजाइश,
मिले जब भी वो बचा के नजर निकले।
पूजा था हमने यूँ तो तमाम उम्र उनको,
हुआ क्या जाने सजदे ही बेअसर निकले।
जाने क्या है खुदा ने ठानी मुझसे,
जो भी निकले अंजाम सभी सिफ़र निकले।
न पसीजे दर्द में न मुस्काएँ खुशी में,
दिलों की जगह लोगों के पत्थर निकले।
जाने क्यों रहा मैं होशमंद या रब,
नहीं थे होश में जो वही बेहतर निकले।
तमाम उम्र समेटता रहा अपने ख्यालों को मैं,
अच्छा किया जो तुम इस राह से बेखबर निकले।

अचानक

अनिल कुमार मित्तल
बी० एस-सी०, (द्वितीय वर्ष)

वह रेल की पटरी के पास खड़ा था । शायद उसके पास इसके अलावा और कोई चारा न रह गया था । वह जिंदगी से पूरी तरह निराश हो चुका था। दूर तक पटरी सूनसान पड़ीं थी। उसे लगा शायद उसे यहां भी इंतजार करना पड़ेगा। उसे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। अचानक उसके मानस-पटल पर एक चित्र उभरा—उसके बचपन का। वह और उसका दोस्त मनोहर खेल रहे हैं। मनोहर उससे हर बार जीत रहा है। उसे याद आया, एक बार स्कूल में मनोहर की शरारत पर उसे सजा मिली थी। वह हमेशा लगन और मेहनत से पढ़ता था फिर भी उसके अंक हमेशा मनोहर से कम आते थे। उस समय वह समझ नहीं पाया था कि ऐसा क्यों होता है। मनोहर उसका सबसे अच्छा दोस्त था। उसी की वजह से उसका एक साल खराब हुआ था जब मनोहर ने नकल करने के बाद पर्ची उसके पास फेंक दी थी। उसके लाख सफाई देने के बावजूद निरीक्षक ने उसकी बात नहीं मानी थी और परीक्षा से बाहर कर दिया था मनोहर उस समय ऐसा मासूम बन गया था जैसे उसे पता ही न हो कि पर्ची क्या होती है। उसे महसूस हुआ था कि आज की दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी की कोई जगह नहीं है। इस दुनिया में वही सफल है जो गलत होने के बावजूद अपने को सही साबित कर दे। उसे याद आया जब वह नौकरी के लिए इंटरव्यू देने गया था। आफिसर ने उससे सर्टिफिकेट माँगा था। उसके डिग्री दिखाने पर आफिसर के चेहरे पर एक मुस्कराहट आई थी और उसने उसे चले जाने के कह दिया था। बाद में मनोहर की उसी जगह पर नियुक्ति हो गई थी। उसमें उसे सर्टिफिकेट का मतलब समझाया था। रिजर्व बैंक के गर्वनर का हस्ताक्षर युक्त सर्टिफिकेट था। उसे तब महसूस हुआ था कि इस दुनिया में उस जैसों का कोई स्थान नहीं है। अचानक उसे दूर से रेल के इंजन की सीटी सुनाई दी। उसकी तंद्रा टूट गई। उसने सिर उठा कर देखा तो उसे दूर तक रोशनी का बिंदु टिम-टिमाता दिखाई दिया जो धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा था। अचानक उसके मन में एक नया विचार उठा। वह क्यों आत्महत्या करे ? वे क्यों नहीं करें जिन्होंने उसे आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया ? अचानक उसके मन का अंधेरा छंटने लगा। उसने पटरी से पैर हटा लिया। गाड़ी पास आती जा रही थी। लेकिन अब उसे कोई भय नहीं। वह वापिस लौट पड़ा। वह जीने का तरीका समझ गया था।

●

नारी ! तुम क्या हो ?

नरेन्द्र कुमार
बी०काम० (आनर्स) तृतीय वर्ष

❀ यदि सम्पूर्ण बिश्व का राज्य भी मिल जाए और नारी न हो तो पुरुष भिक्षुक ही है।
—गांधी

❀ ईश्वर के पश्चात् हम सर्वाधिक ऋणी नारी के हैं-प्रथम तो जीवन के लिए, पुनश्च इसको जीवन योग्य बनाने के लिए।
—बोबी

❀ नारी सब कुछ कर सकती है परन्तु अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती।
—सुदर्शन

❀ उत्तम गुणों वाली नारी केवल विधाता की दया से प्राप्त होती है। —पोप

❀ नारी की महान् त्रुटि है, पुरुषों के समान बनने की इच्छा। —द मैस्तरी

❀ मौन ही नारी का सच्चा जेवर है। —सोफोक्लिस

❀ अधिकांश पुरुष नारी में वह खोजते हैं, जिसका स्वयं उनके चरित्र में अभाव होता है।
—फील्डिग

❀ प्रेम किस प्रकार किया जाता है, केवल नारी ही जानती है। —मोपांसा

❀ नारी या तो घृणा करती है या फिर प्रेम। इसके बीच का कोई रास्ता उसे ज्ञात नहीं।
—साइरस

❀ आदमी प्यार कम और प्रायः करता है लेकिन नारी प्यार अधिक और कभी-कभी करती है।
—बास्टा

❀ नारी का निर्माण जगत् को मुग्ध करने के लिए नहीं, अपने पति को सुख देने के लिए हुआ है।
—एडमड बर्के

❀ नारी एक ईश्वरीय उपहार है, जिसे स्वर्ग खो जाने की क्षति-पूर्ति स्वरूप पुरुष को प्रदान किया जाता है।
—गेटे

❀ सम्पूर्ण महान् वस्तुओं के मूल में नारी का वास होता है। —लाभभार हाइन

❀ नारी महान् आघातों को क्षमा कर देती है किन्तु तुच्छ चोटों को नहीं भूलती।
—हाली बर्टन

शाप

विजय कुमार अलीगढ़ी
बी० ए० (तृतीय वर्ष)

साधु ऐसा चाहिए, भजन फिल्मी जो गाए ।
भक्तों का रेला लगे, दक्षिणा जोर को आए ।।
दक्षिणा ज़ोर की आए, सस्त्री ही साधु सुहाए ।
न छेड़े वो भक्तिनी, भक्त रोष में आए ।।
भक्त रोष में आए, करे उधम अति भारी ।
साधु रो-रो चिल्लाए, सही न जाए मार तुम्हारी ।।
सही न जाए मार हमारी, साधु बना तू कैसा ब्रह्मचारी ।
जहां देखी सुन्दर नारी, वहीं झट तू आँख मारी ।।
झट तू आंख मारी, आँख तेरी दोनों फोड़ भगत फरमाया ।
सुन कटु वचन साधु जोर से चकराया ।।
साधु जोर से चकराया, नैन किए लाल गुस्सा दिखाया ।
दिया शाप भयंकर-सा, जो फल पाया ।।
चढ़े चश्मे पे चश्मा चार की तेरो छः आँखें हो जांएं ।
सुन शाप साधु का भगवान स्वयं भी चकराए ।।
कटु वचन वोले साधु को अलीगढ़ी रोज भारी, ।
नित्य करवाए जो चार से छः आंखें हमारी ।

जिन्दगी

कैलाश चन्द तंवर
बी० ए० (तृतीय वर्ष)

जिन्दगी है क्या
मैं कुछ समझ न पाया
खोजना जब चाहा मैंने
अपने में उलझा पाया ।
उलझनें और बढ़ गईं मेरी
सुलझाना जब मैंने चाहा
जिन्दगी ··· ···

कहां से हुई शुरू है और
कहां होगी यह खतम ।
किसी को कुछ मालूम नहीं
कठपुतली हैं इसकी हम
नाच रहे हरदम
जिन्दगी ··· ···

डोर इसी के हाथ है
जब चाहे नचाये ।
या यह छोड़ दे
फिर या अपने साथ ले जाए ।
दिल्लगी करता हरदम
मजा आता इसको खूब ।
जिन्दगी ··· ···

काल-चक्र बनाया इसने ऐसा
फँसे सभी हैं जिसमें ।
कब किसी को डस ले
या ले अपने मुंह में डाल ।
देश विदेश की परवाह नहीं
करे कहीं भी अपना काम ।
जिन्दगी ··· ···

स म य

विजय सिंह
बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष)

हम सब के पास कल्पतरु है जिसका नाम है अब, जो पलक मारते ही अन्तर्ध्यान हो जाता है। इस अब नामक वृक्ष को दोनों हाथों से पकड़ कर रखो और इसके सारे अमूल्य फलों को चखो अर्थात् समय का उपयोग करो, क्योंकि समय का बड़ा महत्व है।

कवियों तथा लेखकों ने समय की परिभाषा इस प्रकार दी है। "समय ठीक उस आदमी की तरह है जिसके चेहरे पर तो बाल हैं परन्तु पीछे से वह गंजा है" इसलिए कहा है कि समय को हमेशा आगे से पकड़ो, अगर वह एक बार हाथों से छूट जाता है तो बाद में हाथ नहीं आता।

समय का सदुपयोग भिखारी को राजा, और समय का दुरुपयोग राजा को भिखारी बना देता है। समय किसी का इन्तजार नहीं करता किसी ने ठीक कहा है—

समय - समय की बात, समय पर परखो ज्ञानी,
समय पड़ेगी धूप, समय पर बरसे पानी।

बीता हुआ समय वापस नहीं आता। वह तो पक्षी की भांति पैर उठा कर उड़ जाता है और संसार रह जाता है अपने स्थान पर।

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के चमत्कारों ने दुनिया भर के मानवों को स्तब्ध कर दिया है, परन्तु दूसरी ओर विज्ञान की अधिकाधिक सुविधाओं के कारण वह आलसी हो गया है। आलस्य मनुष्य जीवन में एक भयानक रोग है। जिस प्रकार जंग लग जाने से लोहा किसी काम का नहीं रहता, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में आलस्य आ जाने से वह किसी काम का नहीं रहता। समय के सदुपयोग में आलस्य सबसे बड़ा बाधक है। किसी ने ठीक कहा है—

मूल्यवान है समय भाइयों, इसको व्यर्थ न जाने दो।
करो सब ठीक समय पर, आलस्य कभी न आने दो॥

आधुनिक काल का युवक अपना अधिकाधिक समय गन्दे उपन्यासों को पढ़ने, गन्दी फिल्में देखने या गलत काम करने में व्यतीत कर देता है, जिसके कारण वह हमेशा दिमागी तनाव (टेन्सन) में रहता

है, और बेचैन रहता है। इस बेचैनी को कम करने के लिए वह चरस, भाँग, गाँजा, शराब व नशीली गोलियों का इस्तेमाल करता है। और अपने जीवन को नशे का शिकार बना देता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन को व्यर्थ में गंवा देता है। यदि वह यही समय अच्छी पुस्तकों को पढ़ने में व्यतीत करता तो वास्तविक लाभ भी होता और समय का सदुपयोग भी।

समय का सदुपयोग ही महापुरुषों की जीवन की कुन्जी है। इसके अनेक प्रमाण हैं जैसे चार्ल्स फर्स्ट। स्वर्गीय ईश्वरचन्द विद्यासागर तो समय के इतने पाबन्द थे कि लोग उनसे अपनी घड़ियाँ मिलाते थे।

यदि प्रत्येक विद्यार्थी ने समय के अनुसार काम किया एवम् जीवन को बनाया तो वे भी बड़े से बड़े कार्य में सफल हो सकेंगे। यदि हम सब विद्यार्थी समय को बेकार की बातों में न उड़ाकर उसका उपयोग करें तो हमारा देश अवश्य उन्नति के पथ पर बढ़ता रहेगा। इसलिए बेकार नहीं बैठे रहना चाहिए। समय को समझकर उसका उपयोग करना चाहिए। जो समय खाली हो उसे दूसरों के उपकार में लगाना चाहिए। मेरे विचार से तो—

वही इन्सान है, इन्सान के जो काम आता है।
पछताता है वही, समय को जो खाली गंवाता है॥

संस्मरण

रामहित नन्दन
बी० काम० (आनर्स) द्वितीय वर्ष

जब मौत का सवेरा आया
निश्चिन्तता की सुनहली किरणों ने
उस काल कोठरी का दरवाजा
खोल कर
मेरी दादी को नहलाया तो
उन्होंने अपने सारे गहने
बहुओं में बाँट दिए।
कूटनीतिक रिश्तों की सरिता
मिल गई,
बन्धनहीन समुद्र में
झगड़े वाष्पित हो गए,
निस्सीम में टपक पड़ीं
आंसुओं की कुछ बूँदें।

भारत माता

राहुल देव शर्मा
बी० ए० (प्रथम वर्ष)

भारत माता मेरी प्यारी
सब जग से है न्यारी ।
देकर प्राण लाज रखने की
मैंने मन में धारी ।।

जननी माता जन्म दिया है
हमको तुमने बड़ा किया है ।
कष्ट सहे हैं मेरे हित में
मुझको पग पर खड़ा किया है।।

मैं भी तेरे ऋण से माता
जीवन देकर मुक्त बनूँगा ।
तेरी कोख कभी न लजेगी
तेरा सच्चा पूत बनूँगा ।।

तेरे यश में मेरा यश है
तेरा आदर मेरा मान ।
तू ही मेरा सर्वस्य माता
तू ही देव महान् ।।

तुझे भूल जाऊँ न होगा
तुम पर जीवन वारूँगा ।
सारी ही नारी जाति को
तेरा रूप सवारूँगा ।।

तू ही मेरा ईश है जननी
तू ही मेरा ज्ञान ।
तू ही तप है, तू ही मेरा
हे जननी कल्याण ।।

मर्ज़ी

सुनील गुप्ता
बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष)

अध्यापक ने किताब से सर हटाया
बच्चों को देखकर चिल्लाया–

जो नहीं बताएगा उसे लगेंगे डण्डे
लल्लू तुम बताओ- शेर बच्चे देता है या अण्डे ?

लल्लू सकपकाया थोड़ा–सा घबराया
अपने आपको डेस्क पर उठाया
ज़बान को हिलाया और बोला—

'सर, आपको मुबारक आपके डण्डे
शेर जंगल का राजा होता है,
उसकी मर्ज़ी, चाहे बच्चे दे या अण्डे ।

अनमोल मोती

रजनीश गुलाटी
बी० काम० (प्रथम वर्ष)

- सबसे बड़ा बहादुर बदला न लेने वाला है ।
- विद्या से बढ़ कर कोई दौलत नही है ।
- पुरुष की सुन्दरता उसकी विनम्रता है ।
- सबसे अच्छा नशा जनता की सेवा है ।
- दान विपत्तियों को खा जाता है ।
- क्रोध बुद्धि को खा जाता है ।
- चिन्ता आयु को खा जाती है ।
- रिश्वत इन्साफ को खा जाती है ।
- नेकी बदी को खा जाती है ।
- प्रायश्चित पाप को धो देता है ।

प्रेम और मित्रता

वीरेन्द्र कुमार बिजयरण
हिन्दी प्रथम वर्ष (विशेष)

प्रेम क्यों होता है, कैसे होता है और होने के बाद क्या होता है ? इत्यादि बहुत से प्रश्न हैं जो आम तौर से आप किसी अभिन्न मित्र से पूछते हैं तो इस विषय में शायद उनका यही उत्तर होता है कि 'बस यार ऐसे ही हो गया', किन्तु वास्तव में यह बात नहीं है।

क्यों और कैसे ?

मनोविज्ञान इस तथ्य को स्वीकार कर चुका है कि मानव शरीर से विशेष प्रकार की तरंगे (जिनको मानवीय विद्युत चुम्बकीय तरंगें कहा गया है।) प्रेषित व ग्रहण की जाती हैं। ये तरंगें सामान्यतः अनुभव नही की जा सकतीं, किंतु यदि आप इसका विशेष अभ्यास करें तो ऐसा सम्भव होगा कि आप स्वयं भी उनके प्रेषण-ग्रहण को अनुभव करने लगें। ये तरंगें जिस व्यक्ति विशेष के लिए तरंगित की जाती हैं, वह बहुत शीघ्र ही इन तरंगों को ग्रहण कर लेता है, किंतु अभ्यास न होने के कारण शीघ्रता से प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कर पाता।

आपने अपने दैनिक जीवन में अवश्य अनुभव किया होगा कि आप कहीं बस या रेलगाड़ा द्वारा यात्रा कर रहे हैं और किसी व्यक्ति विशेष की ओर देखते हैं (इसे त्राटक लगाना कहते हैं) यद्यपि उस व्यक्ति की कमर वाला भाग आपकी ओर है तो भी वह पीछे मुड़कर आपको अवश्य देख लेगा। या इनके बिल्कुल विपरीत आपकी ओर कोई 'त्राटक' लगाता है तो आप भी प्रतिक्रिया स्वरूप उसे स्वयमेव देख लेंगे। यह इन्हीं तरंगों का प्रभाव है। एक अन्य उदाहरण—आप प्रतिदिन की भांति शाम को घर आ रहे हैं। और घर पर आपके कोई रिस्तेदार, मेहमान या कोई अभिन्न मित्र आये हैं। किंतु आपको कोई पूर्व सूचना नहीं है। तो जैसे ही आप 'तरंग प्रभावी क्षेत्र में' आयेंगे, तुरंत ही आपके अन्तर्मन से आवाज आयेगी कि आज तो कोई आया हुआ है। और जब आप घर पहुँचते हैं तो आपको प्रसन्नता होती है कि आप भी पूर्वानुमान लगा सकते हैं, किंतु वास्तव में आपने उन विशेष तरंगों को ग्रहण किया जो आपके घर आये हुए व्यक्ति द्वारा प्रेषित की जा रही थीं।

यही तथ्य इसको भी सूचना देता है कि 'बस यार ऐसे ही हो गया'। वास्तव में यह भी एक दूसरे के प्रति प्रेषित तरंगों का परिणाम है। आप विज्ञान की भाषा में — ऋणाग्र व धनाग्र परस्पर आकर्षित होते हैं। सामाजिक भाषा में —विभिन्न लिंग के प्राणी परस्पर एक दूसरे को आकर्षित करते हैं। और इसी प्रकार धार्मिक भाषा के अनुसार यह तो सांसारिक नियम है कि आप किसी आकर्षक पुरुष या स्त्री के प्रति रुचि रखते हैं, तो वह आपका मित्र होगा/होगी।

अब प्रश्न यह है कि इस बीमारी के होने के पश्चात् क्या होता है ? (क्षमा कीजिए 'बीमारी' शब्द आपको शायद अटपटा लगे ; किंतु मेरे प्रेक्षणों व विचारों के अनुसार यह किसी भयानक

बीमारी से कम नहीं।) यह तो आप जानते हैं कि एक युवक और युवती जो इस रोग से ग्रसित हैं वे किस प्रकार स्वच्छन्दता से समय व्यतीत (नष्ट) करते हैं। किंतु हम इस ओर नहीं जायेंगे। विचार यह करना है कि इस बीमारी के होते हुए भी वह हम सबको यह अच्छी क्यों लगती है ?

युवकों का युवतियों के प्रति व युवतियों का युवकों के प्रति आकर्षण तो समान होता है किंतु जब वे परस्पर एक दूसरे से मिलते हैं तो दोनों के दिलों की धड़कनें प्रति मिनट असमान रूप से बढ़ जाती हैं। जिसके फलस्वरूप रक्त का प्रवाह बढ़ जाने से वे स्फूर्ति अनुभव करते हैं। तब दोनों ही एक विशेष प्रकार की खुशी अनुभव करते हैं। साहित्य की भाषा में इसे ही दिल का 'बल्लियों उछलना' या 'दिल धड़कना' कहते है।

हृदय स्पन्दन में वृद्धि की घटना 'नालिका विहीन ग्रन्थियों' (एण्डोक्राइन ग्लेंडस) द्वारा स्थापित हारमोन्स का प्रभाव है। और यह हार्मोन हमारे शरीर में स्थित अधिवृक्क ग्रन्थी (एड्रीनल ग्लेंडस) से विशेष परिस्थितियों से स्थापित होता है। और रक्त द्वारा स्थानान्तरित होकर हृदय की पेशियों (कार्डिएक मस्सलस) को उत्तेजित कर देता है। जिससे हृदय स्पन्दन की घटना बढ़ जाती है। किंतु इसके साथ-साथ हमारी धमनियों में रक्त का दाब भी बढ़ जाता है, जो अनुकूल अवस्था में तो सामान्य हो जाता है किंतु प्रतिकूल अवस्थाओं में यह बढ़ा हुआ रक्त दाब अधिक समय तक स्थिर रहकर या तुरन्त ही सामान्य से कम होकर हमारे मस्तिष्क पर बुरा असर डालता है, यहां तक कि निराशा की स्थिति में कुत्सित विचार उत्पन्न होने लगते हैं। अथवा अपराधी मनोवृति जन्म ले लेती है और कई मूर्ख तो इस अमूल्य निधि को खो देते हैं, या कुत्सित मनोवृत्ति को जन्म देकर नष्ट कर देते हैं।

अब सभी 'निराश प्रेमी' कालिदास या तुलसीदास तो हैं नहीं जो धिक्कार दिए जाने पर — (जैसा कि मैंने पढ़ा है—'लाज न आवत आपको, दौड़े आये साथ' 'धिक्-धिक् ऐसे प्रेम को, कहा कहूँ मैं नाथ) महाकवि और न जाने क्या-क्या बन गए। तो धिक्कारने से सभी तुलसीदास नहीं बन सकते। इस डालडा युग में तो निराश प्रेमी (या प्रेमिका अपेक्षाकृत कम) आत्महत्या जैसा उच्च-विचार ही निर्मित करते हैं। आप भी आये दिन समाचार पत्रों में अवश्य पढ़ते होंगे कि 'निराश प्रेमी ने कूदकर आत्महत्या की'।

तो मित्रो ! बन्धुओ ! तथा भुक्तभोगियो ! सावधान ! स्वयं को भावनाओं में मत बहने दो। मित्रता को मित्रता तक ही सीमित रखो। गलतफहमी में वे हँस के मिलें हम से, हम प्यार समझ बैठे। स्मरण रहे मित्रता और प्यार में आकश पाताल का अन्तर है। मित्रता केवल समान विचारों वालों की होती है जो किसी भी आयु के व्यक्तियों के मध्य हो सकती है। और प्यार—भाई, बहिन, पिता-पुत्र, माँ-बेटी, बेटे का होता है किंतु यह जो बीच की बीमारी प्रेम है, पूणतया विशुद्ध वानस्पतिक है जिसमें मनुष्य को खरपतवार के सिवा कुछ हाथ नहीं आता। वह स्वयं को, परिवार को और अपने समाज को धोखा देता है।

अत: आप किसी के मित्र हैं (प्रेमी या प्रेमिका नही) तो उस मित्र से विश्वासघात मत कीजिए।

साम्प्रदायिकता की आग

दर्शन सिंह चानना
बी०ए० (द्वितीय वर्ष)

आज के भारत में साम्प्रदायिकता की आग जोर पकड़ रही है। शासन निर्निमेष नेत्रों से देख रहा है। वह साम्प्रदायिक सर्प को कुचलने की बजाए उससे बचकर भागने के उपाय सोच रहा है। समाज विरोधी तत्व शेर की तरह दहाड़ रहे हैं। विनाश का ताण्डव कर रहे हैं। और सरकार संसद रूपी गुफा में घुसी अपनी जान बचा रही है।

हरिजन-सवर्ण के झगड़े, जाट-अजाट, ब्राह्मण-अब्राह्मण की लड़ाइयां, असम में विदेशियों की समस्या, नागालैंड तथा केरल में ईसाई-हिन्दू मारधाड़, पंजाब में सिक्ख उग्रवादियों की धर्म-युद्ध घोषणा, सम्पूर्ण राष्ट्र में हिन्दू-मुस्लिम भिड़त भारत के साम्प्रदायिक विष-वृक्ष की प्रमुख शाखाएं हैं। इनके प्रदूषण से भारत का वायुमडल विषाक्त हो चुका है। इस विषाक्त वायुमंडल में न जीना सरल है, न सुरक्षा सम्भव है। राजनीतिक दल इस आग में अपनी रोटी सेंकने में लगे हैं।

भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि सत्ता की राजनीति साम्प्रदायिकता के सम्मुख हमेशा घुटने टेकती रही है, नाक रगड़ती रही है और आत्मसमर्पण करती रही है। स्वतंत्रता-पूर्व देश के कर्णधारों ने किस निर्लज्जता से मुस्लिम उग्रवाद के सामने नाक रगड़ी, जिसके कारण न केवल लाखों हिन्दुओं के जीवन व सम्पत्ति का विनाश हुआ। अपितु साम्प्रदायिक आधार पर देश का विभाजन भी स्वीकार करना पड़ा। इतना ही नहीं, पचपन करोड़ रुपए पाकिस्तान को दिलवाने के लिए महात्मा गाँधी ने आमरण अनशन किया। आज वही पाकिस्तान पंजाब को भारत से अलग करने की साजिश कर रहा है। आज पाकिस्तान में सिक्ख-उग्रवाद को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यहां तक कि अमेरिका व पाकिस्तान ने सिक्खों के लिए वीसा भी समाप्त कर दिए हैं। ये सब क्यों, किसके लिए किए जा रहे हैं? यह सब चालें पंजाब को तोड़ने के लिए हैं, विदेशी भारत की एकता को देख नहीं सकते। इन्ही चालों के कारण भारत की परम प्रिय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या हुई। उनकी हत्या उन्हीं के सुरक्षा गार्डों- दो सिख भाइयों ने की। यह सब साम्प्रदायिक संकीर्णता के कारण हुआ।

जीवन और प्रशासन के हर क्षेत्र में हरिजन वर्ग को विशेष सुविधाएं प्रदान कर हिन्दू समाज में वर्ग-भेद उत्पन्न किया गया। फसलों को जलाना, घरों को आग लगा देना, उनकी बहू-बेटियों के साथ बलात्कार कर, उनकी सामूहिक हत्या कर देना आदि घटनाएं सुनने में आती रहती हैं।

शासन में जहां एक वर्ग की पहुंच है तो वहां दूसरा वर्ग दिन में तारे देखता है। सरेआम लट्ठ चलते हैं और पुलिस खड़ी नृत्य देख रही है।

साम्प्रदायिकता के फलने-फुलने, पनपने का मूल कारण है भारतीय राजनीति की क्षुद्र दृष्टि। भारत धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहां प्रत्येक धर्म की पूजा-अर्चना की स्वतंत्रता है। प्रचार और प्रसार की सुविधा है किन्तु यदि धर्म सरकार से टकराए, शाँति व व्यवस्था को चुनौती दे, तो सरकार को निष्पक्ष होकर राजनीति से ऊपर उठकर दोषी को दण्ड देना चाहिए। तभी साम्प्रदायिकता नष्ट होगी। जो भारतीय हैं, जिनकी राष्ट्रीयता-नागरिकता भारतीय है उन्हें भारत की राष्ट्रीय धारा में एकता का अनुभव करना चाहिए। भारत में ही मातृभूमि, पितृभूमि तथा पुण्य-भूमि के दर्शन करने चाहिए। सांस्कृतिक व सामाजिक धाराओं में एकरूप होने की प्रेरणा देनी चाहिए। कारण, राष्ट्र प्रेम के आगे साम्प्रदायिकता कभी महत्वपूर्ण नहीं होती।

मेरा विचार है कि आज का युवा वर्ग काफी सक्षम है तथा युवा वर्ग को बढ़-चढ़कर देश की समस्याओं को सुलझाने में सहयोग प्रदान करना चाहिए। वे देश को विश्व में सबसे आगे लाने की कोशिश करें। शासन चुस्त-दुरुस्त बने। और साम्प्रदायिकता के सर्प को कुचल दिया जाए। इस कार्य में युवा वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

"स्नेहालिङ्गन की लतिकाओं की झुरमुट छा जाने दो।
जीवन-धन! इस जले जगत् को वृंदावन बन जाने दो॥

—प्रसाद

विचित्र परिभाषाएँ

राजेन्द्र राना
बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष)

❀ बस : वह आधुनिक लैला जिसके इंतजार में आज का मजनूं अपनी आधी जिंदगी व्यतीत कर देता है।

❀ पैसा : एक सच्चा मेहमान जो ज्यादा वक्त आपके पास नहीं ठहरता।

❀ साड़ी : कपड़े का टुकड़ा जिसके बारे में बातें करने और सोचने में औरतें जीवन का अस्सी प्रतिशत भाग लगाती हैं।

❀ ब्यूटी पार्लर : युद्ध स्थल, जहाँ अधेड़ औरतें बुढ़ापे से लड़ती हैं।

❀ प्राइवेट सेक्रेटरी : जैसे बीबी घरवाली होती है, वैसे ही सैक्रेटरी दफ्तर वाली।

❀ स्टीरीयो सिस्टम : शोर करने का सबसे मंहगा साधन।

❀ होटल : एक ऐसा स्थान जहाँ से लोग यादगार के तौर पर चम्मच, तौलिये, छुरियाँ, इत्यादि ले आते हैं।

एयर कंडीशनर : वह यंत्र जिसे कमरे में लगाने से कमरा ठंडा हो जाता है और बाद में बिल आने पर आदमी ठण्डा हो जाता है।

एक बलि और

राकेश मांगलिक
बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष)

सूर्य की पहली किरण के निकलने के साथ ही मुहल्ले में पास के मकान से रोने-चीखने की आवाजें सुनकर मेरी नींद खुल गई। बिस्तर से उठकर खिड़की से झाँककर सुनने की कोशिश की। पता नहीं, इस रात ने किस के घर विपदा की झड़ी लगाई है। ध्यान से सुनने पर कुछ समझ आया, "अरे ये आवाजें तो पास के रामलाल जी के यहां से आ रहीं हैं। अभी कल तक तो इनके घर का वातावरण उल्लास पूर्ण था, परन्तु आज प्रातः ही·····।" फिर मन सोचता है, "कहीं इनके यहां ही·····। नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। साथ ही मानस-पटल पर दस साल पुरानी घटना छा गई।

मैं उन दिनों इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र 'विशेष' का विद्यार्थी था। डिग्री पूरा करने में सिर्फ छः महीने बाकी थे। एक दिन घर में कुछ मेहमान आए। मैं कुछ समझ न पाया। उनके जाने के बाद पिताजी से पूछने पर उन्होंने बताया कि 'ये लोग तुम्हारा रिश्ता मांगने आए थे और हमने साफ-साफ बता दिया कि हमारे लड़के की पढ़ाई-लिखाई और इतना बड़ा करने में पूरे बीस हजार रुपये खर्च हो चुके हैं और डिग्री लेते ही उसी विश्वविद्यालय में उसकी नौकरी लग जाएगी। वे लोग राजी हो गए हैं।"

मैं हतप्रभ-सा ये सब कुछ सुनता रहा। अचानक ये सब क्या हो गया। खैर मैं इंकार भी न कर सका। पर बीस हजार की बात मुझे मन ही मन कचोटती रही। चाह कर भी मैं उसका विरोध न कर सका। पता नहीं ऐसी कौन-सी शक्ति थीजो मुझे माता-पिता के सामने चुप रह जाने पर मजबूर करती रही। फिर कुछ दिन बाद हम सब शगुन लेकर लड़की वालों के घर जा पहुंचे। घर के नाम पर सिर्फ एक छोटा सा कमरा और उससे लगी हुई रसोई। घर में रहने वाले छः सदस्य जिनमें माता पिता, तीन बहनें और एक छोटा भाई था। बड़ी बहन मशीन पर कपड़े सिल रही थी, छोटी पास बैठी पढ़ रही थी तथा भाई बाहर खेलने गया हुआ था। सब मिलाकर घर की हालत सामान्य थी।

पिताजी व माताजी उनके माता-पिता से बातें करने में व्यस्त हो गए और मेरी दृष्टि पुनः घर का निरीक्षण करने लगी। कुछ देर बाद रसोई का परदा सरका और वो (मेरी होने वाली पत्नी)

हाथ में चाय और मिठाई वगैरह की ट्रे लेकर अन्दर आई। हल्के नीले रंग के सूट में उसका गोरा रंग बहुत ही सुन्दर लग रहा था। बड़ी-बड़ी काली आँखें व उस पर तनी हुई काली भवें गोरे मुखड़ें पर चार चाँद लगा रहीं थीं। ऐसे सुन्दर जीवन साथी की कल्पना से ही मैं झूम उठा। मेरा दिल तेजी के साथ धड़कने लगा। झुकी नजरों से उसने ट्रे मेज पर रख दी और मेरे माता-पिता के चरण स्पर्श किए। आज के पढ़े-लिखे समाज की सभ्य नारी का प्राचीन नारी की तरह झुककर चरण-स्पर्श करता देखकर मेरा हृदय पुलकित हो उठा। वह दिन भी आ पहुंचा, जिसका मुझे इन्तजार था। घर में हर तरफ उल्लास छाया हुआ था। मेरी छोटी बहन नीरू के तो पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। रिश्तेदारों और दोस्तों का आना शुरु हो चुका था। धीरे-धीरे सभी कार्य सम्पन्न हुए। बारात गई और कुशल मंगल के साथ लक्ष्मी को घर लाई। सावित्री जैसी सुशील पत्नी पाकर मेरा जीवन मानो सफल हो गया था।

अब तक मेरी नौकरी लग चुकी थी और लक्ष्मी के साथ मेरी जिन्दगी सामान्य रूप से चल रही थी। एक दिन जब मैं दफ्तर से घर पहुंचा तो लक्ष्मी कुछ परेशान दिखाई दी। मेरे पूछने पर वह केवल इतना ही कह पाई कि मेरे माता-पिता उसे और अधिक दहेज लाने के लिए कह रहे हैं। सामर्थ्य न होने पर भी उन्होंने घर की प्रत्येक आवश्यक वस्तु और बीस हजार रुपये नगद दिए हैं। इससे अधिक वो क्या कर सकते हैं। इतना कहने पर उसकी आँखों में आंसू स्पष्ट दिखाई देने लगे।

"घर में दो भाई-बहन पढ़ने वाले हैं, दूसरी बहन भी विवाह योग्य हो गई है। जो कुछ जमा कर रखा था वो सब तो शादी पर खर्च हो गया। तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ ?" इतना कहकर वह फूट-फूट कर रोने लगी।

अगली सुबह चाह कर भी मैं माता-पिता से इस बारे में जिक्र न कर सका। वातावरण फिर से सामान्य हो गया। विश्वविद्यालय की ओर से मुझे पन्द्रह दिन के लिए दिल्ली भेज दिया गया। वापिस घर लौटने पर मालूम हुआ कि लक्ष्मी स्टोव के फटने के कारण जल कर मर गई। मेरी हालत पागलों के समान हो गई। मैंने सोचा, काश, उस वक्त जब पिताजी बीस हजार की बात कर रहे थे, तब मैं क्यों खामोश रहा। मेरी उस कायरता का मूल्य इतना मंहगा पड़ेगा, ये मैंने सोचा भी न था। लक्ष्मी के जलने का कारण अब मुझे समझ आ चुका था, परन्तु घर की इज्जत को देखते हुए एक बार फिर चुप हो गया। अब बोलने से मेरी लक्ष्मी मुझे वापिस तो मिल नहीं सकती थी। माता पिता के बहुत जोर देने पर भी मैंने दूसरी शादी नहीं की और आज तक अकेला इस पश्चाताप की आग में जल रहा हूं।

यादों का सिलसिला टूटते ही मैं रामलाल जी के घर की ओर दौड़ा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। रामलाल जी की बहू बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसका शरीर झुलस चका था और जगह-जगह से बुरी तरह जला हुआ था बड़ा ही भयानक लग रहा था देखने में। पास जाकर देखने पर पता चला कि उसके प्राण पखेरू उड़ चुके हैं। एक और लड़की दहेज की बलि चढ़ चुकी थी। मैं अपने समाज में दहेज की इस कुप्रथा पर चिंतन करता हुआ थके कदमों से घर वापिस पहुंचा और बिस्तर पर गिर पड़ा।

नैतिकता

सुदेश नंदवानी
बी० काम० (तृतीय वर्ष)

आधुनिक युग में मनुष्य करना तो बहुत कुछ चाहता है लेकिन कर नहीं पाता। मनुष्य मन ही मन कई तरह की बातें सोचता है। नए-नए विचार उसके मन में जन्म लेते हैं। तत्पश्चात् वह उन पर विचार करता है। कई तरह के निश्चय लेता है। अपने मित्रों से परामर्श करता है तथा अपने मन में आई समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए प्रयत्नशील रहता है। कई तरह से उनसे बात करके अपने मन को बार-२ समझाने तथा विचारों के आदान-प्रदान के बाद बहुत समय व्यय करने के पश्चात ही वह किसी निश्चय पर पहुंच पाता है। लेकिन तब भी उसे कोई न कोई शंका घेरे रहती है जिसके निवारण हेतु वह तर्कों का निर्माण करता है और अपने मन को समझाता है।

जब मनुष्य अपना कार्य आरम्भ करने के लिए घर से बाहर निकलता है तो वह अपने कार्य को बड़े ही धैर्य से आरम्भ करता है। अपने सिद्धान्तों पर चलते हुए ही हर कार्य को पूरा करने की उसकी चेष्टा रहती है। आरम्भ में तो उसे कार्य करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मसलन— उसे पैसा कमाने के लिए कई तरह के लोगों से मिलना पड़ता है, कई तरह के झूठ बोलने पड़ते हैं, कभी किसी को रिश्वत देनी पड़ती है, कभी माल में हेरा-फेरी करनी होती है, और न जाने कितने प्रकार के हथकंडे अपनाने पड़ते हैं। तब कहीं जाकर वह दो पैसे कमा पाता है। जब वह व्यक्ति संध्या में थका हारा घर लौटता है तो सोचता है कि उसने आज दिन भर क्या किया ? उसे अपने द्वारा बोले गए झूठ, दी हुई रिश्वत, माल में की गई मिलावट और न जाने क्या-क्या याद आता है। फिर वह एक नजर अपने सिद्धान्तों पर डालता है जो उसने अपने कार्य करने से पहले बनाए थे। वह व्यक्ति देखता है कि जो कुछ भी उसने दिन भर किया, किसी भी प्रकार का कार्य किया, क्या वह उसके सिद्धान्तों के अनुरूप था। वह इस विषय के संदर्भ में गहन चिन्तन प्रक्रिया से गुजरता है। समाधान न मिलने पर अपने मित्रों से विचार विमर्श करता हैं। उसकी आत्मा अनवरत रूप से उसे कचोटती रहती है कि इतना सब निश्चय कर लेने के बाद भी अन्ततः क्यों वह अपने सिद्धान्तों से दूर चला गया ?

उस व्यक्ति के मित्र उसे समझाते हैं कि तुमने जो कुछ भी किया, ठीक किया। वे कहते हैं कि जब हर व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों को पाने के लिए कुछ न कुछ करता है। उसने अगर ऐसा कुछ भी किया है तो इसमें कोई बुराई नहीं है। जब हर प्राणी अपने आदर्शों की बलि चढ़ाकर धन बटोरने की चेष्टा कर रहा है तो तुमने ऐसा कोई पाप नहीं किया जो अफसोसनाक लगे। जब किसी भी व्यक्ति को अच्छाई-बुराई का ध्यान नहीं है तो तुम कौन होते हो अपने धर्म का पालन करने वाले, अपने सिद्धान्त, आदर्श और मूल्यों पर अडिग रहने वाले ? और अडिग रहकर भी, नितान्त नैतिक बनकर भी तुम्हें आखिर मिलेगा क्या ? जब हर किसी व्यक्ति को मैं-मैं, मेरा घर और मेरे पेट की लगी हुई है, 'हम' और 'हमारा' कहने पर भी तुम्हारा महत्व क्या हो सकता है। नकारखाने में तूती को कोई नहीं सुनता। जब हर व्यक्ति किसी दूसरे को सोचकर मात्र अपन लिए ही कुछ

सोचता हैतो तुम्हारा निःस्वार्थ चिंतन क्या तुम्हें अमृतफल दे सकता है ? जब हर कोई समाज की लोक मर्यादा को भंग कर अपने हितार्थ ही कार्य में संलग्न है तुम्हारी लोक-मर्यादा को देखने वाली सामाजिक दृष्टि का महत्व ही क्यों हो ?

इस प्रकार की बातें सुनकर वह व्यक्ति भी अपने सिद्धान्तों को तोड़कर, नैतिक मूल्यों को छोड़कर, उस सांसारिक भंवर में कूद पडता है जहाँ हर जगह 'मैं-मैं' तथा 'अयंनिजः परोवेति' की रट लगी है। वह उस मंजिल को पाने की चेष्टा करता है जो उसे खुद भी दिखाई नहीं दे रही है। लेकिन जिसमें सुखद संभावनाएँ छिपी है और जिसकी कल्पना की जाती है। वह उस चोटी पर चाहता है जहाँ फिसलन ही फिसलन है।

इस प्रकार हम इस आधुनिक समाज में देखते हैं कि व्यक्ति क्या करने जाता है और समाज उससे क्या करवाता है और इस तरह हमारे नैतिक मूल्यों में गिरावट आती जा रही है। हम बिना कुछ खोये ही सब कुछ पाने की चेष्टा करते हैं और सब कुछ पाने की चेष्टा में जो थोड़ा बहुत मिलना भी होता है वह भी नहीं मिल पाता है और व्यक्ति अपने हाथ मलता रह जाता है।

यह तो रही बात नैतिकता की। अब ज़रा विषय के दूसरे पहलू पर दृष्टिपात किया जाए। जहाँ तक निदान के उपाय का प्रश्न है तो उसका एक तर्क यह है कि नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना व सामाजिक बिखराव को रोकने के लिए हमें अपनी शिक्षा-पद्धति में आमूल परिवर्तन लाने होंगे। शिक्षा में कुछ इस प्रकार के विषय रखने होंगे जिससे विद्यार्थी में व्यावहारिक जीवन की समझ पैदा हो सके। उसे जीयन को सत्य-मिथ्या का ज्ञान हो सके जिससे कि समय में परिवर्तन क्रम के अनुसार उसमें इतनी क्षमता आ जाये कि वह व्यावहारिक जीवन की कठिनाइयों को सहर्ष झेल सके और आने वाले किसी संघर्ष से पलायन करने की स्थिति में न पहुंच जाये।

दूसरा पहलू है व्यक्ति के आन्तरिक विकास का। हमें अपनी चिन्तन-प्रक्रिया को इतना परिपक्व बनाना होगा कि हममें न केवल अपने वरन् आसपास के रहने वालों को भी चिन्तनशील बनाना होगा अगर घर का एक बड़ा सदस्य अपने आचरण में अच्छे परिवर्तन लाने का प्रयास करे तो घर में रहने वाले बाकी सदस्य भी अपने आप में परिवर्तन लाने की चेष्टा करेंगे। छोटे बच्चों को तो बचपन से ही कुछ इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए जिससे कि वह अपने आप को सद्गुणों के मानदंडों पर तौल सके। उदाहरण के तौर पर जब मध्यवर्गीय परिवारों में घर में कोई व्यक्ति किसी से मिलने आता है तो प्रायः पिता अपने पुत्र से अन्दर बैठे-२ ही यह कहलवा देता है कि पिताजी कहीं गए हैं, वह घर पर नहीं हैं। अब जब इस प्रकार का वातावरण घर में होगा तो नैतिकता को कहाँ जगह मिलेगी ! ऐसे में यदि हम उस बच्चे से बड़ा होने पर सच्चरित्रता की आशा रखें तो यह उसके प्रति अन्याय ही होगा।

अन्ततः इस सन्दर्भ में कहना सिर्फ इतना ही है कि समाज और मानव के अस्तित्व के लिए नैतिक मूल्यों का अस्तित्व नितान्त आवश्यक है। समय रहते यदि हम सचेत न हुए, नैतिकता की प्रस्थापना हेतु संघर्ष न किया तो मानवीय गरिमा और समाज की शुचिता का तो अन्त होगा ही साथ ही साथ हम मनुष्य के दावे से भी वंचित रह जाएँगे क्योंकि नैतिकता ही एक गुण है जो मनुष्य को पशु से अलग रखता है।

दुकान एक भाषण की

विनोद बंसल
(पूर्व छात्र)

खुल गई ! खुल गई !!
भाषण की दुकान ।
मिलेगा आपको यहां
हर किस्म का भाषण।
छोटा भाषण ।
बड़ा भाषण ।
मौत पर भाषण ।
जन्म पर भाषण ।
जीत पर भाषण ।
हार पर भाषण ।
राशन पर भाषण ।
लेशन पर भाषण ।
नेशन पर भाषण ।
घरेलू भाषण ।
विदेशी भाषण ।
खर्च पर भाषण ।
बजट पर भाषण ।
आइए खरीदिए,
हिचकिचाइए नहीं ।
तौल में पूरा मिलेगा
हर पैसे का मूल्य मिलेगा
बाट में कोई कमी नहीं,
हाट में कोई ठगी नहीं ।
बाग - बाग हो जायेंगे
पाकर ये भाषण ।
भोजन भूल जायेंगे
कपड़ों की फिक्र होगी खत्म
घर बाहर की भीड़ में
सब जगह दिखेगा ।
भाषण पर भाषण ।
मात्र एक वाक्य
काम करेगा तीर का ।
केवल एक शब्द
दुआ बन जाएगा
किसी फकीर का ।
सोते - जागते
उठते - बैठते ।
सड़क पर हों या
संसद की कुर्सी पर
जन्मदिन पर हों
या मातमपुर्सी पर ।
गले की सूराख से
निकाल यह भाषण
यों भागेगा, यों भागेगा
क्या भागा था राकेश शर्मा
अन्तरिक्ष में ।
सेटेलाईट को भी मात करेगा
यह भाषण ।
रूपवती होगी फिदा,
मरते नेता होंगे जिंदा ।
खरीद कर तो देखिए,
छूकर तो देखिए,
बोलकर तो देखिए,
गाकर तो देखिए
भाषण है जनाब भाषण
कोई मिलावट नहीं,
न कोई हेरा-फेरी ।
सच्चे का सौदा है,
बेईमानी से कोसों दूर
इन भाषणों में पाएंगे
आप एक अजब नूर ।
तो आइए,
लीजिए भाषण ।
देश यह महान् है,
मत कहिए कि रेगिस्तान है
आदमी हैं यहाँ इतने ।
फिर सवाल है कि
भाषण हों कितने ?
भाषण के नाम पर
जुट जाइए हुजूर ।
और कीजिए कल्याण
इस राष्ट्र का हुजूर ।
कोई नहीं रोकेगा ।
बात की बात में
भर जाएगी आपकी जेब
हैरत में पड़ जायेगी आपकी जेब
भूत चाहे बिगड़ गया
फिक्र नहीं,
भविष्य संवर जाएगा ।
भाषण के नाम पर
देश आपका सुधर जाएगा ।

वैधव्य

श्री अनिल भट्ट
प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग

किसी शाम को हमने
पिछली रात के बटोरे
कुछ सपने,
यादों में
कल्पना ने जो साधे
दर्द ने
बड़ी बेरहमी से उन्हें
बालू को बाँटे ।
अब बस उदास आंखों में
एक जीर्ण - शीर्ण सहारा,
मिलन को मृगतृष्णा या
दावानल की प्रतीक्षा ?
बाकी जीवन का उदास
यह किनारा,
गूंजते अतीत में
ढलती ये शामें.
कहते हो - लौट आएंगी ।
इतना बड़ा झूठ मत बोलो
किस दिन ने लौटायी हैं
गुजरी हुई शामें ?

एक श्रद्धांजलि—

साहब जी, चाय ?

डा० रमाशंकर श्रीवास्तव
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

विश्वास नहीं होता कि शिवसिंह का निधन हो गया। सोमवार, 23 जनवरी, 1984 की रात साढ़े नौ बजे अपने दिल्ली स्थित मंगोलपुरी के आवास में हृदयगति रुक जाने से शिवसिंह भगवान को प्यारा हो गया। वह हमारे कालेज का चपरासी था। वह कई वर्षों से चाय बनाकर हमें पिलाता था। स्टाफ के लोग बैठे-खड़े अपनी बातों में मशगूल रहते और शिवसिंह गरम-गरम चाय की प्यालियाँ सबके सामने रखता जाता। खाली प्याले वापस ले जाता, उन्हें धोता और फिर चाय तैयार कर प्राध्यापकों के सामने हाज़िर कर देता। हम सभी से पूछता— साहब जी, चाय ? यह पूछते समय उसके दाहिने हाथ की तर्जनी तनिक उठ जाती। वह हमारी सेवा करता लेकिन कभी-कभी बुजुर्ग की तरह हमें समझाता भी। बावन-चौवन साल का रहा होगा शिवसिंह। इसलिए राजधानी कालेज के टीचिंग स्टाफ में बहुत से प्राध्यापक उससे छोटे भी थे। स्टाफ रूम में कालेज-यूनिवर्सिटी की अनेक चर्चाएं चलतीं। देश-दुनिया, घर-द्वार, निजी-परायी बातें, तरह-तरह की बातें होतीं, कोई धीरे-धीरे बोलता, कोई ऊँची आवाज में बोलता। इन राग-विराग, हर्ष-रोष, गहन-गंभीर ज्ञान और चटपटी सस्ती फुलझड़ियों में गूंजते प्राध्यापकों के स्वर के बीच शिवसिंह अपने काम में व्यस्त रहता।

शिवसिंह प्राध्यापकों और छात्रों के बीच एक कड़ी का काम करता था।

—शिवसिंह !

—जी साहब !

—कल एक साहब आएंगे मुझे पूछने, उन्हें बैठा लेना। मैं ग्यारह बजे तक कालेज आऊँगा।

—बहुत अच्छा साहब।

—ठाकुर साहब, भैया, एक गिलास पानी पिलाना।

—अभी लो डाक्टर साहब।

छात्र उससे पूछते— क्या इकनामिक्स वाले वो सर आए हैं ?

—हाँ आए हैं। अभी दो मिनट पहले क्लास लेने गए हैं।

—इधर हिस्ट्री वाले सर तो नहीं दिखे ?

शिवसिंह तपाक से बोलता — हाँ, हाँ अभी वे आफिस की तरफ थे। पाल साहब से बात कर रहे थे।

—ऐ भाई शिवसिंह ! यह झोला रखना।

—लाओ साहब। क्या कोई खाने-पीने की चीज है ?

दोनों हँसते हैं।

दोपहर का सूरज ढलने पर है। पश्चिम की खिड़कियो से धूप उतरकर कुर्सियों पर आ बैठी है। एक साहब पुकारते हैं— ओ शिवसिंह, भई मेरे परांठे तो गरम कर दे।

शिवसिंह तेज कदमों से उनका टिफिन बाक्स अन्दर ले जाता है और पाँच मिनट में परांठे-सब्जी गरम करके उनके सामने ला रखता है। एक सज्जन ने अपना लंच बक्स खोला है। दूर से देखता है शिवसिंह, साहब की टेबुल पर केवल पानी की कमी है। एक गिलास पानी लाकर रख देता है। साहब ने लंच ले लिया, अब एक कप गरम चाय। वह भी हाजिर।

शिवसिंह को मालूम था, कौन साहब चीनी ज्यादा लेते हैं, कौन कम। किन्हें गाढ़ा लीकर चाहिए, किन को हल्का। किसे कितने कप और कब-कब। उधर सिगरेट सुलगी है। चाय की माँग होती है। शिवसिंह के हाथों में चाय तैयार।

स्टाफ एसोसिएशन के अनेक सेक्रेटरियों के पास अनेक बार बैठ-बैठकर वह चाय-चीनी-दूध का हिसाब लिखाता रहा। एक बन्धु खर्चे का हिसाब रोज-रोज लिख रहे हैं। शिवसिंह सामने बैठा है। कहता है— लिखो साहब, दो किलो चीनी, ग्यारह रुपए।

—अबे, साढ़े पाँच रुपए के भाव पर तू चीनी लाया ?

—आप साहब, हमें सस्ती दिला दो। हमें क्या ?

थोड़ी देर झों-झों, विनोद-परिहास और फिर शांति— लो साहब जी, आपकी ये चाय रखी है।

शिवसिंह ऊँची आवाज में बोलता था। कभी-कभी झगड़ता भी था लेकिन मन के भीतर कुछ नहीं रखता था। कालेज के कर्मचारियों, प्राध्यापकों और छात्रों के प्रति स्नेह की उसमें कमी नहीं थी। यों वह भी एक मानव था। कमियाँ किसमें नहीं होतीं।

चार-साढ़े चार का समय हो गया। कालेज की चहल-पहल शान्त होने लगी। शिवसिंह स्टाफ रूम की पत्र-पत्रिकाओं को बटोरने में लगा है। हिन्दुस्तान टाइम्स का एक पन्ना सोफे के नीचे

जा गिरा है। जाकर उसे उठाता है। एक प्याला कोने में लुढ़का है। शिवसिंह सब कुछ समेट कर धोता-सजाता है। जरूरी चीजें अपनी आलमारी में बन्द कर देता है।

शिवसिंह का चेहरा नहीं भूलता। शायद इसलिए कि हमें यकीन नहीं होता कि वह हमारे बीच से उठ गया। लम्बा-गोरा शिवसिंह। चेहरा चौड़ा, दँतावली सुगढ़। ललाट पर उमर की लकीरें उभर आई थीं। सिर के बाल कुछ साल पहले खिचड़ी थे, अब उन पर सफेदी ज्यादा थी। उसकी बोली बुलंद थी। बीड़ी पीते-पीते वह जोर से खांसने लगता। आँखें लाल हो जातीं।

एक बन्धु कहते हैं— अरे भाई, बीड़ी कम पिया कर।

शिवसिंह स्टाफ के कुछ लोगों के बहुत निकट था। उनमें कई समय-समय पर उसकी आर्थिक सहायता करते थे। पहले वह शास्त्री नगर में रहता था। बाद में वह मंगोलपुरी के अपने बाईस गज वाले मकान में सपरिवार आ गया था। मंगोलपुरी में उसका सबसे निकट का व्यक्ति वह शंकर है जो हमारे कालेज का प्रधान माली है। घर में अभाव था। पत्नी अस्वस्थ रहती थी। एक सत्रह-अठारह साल का जवान बेटा आज से सात-आठ साल पहले मर चुका था। दो बेटे और हैं। एक बेटा शादी-शुदा है। दो बेटियाँ हैं। एक बेटी विमला जो बी० ए० में पढ़ रही है। (विमला को अब हमारे कालेज में नौकरी मिल चुकी है।) छोटी बिटिया पढ़ायी छोड़ कर घर पर ही रहती है।

शिवसिंह कुमायूँ (गढ़वाल) के एक पहाड़ी गाँव का मूल निवासी था। रोटी की चिन्ता उसे दिल्ली लेकर आई थी। पिछले पन्द्रह वर्षों से वह राजधानी कालेज में सेवारत था। एक बार की बात है। अपने पिता के दिवंगत होने पर वह अपने गाँव गया था। वहाँ श्राद्ध आदि करने के बाद जब लौटकर आया था तब अपने गाँव के नाते-रिश्ते, प्रेम-भाव, संस्कृति-व्यवहार की बातें मुझे बड़े मनोयोग से सुना रहा था। साहब जी, दिल्ली में वह चीज नहीं है जो हम लोगों के गाँवों में है। वहाँ किसी के घर चले जाओ बाबूजी, आप देखोगे वे कैसा स्वागत-सत्कार करते हैं। गाँवों में भूल जाने पर किसी से रास्ता पूछिए तो बताने वाला खुद कुछ दूर तक आपका साथ देगा। ये सब बातें बताते समय शिवसिंह की आँखों में खुशी से भरी यादों की चमक होती। उसके दुःख-सुख की बातें सुनने वालों में हमारे सहयोगी श्री एस० के० मुखर्जी, श्री अनिल भट्ट और श्री नन्दकिशोर गुप्त बहुत निकट थे।

कल्पना करता हूँ, शिवसिंह की मृत्यु की खबर उसके गाँव में पहुंची होगी। खबर सुनकर अपने लोग सन्न रह गए होंगे।। शिवसिंह तो अभी बिल्कुल भला-चंगा था। पिछली बार हमारे साथ बैठकर हुक्का पिया था। हमारे साथ खेतों की मेंड़ पर बैठा दिल्ली की खबरें सुना रहा था। अगली बार आकर हमारे जलसे में शामिल होने के लिए बोल गया था। लेकिन अचानक उसे हो क्या गया। यही विस्मय तो हमें भी है। दुनिया की हर चीज शायद इसीलिए क्षणभंगुर है। जीता-जागता, दौड़ता, हँसता-खेलता एक पुतला अचानक शान्त हो जाता है।

उसकी मृत्यु के एक दिन पहले का वह दृश्य हमें नहीं भूलेगा। राजधानी कालेज की पहली मंजिल के स्टाफ रूम में शिवसिंह सोफे पर लेटा हुआ छटपटा रहा है। अनेक प्राध्यापक और कर्मचारी

खड़े हैं। छात्र देख-देखकर लौट जाते हैं— यहाँ कोई गड़बड़ है। प्राध्यापकों के साथ प्राचार्य डाक्टर आर० एम० पाल खड़े हैं। अभी-अभी शिवाजी कालेज फोन करके वहाँ से डब्लू. यू. एस. के एक डाक्टर को बुला लिया गया है। डाक्टर ने दवा दी है। बाहर से भी दवा मंगाने की बात हो रही है। मामला गंभीर जरुर है लेकिन मौत द्वार पर खड़ी है, यह किसी को पता नहीं। डाक्टर कहता है, इनको मानसिक परेशानी-निराशा के साथ गेस्ट्रिक ट्रबल्स है। इनको आराम चाहिए। सोफे पर बार-बार छाती-गर्दन की ओर इशारा करके तड़प रहा है शिवसिंह। आँखें फट रही हैं। उनमें पीड़ा और करुणा बढ़ती जा रही है। डाक्टर साहब, मुझे बचा लो। गले में बहुत दर्द है। ये सब जकड़ गया है। बाँहों में भी दर्द है। मुझे बचालो डाक्टर साहब। आसपास कई लोग खड़े हैं, वहीं कालेज का माली शंकर भी खड़ा है। शिवसिंह पुकारता है— भाई शंकर, मेरी यह बाँह दबा दे। शंकर सोफे के दूसरी ओर से आकर उसकी बाँह दबाने लगता है। कालेज के एक अन्य चपरासी बालादत्त को दवा के लिए भेजा जा रहा है। लोग गंभीर हैं और एक दूसरे को देख रहे हैं। डाक्टर पाल एक तरफ बढ़कर इकनामिक्स के प्राध्यापक और स्टाफ एसोसियेशन के सेक्रेटरी श्री एस० के० मुखर्जी से पूछते हैं— हैव यू सम मनी विद यू ? मुखर्जी साहब—येस, आइ हैव। डाक्टर की राय से थोड़ी देर में स्कूटर मँगा कर शिवसिंह को उसके घर भेजा जाता है। साथ में बालादत्त और शिवसिंह की बेटी विमला है।

चाय के प्याले खामोश पड़े हैं— उनकी खनखनाहट को आज मूर्छा लग गई है। अन्दर पानी उबल-उबलकर गिर रहा है— कौन हटाए केटली। क्या इन केटली-प्यालों को पूर्वाभास था कि रोज बस से जाने वाला शिवसिंह आज स्कूटर से अपने घर इसलिए जा रहा है कि उसे आज से कल सुबह तक कफन ओढ़ कर निगम बोध घाट जाने की जल्दी है ?

एक पतंग आकाश में मचल रही थी। दिग-दिगन्त की ऊँचाइयों को छू लेने की अभिलाषाएँ भरी थीं उसके मन में। अचानक किसी के निष्ठुर हाथों ने उसकी डोर समेट ली। कौन नहीं जानता कि जो हमें धरती पर भेजता है, वही हमें बुला भी लेता है। लेकिन ईश्वर ! तुम्हारे शक्तिशाली और सर्वव्यापक होने का अर्थ यह तो नहीं है कि तू जब चाहे, जैसा चाहे हमारे जीवन की डोर खींच लें ? शेक्सपियर के मन में क्या इसी निराशा और बेबसी का हाहाकार गूंजा था— लाइफ इज ए टेल टोल्ड बाइ एन इडियट ? सच, तू समझदार होता तो शिवसिंह की जीवन कथा का ऐसा निर्मम अन्त नहीं करता। हमें मालूम है, तुझमें किसी के प्राणों के हर लेने की शक्ति है किन्तु रोटी देने की शक्ति नहीं है। अपनी रोटी के लिए तो मनुष्य को अपने ही बाहुबल का भरोसा होता है। और शिवसिंह आखिर कर क्या रहा था, रोटी ही तो कमा रहा था ?

शिवसिंह— शिव भी था, सिंह भी था। वह सबके कल्याण की बात सोचता था। अपनी सेवा-निष्ठा में सिंह की तरह डटा रहा। जाओ ठाकुर ! परमात्मा को जल्दी मची थी। भगवान भी अधीर होता है. इसका सबूत तुम्हारी मौत है। संभव है, भगवान के घर कोई बहुत जरुरी काम आ पड़ा हो। उसने तुझे अचानक याद किया। उसे किसी कर्मनिष्ठ सेवक की जरूरत आ पड़ी हो। तू वहाँ भी उसी स्फूर्ति और बुलन्द आवाज में देवताओं की सेवा करता होगा। लेकिन मौका पड़ने पर उस भगवान से बता देना कि राजधानी कालेज के छात्र, कर्मचारी और प्राध्यापकों ने अपने आँसुओं से लिखकर एक चिट्ठी भेजी है और शिकायत की है कि शिवसिंह के जाने का समय यह नहीं था।

कृपालु-दयालु तुम जब बनते होगे तब, लेकिन हमारे बीच से शिवसिंह को छीनकर तुम निष्ठुर ही कहलाने योग्य हो।

मंगोलपुरी के उस वाईस गज के मकान में शिवसिंह चारपाई पर लेटा है। घर के लोग उसे घेरे खड़े हैं। लगता है, अब तबीयत सुधर जायेगी। मृत्यु भी कितने छलावे लेकर आती है। सामने कालेज का चपरासी बटेश्वर शान्त खड़ा है। शिवसिंह— भाई बटेश्वर, मुझे दस रुपए दे दे। पैसे नहीं हैं। बटेश्वर ने दस रुपए दे दिए। शिवसिंह अर्थ-संकट में रहता था। अनेक बार उसको लोगों से लेन-देन करना पड़ता था। समय-समय पर कई प्राध्यापक उसकी सहायता कर देते थे। शंकर माली भी कभी अपने पास से और कभी कहीं से माँगकर शिवसिंह की जरुरतें पूरी कर देता था। उस रात शंकर उसके पास से हट नहीं रहा था। लेकिन शिवसिंह ने यह कहकर हटा दिया कि अब मैं ठीक हूँ। तुम जाओ। जरुरत पड़ी तो बुला लूँगा। तेरे सिवा मेरा यहाँ कौन है भाई।

शिवसिंह की बड़ी लड़की विमला आँखों में आँसू भरे बता रही थी— पिताजी पिछले दो रोज से कुछ उखड़े-उखड़े से रहते थे। उस दिन माघ-मास में दान-पुण्य करने के ख्याल से घर से खिचड़ी लेकर कालेज आए थे कि जाकर पंडित को दे आऊंगा। वह चावल-दाल पड़ा का पड़ा रह गया।

मृत्यु की रात— शिवसिंह ने पुकारा— विमला, मुझे भूख लगी है।

विमला दलिया तैयार कर लायी। शिवसिंह चमच से खाने लगा, बाद में थाल उठाकर पूरी दलिया पी गया। न जाने उस दिन उसकी भूख इतनी क्यों बढ़ गई थी।

वह लगातार गले-बांह में दर्द की शिकायत करता रहा—हे भगवान! यह मुझे क्या हो गया। गले छाती का दर्द जाता नहीं। हे भगवान! यह मुझे क्या हो गया। उसकी छटपटाहट बढ़ गई। कभी बैठता, कभी लेटता हे भगवान! यह दर्द बढ़ता जा रहा है और अंत में—आह! जोर से चिल्लाया और शान्त हो गया। आँखें बाहर निकल आईं।

विमला के लिए मृत्यु का यह प्रथम साक्षात्कार था। घर में कोहराम मच गया। मुहल्ले पड़ोस के लोग दौड़ गए। सभी ने जाना— शिवसिंह चला गया।

फिर मृत्यु की चर्चा, सांत्वना और प्रबोधन। लोगों के अपने-अपने अनुभव। मिलती-जुलती कहानियाँ— आदमी के अंत की कहानियाँ।

दूसरी सुबह कालेज में जिसने खबर सुनी, वही सन्न रह गया। कर्मचारी-गण दौड़ पड़े। कुछ प्राध्यापक भी पहुँचे। जीवन भर पेट की आँच को बरकरार रखने वाले आदमी का अंत लकड़ी की आँच में ऐसे हो गया, जैसे कुछ भी न हुआ। निगम बोध घाट की गोद में एक और शिशु सो गया।

दूसरे दिन कालेज फिर खुल गया। वही चहल-पहल, वही शोरगुल। टी-रुम की केटली फिर उबलने लगी। प्याले खनखनाने लगे। जिन्दगी का यही सफर है। सब कुछ पहले जैसा चलने लगा। शिवसिंह के परिवार को आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव कर्मचारियों और प्राध्यापकों ने सर्वसम्मति से मान लिया।

जाओ शिवसिंह! हम विवश होकर तुम्हें विदा दे रहे हैं। यह हमारी श्रद्धांजलि तुझे अर्पित है। आज हम सभी ने महसूस किया है कि हम मनुष्यों के पास सब कुछ है लेकिन अर्थी पर लेटे आत्मीय को जगा देने की शक्ति हममें नहीं है। तुम जहाँ भी रहो, तुम्हारी स्वर्गीय आत्मा को शांति मिले।

राजधानी कालेज के प्रांगण में सभी परिचित चेहरे दिखाई पड़ रहे हैं। इन बरामदों में और सीढ़ियों पर लोग विचर रहे हैं। बस, एक शिवसिंह नहीं है।

विश्वास नहीं होता, इतनी जल्दी यह सब क्या हो गया। नाटक अभी अधूरा ही था कि पर्दे की डोरी टूट गई और पटाक्षेप हो गया। काश! वह पर्दा फिर उठता और शिवसिंह आकर पूछता—'साहब जी, चाय?'

—'हम छोटे इंसान समुंद्र में बूंद के समान हैं। ईश्वर नहीं बचाएगा तो शैतान हमें खा जाएगा।'

वह क्या था ?

भारत भूषण
बी० ए० (द्वितीय वर्ष)

आज सुबह जब मैं तैयार होकर कालेज जा रहा था तो अचानक मैंने पीछे मुड़कर देखा कि वह भी कालेज जाने के लिए चली आ रही है। दिल में ख्याल आया उससे कोई बात करूं'। मैं उसके करीब पहुंचने के लिए रुका ही था कि वह तेज कदमों से चलते हुए मेरे आगे से निकल गई और मैं कुछ न कह सका। जब मैं बस स्टाप पर पहुंचा तो वह अपनी दो सहेलियों के साथ बस की सीट पर बैठ चुकी थी। मेरे कदम अपने आप उस बस की ओर बढ़ने लगे। और मैं उसके सामने वाली सीट पर जा बैठा। इसी बीच उसने मुझे एक बार देखा और उसी पल नजरें झुकालीं। जैसे उसने मुझे पहली बार देखा हो। मैं यह सोचने लगा कि क्या यह वही लड़की है जो किसी बहाने मुझे देखने के लिए घंटों धूप में खड़ी रहती थी। जितनी देर मैं छत पर रहता, वह मेरे सामने रहती हम एक दूसरे से करीब से कभी नहीं मिले थे। लेकिन दूर-दूर रहकर भी हम एक दूसरे के बहुत करीब थे। सोचते-सोचते मेरी आंखों के आगे अंधेरा सा छाने लगा और अतीत की कुछ यादें ताजा होकर मेरे दिमाग में उभरने लगीं।

मुझे अच्छी तरह याद है- उस समय मैं बारहवीं कक्षा में पढ़ता था। ज्यों-ज्यों परीक्षा करीब आ रही थी मैं एकांत में अपनी छत पर अधिक से अधिक समय पढ़ने में बिताता था। एक दिन अचानक मेरी नजर सामने वाली छत पर पड़ी जहां एक लड़की कपड़े सुखा रही थी—चुपचाप गुमसुम-सी। वह लड़की एकदम सादी थी। गेहुंआ रंग, लम्बे-घने काले केश, कमर में नीचे तक लटकते हुए, कोई बनाव श्रृंगार नहीं। कुछ पल मैं उसे देखता रहा। जब हमारी नजरें आपस में मिलीं तो वह नजरें झुकाकर पुनः अपने काम में व्यस्त हो गई और मैं अपना ध्यान किताब में केन्द्रित करने लगा। लेकिन रह-रह कर नजर उस लड़की को देखने के लिए छत पर चली जाती और वह भी कभी-कभी मुझे देख लेती।

उसके बाद मैं जब भी पढने के लिए छत पर जाता तो मैं उसे पहले ही वहां मौजूद पाता। हमारा एक दूसरे को देखना, आंखों ही आंखों में एक दूसरे को जानना बहुत अच्छा लगने लगा। एक साल बीत गया। इतने लम्बे समय में मैं उसका नाम तक न जान पाया था। बड़ा साहस कर एक बार मैंने उसका नाम पूछा था। किन्तु उसने नहीं बताया।

एक दिन कालेज से लौटते समय मैंने चोरी से बस में उसके हाथों में थमी किताब पर उसका नाम पढ़ लिया-अनिता। फिर वह नाम मेरी हर साँस पर गुद गया। मेरी किताबों पर, डायरी पर

यहां तक कि कालेज के डेस्कों पर यह नाम बिखर गया। ऐसा लगता था कि दूर-दूर रहकर भी हम एक दूसरे के बहुत करीब थे। मगर किस्मत को कुछ और ही मन्जूर था।

वह क्षण मेरी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण क्षण था। मैं एक बार कालेज से लौट रहा था। रास्ते में मेरे पड़ोस की दोस्त प्रीति मिल गई। प्रीति एक समझदार लड़की थी। खुलकर बातें करना उसका स्वभाव था। वह हँस-हँसकर मेरे हाल चाल पूछने लगी और हम पैदल ही बस स्टेंड की तरफ बढ़ने लगे। थोड़ी दूर चलने पर ही सामने से अनिता आती दिखाई पड़ी। उसने मुझे प्रीति के साथ देखकर नजरें झुका ली और तेजी से आगे बढ़ गई। शायद उसने मुझे प्रीति के साथ देखकर कुछ और समझ लिया था। मैं अनिता को रोक उसकी गलतफहमी को दूर करना चाहता था। पर वह तेजी से मेरी ओर बिना ध्यान दिए आगे निकल गई। अनिता के चेहरे के बनते भाव बता रहे थे कि प्रीति के साथ मुझे देखकर वह खुश नहीं थी। रोज की तरह जब मैं उस दिन छत पर पहुंचा तो वह वहां नहीं थी। काफी समय तक उसका इन्तजार करता रहा। लेकिन वह नहीं आई। उसके इन्तजार में पूरा महीना बीत चुका। लेकिन वह कभी छत पर नहीं आई। इस एक महीने के अन्दर मैंने कालेज से आते जाते कई बार उसकी गलतफहमी को दूर करना चाहा पर उससे कुछ भी कहने की हिम्मत न जुटा सका। तभी बस स्टाप पर रुकी और मैं एक झटके के साथ अतीत से वर्तमान में पहुंच गया।

उसे सामने देखकर मैंने सोच लिया कि आज उससे उसकी बेरुखी का सबब पूछ लूंगा।

—अनिता ! —मेरे होंठ कांपे।

वह नहीं बोली। केवल एक निगाह से मुझे देखा और फिर बस की खिड़की से बाहर के दृश्य देखने लगी। बस अपनी रफ्तार से चली जा रही थी।

—अनिता ! क्या मुझसे ··· ··· कोई गलती ··· ··· मुझे क्षमा कर दो।

वह फिर भी नहीं बोली।

—कुछ तो बोलो प्लीज़।

उसने मुझे फिर देखा। मैंने गौर से देखा—अनिता की आंखों में कोई करुण पीड़ा उभर आयी थी। वह बोली—मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहती। मुझे मजबूर न करो।

—नहीं अनिता ···

—बस कुछ नहीं।

बस रुकते ही अनिता उतर पड़ी। और मैं सफर में अकेला रह गया। मैं आज तक नहीं समझ पाया कि वह क्या था ? मेरा प्यार या अनिता का ईर्ष्या भाव या हम दोनों के जीवन का कोई महत्वहीन क्षण ?

राका - 1984-85

संस्कृत विभाग

सम्पादक
डा० राम सुरेश पांडेय
(संस्कृत विभाग)

छात्र सम्पादक
महेन्द्र भट्ट

विषय-सूची

१.	संस्कृत भाषाया महत्वम्	माया देवी डोगरा	१
२.	व्याकरणं सर्वशस्त्रोपकारकम्	डा० राम सुरेश पाण्डेय	३
३.	महात्मा गान्धी	डा० सुरेन्द्र नारायण त्रिपाठी	६
४.	हास्यकरण:	सोहन सिंह रावत	७
५.	राष्ट्रियता	डा० सुरेन्द्र नारायण त्रिपाठी	८
६.	वर्तमान शिक्षा प्रणाली	कु० सुनीता राय	९
७.	संस्कृत वाणी	डा० सुरेन्द्र नारायण त्रिपाठी	१०

संस्कृत भाषाया महत्त्वम्

मायादेवी डोगरा
बी०ए० पास (द्वितीय वर्ष)

'भाषासु रम्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती'

संस्कृत-भाषा विश्वस्य एका विमला भाषा अस्ति। इयं हि विश्वस्य प्राचीनतमासु भाषासु परिगण्यते। इयं सुरवाणी देववाणी, देवभाषा, सुरभारती आदि नामभिः ख्याता अस्ति।

इयं भाषा अनेकैः अलोकिकैः गुणैरुपेता विद्यते। अस्या शब्दकोषः सुविशालः अस्ति। एकस्मै पदार्थाय अस्यां भाषायाम् अनेके शब्दा उपलभ्यन्ते। भावाभिव्यक्तौ इयम् अस्ति समर्था भाषा। इयं हि भाषा – संसारस्य अधिकांश भाषा–वर्गस्य पोषिका भारतीयानां भाषाणां च जननी।

अस्यां भाषायां सुविशालं साहित्यम् उपलभ्यते। तत्तु संस्कृतसाहित्यं द्विधा विभक्तम्- वैदिकम्, लौकिकम् च। वैदिके साहित्ये ऋग्वेदः यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः इति चत्वारो वेदाः सन्ति मुख्याः प्रत्येकस्य वेदस्य एकः उपवेदः अस्ति ततश्च प्रत्येकस्य वेदस्य ब्राह्मणारण्यकोपनिषद्वेदांग सूत्रप्रातिशाख्यग्रन्थाः पृथक्पृथग् विद्यन्ते।

संस्कृत भाषायाः आध्यात्मिके साहित्ये उपनिषदः प्रख्याताः। वैदिकी वाक् निगम नाम्ना प्रसिद्धा। तदुपरि आधृतानि शास्त्राणि "आगम" पदेनोच्यन्ते।

वैदिकस्थ साहित्यस्य अध्ययने शिक्षा, कल्पो, व्याकरणम् निरूक्तम् छन्दः ज्योतिषम् च एतानि षड् अङ्गानि सहायकानि।

आचार-विचार-नियमाः समाजरचना-व्यवस्थाः च स्मृति ग्रन्थेषुविद्यन्ते। तत्र मनुस्मृति र्याज्ञवल्क्य स्मृतिश्च प्रसिद्धौ ग्रन्थौ। मानवधर्मस्य आधारशिला मनुस्मृतिः एव अस्ति।

ततो अष्ठादश– पुराणानिचयेषु भारतस्य सम्पूर्णाः पुराणकथाः इतिहासाश्च विद्यन्ते।

लौकिकेषु काव्येषु वेदव्यास - निर्मितम् महाभारतम् पन्चमो वेदः कथ्यते। महाभारतम् इतिहास–काव्यमस्ति। अपरम् इतिहासकाव्यं बाल्मीकेः रामायणम् अस्ति। काव्यप्रधान्यात्तत्तु आदिकाव्यस्य संज्ञां लभते।

संकृस्तस्य काव्य शास्त्रम् अपि विशालं विद्यते । संस्कृत साहित्यस्य गौरवं वणनातीतं विद्यते । भारतस्य षड्दर्शनम्, इतिहासः पुराणम्, वैद्यकम्, ज्योतिषम्, रतिशास्त्रम् गणितशास्त्रम् नीतिशास्त्रं च संस्कृत भाषायामेव विद्यन्ते । संस्कृतभाषाया ज्ञानमन्तरा न कोऽपि भारतीयो भारतीयो भवितुम्, अर्हति । वैदेशिका अपिविद्वांसः संस्कृत - भाषां पठित्वा तस्याः साहित्यम् अधीत्य चकिता भवन्ति । भाषा विज्ञान पण्डिताः संस्कृत भाषायाः अध्ययनं परमावश्यम् आमनन्त । इदानीं हिन्दी भारतस्य राष्ट्रभाषा । इयं संस्कृत भाषायाः पुत्री अस्याः अध्यायनाय संस्कृत-भाषायाः अध्ययनं परमावश्यकम् । अतः सर्वैः अपि भारतीयः संस्कृतभाषा अवश्यमेव पठितव्या । आत्मनोऽतीत गौरवमधिगम्यैव कश्चन गौरवान्वितो भवितुं शक्ष्यति । तदधिगन्तुं च संस्कृतादन्यो नास्ति कश्चनोपायः । अयमेवास्ति खेदकरो विषयो यदद्य शिक्षा केवल जीविकायै भवति । अतः जोविकोपयोगिनो वाणिज्यादि बिषया एवाधुना प्रधानीभूत्वाधीय ते । भारत सर्वकारस्यैतद् दायित्वमस्ति यत्सर्वकारसेवासु संस्कृतज्ञानस्याहतां कुयार्त् स । फलतः संस्कृतमपि जीविकायं कल्पिष्यते सर्वे साद मधीयुश्च । तत् एव संस्कृतं स्वीयमतीतं महिमानं लोकप्रियतां चानायासेनैवापत्स्यतेऽसंशयमनुपदम् । आशासे यन्मदीयेयमाशावश्यमेव सफला भविष्यति ।

व्याकरणं सर्वशास्त्रोपकारकम्

रामसुरेशः पाण्डेयः
एम०ए०पी०एच०डी०

संस्कृतव्याकरणं वैज्ञानिकमस्ति। एवं विधं वैज्ञानिकं व्याकरणमन्यत्र क्वचनाऽपि न विद्यते। उपलब्धग्रन्थामां सूचीत एव तथ्यमेतद् निश्चप्रचं सिध्यति। नामावशेषवैयाकरणविदुषां सूची तु गरीयस्यस्ति। न केवलं मात्रया गुणतोऽपि संस्कृतव्याकरणग्रन्थसम्पत्तिराधुनिकान् भाषाविदो विस्मापयति स्पृहयालूंश्च विधत्तेऽसंशयम्।

वेदराशिरक्षार्थमेव व्याकरणं प्रादुरभूत्। ब्राह्मणग्रन्थेषु शिक्षा–कल्प-व्याकरण-निरुक्त-छन्दोज्योतिषां वेदांगनां यथासन्दर्भं विमर्शो वरीवर्ति। अनन्तरन्तानि वेदांगानि सूत्रग्रन्थरूपेण पृथगस्तित्वमाश्नुवंत, तेषु च व्याकरणं मूर्धन्यस्थानमर्हति। यथोक्तं वाक्यपदीये भर्तृहरिणा प्रथमं छन्दसामंगमाहुर्व्याकरणं बुधा इति (वाक्यपदीयम् १/११)। अतो वेदांगभूतं व्याकरणशास्त्रं नितरां पुरातनमस्तीत्यत्र नास्ति कश्चन विवादः। वेदार्थप्रतिपत्तये व्याकरणानुशीलनमनिवार्यतया-पेक्षितमित्यनुचिन्त्यैव महाभाष्यकारः पतन्जलिराह 'व्याकरणस्य चेदमन्वर्थं नाम शब्दानुशासनमिति शब्दं च ब्रह्मरूपेणाम्युपगच्छतान्यत्रावादि तेनैवम् 'सोऽयमक्षरसमाम्नायो वाक्यसमाम्नायः पुष्पितः फलितश्चन्द्रतारकवत् प्रतिमण्डितो वेदि व्यो ब्रह्मराशिः, सर्ववेदपुण्यफलावाप्तिश्चास्य ज्ञाने भवति।' आशयमेतमुररीकुर्वन् भर्तृहरिरुक्तवान्—

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दरूपं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥
अव्याहतकलां यस्य कालशक्तिमुपाश्रिताः।
जन्मादयो विकाराः षड् भावभेदस्य योनयः॥
स्मृतयो बहुरूपाश्च दृष्टादृष्ट प्रयोजनात्।
तमेवाश्रित्य लिंगेभ्यो वेदविद्भिः प्रकल्पिताः॥
आसन्नं ब्रह्मणस्तस्य तपसामुत्तमं तपः।
प्रथमं छन्दसामङ्गं प्राहुर्व्याकरणं बुधाः॥
प्राप्तरूपविभागाया यो वाचः परमो रसः॥

यत्तत्पुण्यतमं ज्योतिस्तस्य मार्गोऽयमाञ्जसः ।।
अर्थप्रवृत्तितत्त्वानां शब्दा एव निबन्धनम् ।
तत्त्वावबोधः शब्दानां नास्ति व्याकरणादृते ।।
तद्द्वारमपवर्गस्य वाङ्मलानां चिकित्सितम् ।
पवित्रं सर्वविद्यानामधिविद्यं प्रकाशते ।।
इदमाद्यं पदस्थानं सिद्धिसोपानपर्वणाम् ।

इयं सा मोक्षमाणानामजिह्मा राजपद्धतिः ।।—वाक्यपदीयब्रह्मकाण्डम् । पतन्जलिनिर्दिष्टा रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः व्याकरणाध्ययन-हेतवोऽत्र व्यक्ता विभान्ति । आस्मिंश्च श्लोकनिचये व्याकरणं शब्दब्रह्मणः आसन्नं तपसामुत्तमं तपः, आन्जसं मार्गं, सिद्धिसोपानपर्वणामाद्यं पदस्थान निगदितम् । यत्सत्यं शब्दब्रह्मसाक्षात्काराय व्याकरणादन्यो लघूपायो नास्ति । शब्दतत्त्वावबोधः नास्ति व्याकरणाद्विना । वाङ्मलापसारणायालमेतच्छास्त्रं सर्वविद्यानां पूतत्वादधिविद्यं चकास्ति एतद्वि वक्तारमपभाषणादसंशयं रक्षति, ऊहागमविज्ञं विधत्ते, पदप्रयोगे निर्विशंकं च करोति अतोऽस्यानुशोलनाद् वाचस्पतित्वसुभाषणशिष्टाचारभाषाज्ञानानि चान्जसैव जायन्ते । व्याकरणमधीत्य शब्दप्रवृत्तितत्त्वज्ञो ब्रह्मामृतमश्नुते । शब्दबोधाय व्याकरणमेव कल्पतेऽतएव शब्दशाक्षात्कारस्य करणं साधकतमं कारणमुपायो वास्ति । उपादायापि ये हेयास्तानुपायान् प्रचक्षते इति वाक्यपदीय वचनात् प्रकटीभवति यच्छब्दप्रतिप्रत्तेः पश्चाद् व्याकरणं तदुपायत्वात्त्यज्यते । अर्थादाशब्दप्रतिपत्त्येवाध्येयं व्याकरणम् । शब्दानुशासनं व्याकरणं शब्दानां लोकनिबंधनत्वादकृतकं शास्त्रं साधुत्वबिषया स्मृयिश्चोक्तं वाक्यपदीये । लोकतोऽर्थप्रयुक्ते शब्दे शास्त्रेण धर्मनियमः इति पतन्जलिवचन मुपजीवति भर्तृहरिरत्र । भाष्यभणितिमेतामुपजीव्यैव पदप्रयोगाध्वनि लोकस्य महतो महीयान्सं महिमानुपश्लोकयन्नेवमाह श्री हर्षः

भक्तुं प्रभुव्याकरणस्य दर्पं, पदप्रयोगाध्वनि लोक एषः ।
शशो यदस्यास्ति शशी ततोऽयमेवं मृगोऽस्यास्ति मृगीति नोक्तः ।।
नैषधीयचरितम् २२/८२

लक्ष्यमुद्दिश्यलक्षणप्रवृत्तेः प्रयोगमूलं व्याकरणमस्ति । वैयाकरणः पदस्य साधुत्बमसाधुत्वं वा निस्चिनोति । शब्दान् न निर्मिमीते । प्रातिशाख्यनिरुक्ताष्टाध्यायिमहाभाष्यवार्त्तिककाशिकासिद्धान्तकौमुदीप्रभृतयो व्याकरणग्रन्था व्याकरणस्य साधुत्वविषयत्वमेव स्वीकुर्वन्ति यतस्तेषु लोकप्रयुक्तविविधप्रयोगसिसाधयिषया मतान्तराणि निर्दिष्टानि दरीदृश्यन्ते प्रतिशारव्यपाणिन्योः सन्धि कालीनो यास्कः शाकटायनशाकपूणिशाकल्य-शतबलाक्ष — वार्ष्यायणि कौत्स-क्रौष्टुकि-कात्थक्य-गार्ग्य-गालव-मनु-आग्रयण-औदुम्बरायण-और्णवाभा-दीनां मतानि यथासन्दर्भं प्रस्तावयामास । तत्परवर्ती पाणिनिः नामान्याख्यातजानीति यास्कशाकटायनसमयमुररीचकार आचचक्षे चार्थस्य लोकायत्तत्वमतो निर्दिदेश चोदीच्यप्राच्यव्याकरणसम्प्रदायौ रफोटायन-सेनक-शाकल्य शाकटायन-काश्यप-गार्ग्यगालव-आपिशलि भारद्वाजानामार्चाणां च नामानि प्रसंगमनुरुन्ध्य एभिनिर्देशैर्व्याकरणस्य लोक-निवन्धनत्व साधुत्वविषयत्वं सम्प्रतिपत्तिप्रयुक्तस्मृति-शास्त्रत्वमकृतकशास्त्रत्वं च निर्विवादतः सिध्यति ।

पाणिनेश्चतुस्सहस्रसूत्रमय्यष्टाध्यायी तत्पूर्वोत्तरवर्तिनो व्याकरणग्रन्थानतिशय्य शोभतेतमां यतोऽष्टाध्यायी लौकिकं वैदिकं च प्रयोगं व्युत्पादयति सर्वंकषत्वान्नोपमानं विद्यतेऽस्याः । महाभाष्य-

कारः पाणिनेर्गौरवातिशयं समादरेण प्रदर्शन् जगादेवम् 'प्रमाणभूत आचार्यो दर्भपवित्रपाणिः शुचाववकाशे प्राङ्मुख उपविश्य महता प्रयत्नेन सूत्राणि प्रणयतिस्म। तत्राशक्यं वर्णेनार्थप्यनकेन भवितुम् पुनरप्याह 'सामर्थ्ययोगान्नहि किन्चिदस्मिन् पश्यामि शास्त्रे यदनर्थकं स्यात्। (महाभाष्यम् १/१/१, ६/१/७७) 'उदक्चविपाशः' (अ ४/२/७४) इति सूत्रस्य वृत्तौ जयादित्यो व्याजहार 'महती सूक्ष्मेक्षिका वर्तते सूत्रकारस्य। चीन यात्री ह्यूनसांगोऽष्टाध्याय्यां पदज्ञानस्येयत्तामममन्यत। मोनियर-विलियम-टी शेरवात्सकीहन्टरप्रभृतयः पाश्चात्यविपश्चितोऽष्टाध्यायीं मानवमनीषायाः सर्वश्रेष्ठां रचनां स्वोचक्रुः। वार्त्तिकमहाभाष्याम्यामष्टाध्याय्याः स्वरूपं सुरक्षितं सुसंस्कृतमुद्भाषितमभिव्याकं च व्यधायि। अत एवात्र मुनीनामुत्तरोत्तरप्रामाण्यमभ्युपगतम्। एवं त्रिमुनिव्याकरणं संस्कृतबाङ्मयेऽधिकाराय सरलतममं मार्गमस्ति। शक्ति-ग्रहे व्याकरणमेव वाग्व्युपादनक्षमत्वादादिमनिमित्त-मान्नातंतद्यथा।

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोषाप्त वाक्याव्द्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः॥

आपाततोऽस्यां वाचि हेत्वष्टकमुपन्यस्तमन्ततस्तु द्वावेव हेतू संकेतग्रहस्यात्र दृश्येते। अवापो-द्वापरूपो लोकव्यवहारो व्याकरणं च। अनयोरपि शक्तेर्लोकप्रामाण्यत्वमभ्युपजगाम पाणिनःअ १,२,५६ लोकप्रयुक्तपदानि त्वधिगन्तुं व्याकरणादन्यः पन्या नैव विद्यते। अतः शक्तिग्रहनिमित्तोप्वस्त्येवास्य प्राथम्यम्। तदेतद् वैज्ञानिकं सुविमृष्टं न्यूनातिरिक्तदोषरहितं सुव्यवस्थितं च व्याकरणं सरलीकर्तुं मुचैव प्रयासा विधीयन्ते। कतिपयकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितमेतद्धि नो मनस्सु नरीनृत्यन्तीं व्याकरणकाठिन्यचिन्तामह्नायापसार्यापारे शब्दसंसारे प्रवेशयितुमलमस्त्यत्र नो मनागपि विवादः।

अष्टाध्याय्यां सूत्रार्थमनिवार्यतयापेक्षितान् संज्ञानुबन्धप्रत्याहारान् व्याख्याय वाक्यघटकानां व्यवस्थितं वैज्ञानिकं च विश्लेषणं व्यधायि मुनिना। नामाख्यातनिपाता वाक्यघटकत्वेनाङ्गीकृता अत्र वाक्यधारणाद्धातुरित्यन्वर्थनाम्नो धातोः प्रामुख्यमुररीकृत्यैव तस्य सेडनिडात्मनेपदपरस्मैपप्रभेदाः प्रथमतो विमृष्टाः। धातोर्भोभूयमानान् लकारविकरणधात्वादेशलादेशकृत्तिङ् प्रत्ययांश्च प्रथमेषु त्रिष्वध्यायेषु व्याचचक्ष पाणिनः। अत्रैव क्रियान्वयिकारकविभक्तयस्तदाश्रिताः समासैकशेषवृत्तयः विस्तरशो व्याख्याताः तदनन्तरं नामान्याख्यातजानीति समयमनुसृत्य चतुर्थपन्चमाध्याययोर्नाम्नो जायमानान् सुपस्त्रीतद्धितप्रत्ययान् व्यमृशत्। सन्धिप्रकरणं विहाय सर्वाणि प्रकरणानि यथास्थान-मुपनिबद्धानि विद्यन्तेऽष्टाध्याय्याम्। संज्ञानुबन्धप्रत्याहारधातुपाठगणपाठानुवृत्तिप्रभृतिभि-रुपकरणैरनल्पार्थमल्पग्रन्थं प्रणिनीषया सन्धिप्रकरणं प्रायोऽध्यायद्वयव्यवहितमुपस्थापितमस्ति। यतः संन्धिरेकपदे, धातूपसर्गयोः समासे च नित्योऽनिवार्यो वा वाक्ये तु वक्तृविवक्षापेक्षी भवति। वाक्य मीमांसामय्यामष्टाध्याय्यां नामाख्यातनिपातपदजातं सुसंश्लिष्टतया व्याख्यातं वर्तते। अव्युत्पन्नानि प्रातिपदिकानि व्युत्पादयितुमुणादिसूत्राणि विधाय भाषाविज्ञानं भृशमुपकृतवान् पाणिनिरिति सर्वैः सादरमङ्गीक्रियते धातुपाठगणपाठोणादीनां कर्तृत्वमधिकृत्व विपश्चितो भवेयु र्नाम विप्रतिपन्नाः किन्त्वत्रप्रयुक्ता विविधसंज्ञानुबन्धाः प्राणिनिमेवैतेषां कर्तारं निश्चप्रचं निश्चाययन्ति अत एव पाणिनीयं व्याकरणं सुसंश्लिष्टं साधिष्ठञ्चास्ति। निखिलनिगमागमविज्ञानाय व्याकरणा-दन्यो मार्गो नास्ति। इदससंशयं सर्वशास्त्रोपकारकमस्ति।

महात्मा गान्धी

डा० सुरेन्द्र नारायण त्रिपाठी

यो मातृभूमिं पर तन्त्रतां गताम्
तिरस्कृतां कूटविदेशशासकैः
व्यमोचयत् सत्यमथं समाश्रितः
महात्मगान्धिरिति नात्र संशयः
स्वदेशमुक्त्यै हि विदेशशासनात्
पुनः पुनः वन्दिग्रहमुपागतः
स्वदेशपीडां परिहर्तुमाशुकम्
स्वयं च कारागृहमाचकांक्ष
जनस्य दारिद्र्यविनाशनाय
दरिद्रनारायणभावमागतः
सुवाससा चान्नकणैरुपेयात्
जनो महात्मा स, सदा, व्यचिन्तयत्
दण्डं गृहीत्वा प्रचलन् हि गान्धी
सुसाधुधर्मोऽपि न कषायधारी
कृशोऽति तन्वा मनसा बलान्वितः
क्रतुम् न कृत्वापि, क्रतुभाक् स्वभावतः
अगाच्चं नित्यं सुसंमां सुमज्ञ काम्
सबिश्वधर्मं सकलं समाश्रयन्
न धर्मभेदे विमलां मतिं दधौ
परापरेषां गणना कलनात्पृथक्
धरां समग्रां स्व कुटुम्बभावतः
मेने महात्म प्रवरोमनस्वी
गीतानुरक्तः समदर्शितां गतः
स गान्धिवणः ऋषिकल्पमासीत्
अहिंसनात्सत्यसमाश्रयाच्च,
ततारविघ्नाम्बुधि दुर्गमारात्
नभीतिलेशं हि कदापि चाप्तवान्

हास्यकरणः

सोहन सिंह रावत
बी०ए० राजनैतिक विज्ञान (विशेष)

१. शिक्षक : कथय, नीलाम्बर, चन्द्रो दूरे वर्तते चीन देशो वा ?
नीलाम्वर : चीन देशः ।
शिक्षक : चीनस्य दूरता कथं त्वया ज्ञाता ?
नीलाम्बर : यतश्चन्द्रं प्रतिदिनं द्रष्टुं प्रभवामः किन्तु चीनस्तु न कदापि दृश्यते ।

२. बालः : पिता ? आगरा कुत्र अस्ति ?
पिता : पुत्र ! स्वामातरं पृच्छ, सा एव वस्तूनि व्यवस्थितानि करोति ।

३. अध्यापक : वारनस्य केशाः किमर्थम् अति दीर्घाः भवन्ति
छात्र : महोदय, यतो जंगले न नापितः अतः तस्य केशाः दीर्घा भवन्ति ।

४. अध्यापिका : स्वर्गम् अति स्मणीयं स्थानमस्ति । काः काश्छात्रा गन्तुं वाञ्छन्ति ।
(सर्वाः छात्रा स्वीकुवन्ति, परमेका न स्त्रीकरोति)
अध्यापिका : त्वं कस्मात् कारणात् न गमिष्यसि ?
छात्रा : मम माता अवदद् - सदैव विद्यालयाम् गृहम् आगच्छ अन्यत्रापि गन्तुं यदि इच्छसि, तव पादौ त्रोय्यामि ।

५. अध्यापक : (भूगोल कक्षायाम्) भो ! उमेश ! हिमालयः क्वास्ति ?
उमेश : गुरुदेव ! अत्र कक्षायां स न विद्यते !
अध्यापक : अश्विनी भरणी इत्यादीनि नक्षत्राणि कुत्र तिष्ठन्ति ?
महेश : तानि तु पञ्चाङ्गेषु तिष्ठन्ति ।
कमपि जनमनुधावन्तं वीक्ष्य तं कश्चनापृच्छत्
प्राश्निक : भोः किमर्थं भवान् शिरसि पादौ निधाय तमनुधावति ?
औत्तरिक : असौ मां स्वीयां रचनां श्रावयित्वा मदीयां कवितां श्रोतुं नेच्छति । अतः कविसम्मेलनात्पलायितः । अमुमात्मी यां कवितां श्रावयित्वैव प्रत्यावर्तिष्ये ।
प्राश्निक : का विपद्पतिष्यति भवति ययातङ्कितो भवान् । भवदीयं काव्यं न श्रोतुमिच्छत्यसौ न शृणोतु ।
औत्तरिक : एष एव कवि मानवयोर्महान् भेदः । मानवः शृणोति श्रावत्यपि, कविः श्रावत्येव । अहोध्वनिरहो पदविन्यास इति व्यावहरन्तः कविसम्मेलने परस्परं भावयन्तः करयः श्रेयः परमश्नुवते ।

राष्ट्रियता

डा० सुरेन्द्र नारायण त्रिपाठी

देशसेवा देशभक्तिः देशबन्धुत्वपोषिका
देशस्वातन्त्र्यकल्याणदेशसौरव्यप्रवर्धिका
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
ज्ञात्वेदं च फलं त्यक्त्वा तयोः सेवां समाचरेत्
समस्तदेशस्नेहैक्यं, लोकतन्त्रविराजितम्
राष्ट्रियता समुत्कृष्टा देशोत्कर्षविधायिका
नागराः सत्यसनिष्ठा धैर्यत्यागविचक्षणा
परोपकारता वीरा समुद्योगपरायणा
नित्यं कार्यरता लोके, उत्साहशीलतत्पराः
संपुष्यन्ति राष्ट्रियतां मानवत्वसमाश्रिता
नागरा ज्ञानसम्पन्ना विरोधैश्चापराजिता
उत्साहधैर्यसंयुक्ता वर्धयन्ति सुगौरवम्
राष्ट्रिका राष्ट्रसम्पत्तिरिति विद्वदभिरुच्यते
एषामभ्युदयो यत्र राष्ट्रोन्नतिर्भवेदधुवम्
सद्वृत्तः सज्जनश्चारुः विक्रान्तः साहसी तथा
उदात्तभावसम्पन्ना नागरा मतिमतां वरा
एषामेव प्रभावेण, देशोन्नतिर्हि जायते
सर्वत्र सम्मानं च, देशस्य भवति ध्रुवम्
स्वयं च पूजिताः लोके, देशं सम्पूजयन्ति च
शिरः समुन्नतं कर्तुं नागरिका न संशयः
आध्यात्मिकी धार्मिकीच,भौतिकी भौमिकी तथा
सांस्कृतिकी भवेद्वापि, उन्नति र्नवसंशयः
अतो वं युवकैर्लोके, स्वंचरित्रम् निरक्ष्यताम्
वैधानिकी लौकिकी च, स्थितिश्चापि विचिन्त्यताम्
राष्ट्रियता ध्रुवं लोके सर्वकार्यप्रसाधिका
तत्प्राप्त्यै च प्रयत्नोऽपि ध्रुवं सर्वैः प्रवर्त्यताम्

—•—

वर्तमाना शिक्षा प्रणाली

कु० सुनीता राय
बी० ए० (तृतीय वर्ष)

शिक्षया हि मनुष्यस्य आन्तरिकाः तिरोहिता गुणाः तथा प्रकटी भवन्ति यथा सौवर्णभूषणं दाहादिभिः संस्कारैः उज्ज्वलं रुपं लभते। परमेतत्कालीना शिक्षा प्रणाली न भारतीयसंस्कृत्यनुरुपा। एषा खलु अस्माकं पूर्वशासकैः आङ्ग्लदेशीयैः शासन-सुविधा-हेतवे लिपिकादीनां नियोजनाय प्रचालिता। एवं सत्यपि केचित् स्वधीबलेन विविधासु विद्यासु पारंगतास्ते उन्नतपदान् लेभिरे ते प्रशंसार्हाः। बालकस्य महत्तरः कालः विदेशीयाया आङ्ग्ल भाषाया अध्ययने एव याति, अतः सोऽन्यान्यविषयाणां तत्त्वानि ज्ञातुं न शक्नोति।

पुरा बालका गुरुकुलेषु प्रवेशिता आयुषः प्रञ्चविंशतिवर्षाणियावत् निश्शुल्कां विद्यामधीतवन्तः शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां तेषां नान्यत् विद्याप्रापणमन्तरा कर्तव्यमासीत्। आधुनिकेषु महाविद्यालयेषु धनसम्पन्ना एव केचन विद्यामधिगन्तुं शक्याः, यतः तेषु अतिधनव्ययो जायते। धनराशिं व्ययीकृत्यापि ते यदा कार्यक्षेत्रं प्रविशन्ति तदा लिपिकत्वमेव निर्वोढुं क्षमा भवन्ति। हा हन्त अद्यत्वे लिपिकपदमपि दुष्प्राप्यम्। तदर्थं विविधा ऋजुकुटिलप्रयासा अपक्ष्यन्ते अन्यच्च, अद्यत्वे बालकबालिकानां शिक्षा-प्रणाली अभिन्ना, यद्यपि तयोः कार्यक्षेत्राणि भिन्नानि। शासकीयविभागेषु कतिपयानि एव पदानि, परं शिक्षितानां संख्या प्रतिदिनं वर्धमाना। वर्तमान-शिक्षाप्रणाल्यनुसारं शिक्षिताश्छात्रा वृत्तिसाधन अप्राप्य निरुत्साहा जायन्ते, यतस्तेऽन्यव्यवसायान् कर्तुमक्षमाः। एतदेव कारणं यद् वर्तमाने शिक्षित-समुदायेऽवसादो वरीवर्ति। तेषां मनस्सु शासकान् प्रति विद्रोहभावना च उत्तरोत्तरं विवर्धते। स्वातन्त्र्याऽनन्तरमस्माकं प्रतिनिधिसर्वकार शिक्षाप्रणाल्याः संशोधनाय कृतोद्यमोऽस्ति वर्तमानः प्रधानमन्त्री श्रीमद्राजीवगान्धी कृतसंकल्पः प्रतीयते तच्चरितार्थयितुम्। शिक्षायां प्रधानत्वं निजभाषायाः, राष्ट्रभाषायाश्च भाव्यं यद्यपि आंग्ल-भाषापि उपेक्षां नार्हति। यस्य बालकस्त यादृशी प्रकृतिः भवेत् स बाल्यकालादेव तत्र प्रवर्तितव्यः। एवं वैज्ञानिकाः, व्यावसायिकाः, प्राध्यापकाः, राजनीतिकुशलाः, आयुर्वेदविशारदाः, अन्ये च तत्तत्कार्यक्षेत्रकुशला भवितुं शक्ष्यन्ति। शिक्षा व्यक्तित्वपरिष्काराय यथा कल्पतामस्यान्तया संशोधनं कार्यम्। राष्ट्रैक्यायैकमात्रक्षमा संस्कृत-भाषाऽवश्यं तत्र मूर्धन्यं स्थानं लभताम्।

संस्कृतवाणी

डा० सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी

गेहे गेहे गीर्वाणवाणी
गुञ्जायतु सुमनोज्ञा
नित्यं हन्तु सकलदुरितौघम्,
पुराणचयोपनिबद्धा
भासादिमहाकविभासितरूचिरा
नाटकचक्रसमृद्ध ।
कालिदासकविवरशतपूजित
प्रचुरकाव्यरमणीया
गेहे गेहे गीर्वाणवाणी
गुञ्जायतु सुमनोज्ञा
नाटकसंघसरसपरिचेया
कथान्याससमुपेता
व्यासादिकमुनिचर्चितचर्चा
भूतलस्वर्गसमृद्धा
विक्रमभोज सुसेवित गात्रा
माघवाणसचालितयात्रा
पूजितयोग्यचरित्रा
गेहे गेहे गीर्वाणवाणी
गुञ्जायतु सुमनोज्ञा

—०—

STUDENTS UNION

84-85

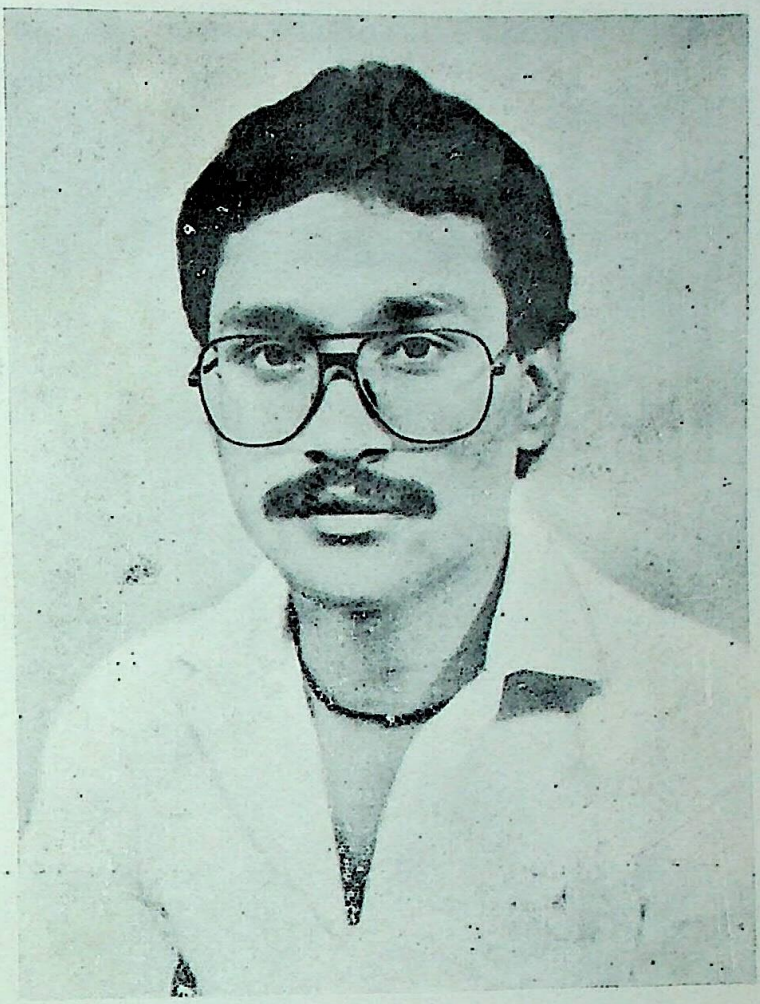

MANOJ MADAN
President

ARUN GAUR
Secretary

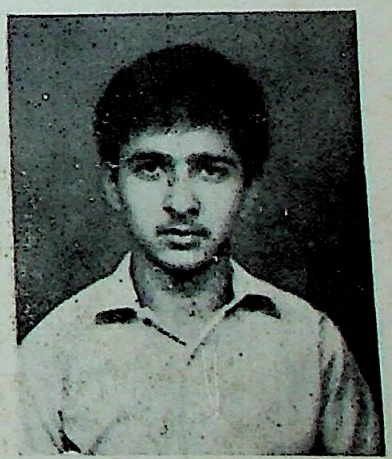

SANDEEP CHATRATH
Joint Secretary

SHER SINGH
C. C.

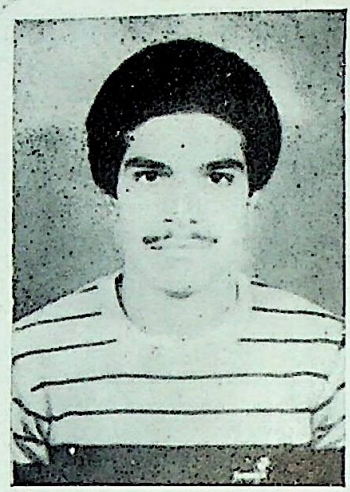

ASHWANI KUMAR
C. C.

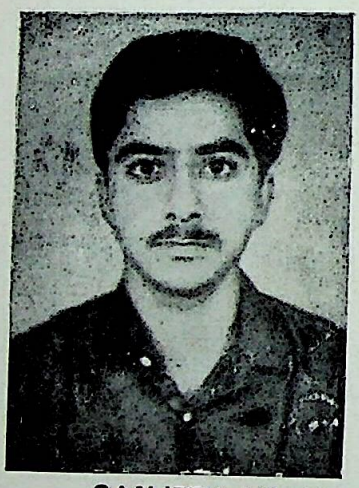

SANJEEV ANAND
Student Cul ural Secretary

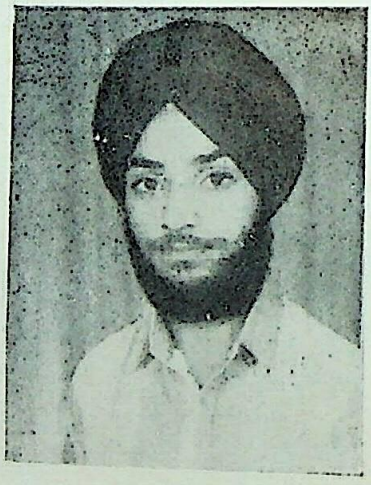

SARABJIT SINGH
Best NCC (Army) Cadet at R.D. Camp

STUDENT EDITORS

AKHIL ANOOP
Hindi

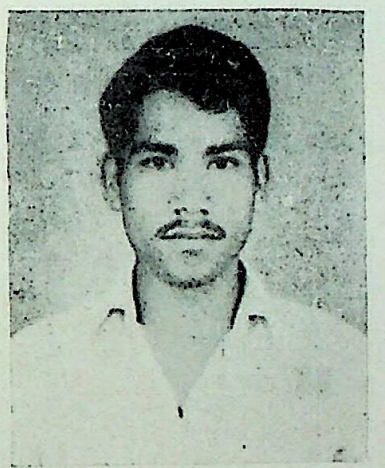

RAMESH KUMAR
Hindi

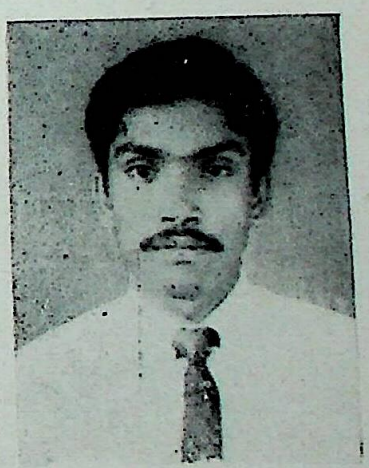

SANJAY AGGARWAL
English

SPORTS
84-85

VINOD KUMAR
Best Athlete 1984

SUNITA RAI
Best Athlete 1984-85

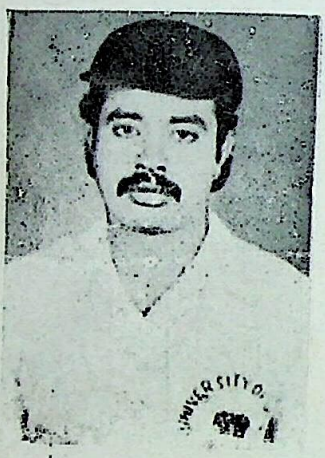

VINOD SEHRAWAT
Rep. Delhi University in Cricket
& College Captain

DEVINDER SINGH BISHT
Inter College W/L 1st Position
Rep. Delhi University 84-85

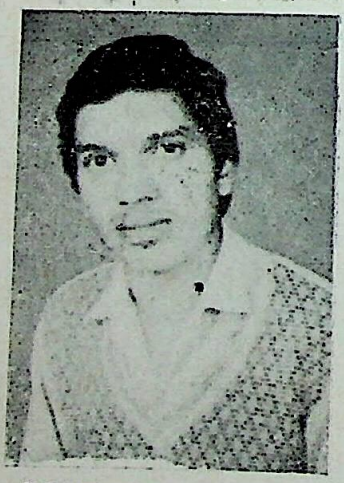

ROHTAS SHOKEEN
3rd Position in Hammer throw in Inter College

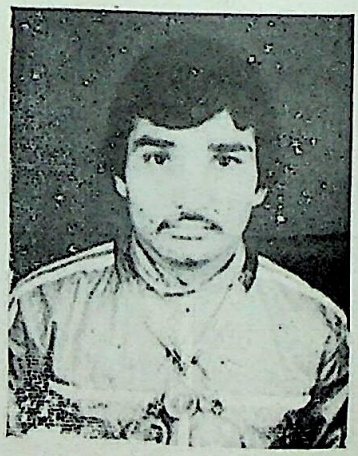

UMESH KUMAR
Ali India Judo Champian Black Belt-84

RAKA-1984-85

ENGLISH SECTION

Editors
R. S. G. RAO
ANIL BHATT
(Dept. of English)

Student Editor
SANJAY AGGARWAL
B.Com. (H) IInd yr.

Contents

1.	A Love Letter	Sury Prakash Kwatia	3
2.	The Challanging Opportunities In Indian Navy	Ajay Kumar Dhaka	4
3.	Laughter, The Spice of Life	Jitender Narang	5
4.	Influence of Western Culture On Indian Youth	Harpal Singh	6
5.	Daldal	Atul Agnihotri	7
6.	My Idea of A Happy Life	Bharat Bhushan	9
7.	Practical Physics	K. D. Puri	10
8.	Science Quiz	Ram Verma	11
9.	YZARC Thinkings	Rajender Rana	12
10.	Strange But True	Narinder Kumar	13
11.	Please Help Laugling	Sunil Gupta	13
12.	This is Cricket	Ram Verma	14
13.	Religion A Nose Around Neck	Anand Sagar	15
14.	Laughing is The Best Medicine	Rajeev Arora	16
15.	Hey ! Let is Laugh	Ashish Jhingan	16
16.	Believe It Or Not	Sanjay Aggarwal	17
17.	Wanted SOs	Gautam & Rakesh	18
18.	Burning Hearts	Leena	19
19.	Knowing A Computer	Arvind Bajaj	20
20.	Mood ! Mood ! Mood !	Anil Alagh	21
21.	Dowry Preys Love	Narinder Gupta	22
22.	Youth And Age Will Never Agree	Vivek Arora	23
23.	The Shakes Pearen Romance	Sneh	24

A Love Letter

Surya Prakash Kwatra
B.Sc. IInd year

My dear sweet heart,

I love you to the power N times X where X is any positive integer like 1, 2, 3. 4, ... so on and N tends to infinity. You remember the first time we met, we were standing vertically on horizontal plane. You looked into my eyes and your line of eye sight made an angle of 20° 20″ with the horizontal plane.

Second time we met, you were standing on your balcony about 120 feet away from me with an angle of elevation equal to 40° 46″. You smiled at me setting my heart to simple harmonic motion. Your smile reached me in 2.22 seconds, taking the coofficient of smile to be 0.0006. Now you can collect its velocity neglecting air resistance.

Third times we met in park, you caught my hand in your hands. I got a pleasant electric shock, as the circuit was at least completed. Dear, whenever I looked at you I got rivetted on you. Sweet heart, my heart is pure distilled water. You can test by adding copper sulphate powder into it, it will surely turn blue. I hope you will forget me not.

Synthetically Yours :
Satallite of your heart.

The Challenging Opportunities in Inbian Navy

ANNUAL REPORT OF N.C.C. NAVAL WING

AJAY KUMAR DHAKA
B.Sc. (Gen.) 2nd yr.

The College N.C.C. has two companies.

1. INFANTRY and
2. NAVAL WING

Cadet Capt. D.S. Bisht is the senior cadet-in-command of Naval Wing and P. officer cadet Ajay Kumar Dhaka is second-in-command. The College N.C.C. Naval Wing comes under "1 Delhi Naval Unit" of N.C.C. which is located at Kashmere Gate. The Naval Unit offers vast opportunities for adventurous cadets. The main opportunities are such as mountaineering, scuba diving, ship modelling and several other camps at warships and Naval attachments for different purposes. The cadets who get 'B' & 'C' certificates from N.C.C Directorate can get permanent posts in Indian Navy and can start a challenging career in life. It offers compulsory physical training which is very essential especially for students.

Although the Rajdhani College N C.C. Naval Wing has a comparatively low strength in '1 Delhi Naval Unit', the college Naval cadets have always brought credit to their college. Cadet Capt. D. S. Bisht had participated in the Republic Day Camp last year and also in Republic Day Parade in N C C. Naval contingent and received the 'Best Cadet' award of the Unit. P. officer Cadet Narender Kumar participated in All India Trekking Camp at Goa and received the 'Best Group Cadet' award previous year. He had also cleared 'C' certtficate examination and now appeared for permanent commission in Indian Navy. P. officer Cadet Ajay Kumar Dhaka had received the Best Cadet' award in command and Turnout during 'All India Training Camp' this year. The other college cadets are also striving hard for their bright and challenging career in Indian Navy. The Naval Unit has special place for result-oriented persons. I hope that more and more college students will join the N.C.C. Naval Wing in the forthcoming years for their bright career as well as to popularise our college name and fulfil their duty to the motherland.

LAUGHTER, THE SPICE OF LIFE

Man is a laughing animal, Human beings have been endowed with this power of laughter which turns gloom into cheerfulness. Why don't people laugh ? Rather they cry that this world is full of woes and sorrows. They forget that our creater wanted us to be happy and blissful like Him.

Laughter is one of the greatest blessings confered by God upon mankind. It plays a vital role in human life and human relations. Indeed, we shudder to think what the world would have been without humour and laughter. And no wonder, when Fulton Sheen says, "Laughter is one of the gifts that sets man apart from animals."

Laughter is an expression of happiness and joy. He who has humour in life always seems to be in hilarious spirits. It gives pleasure not only to himself but to others also who participate in that and forget their worries and disgusts for some time A man with a sense of humour is welcome everywhere. It is rest to the weary, day-light to the discouraged, sunshine to the sad and nature's best antidote for troubles, yet it can't be begged, borrowed or stolen.

Dear friends, do make use of this gift given free at no cost by nature, whenever you find yourselves caught in a trap. Humour is good for health also. The sense of humour is the sign of a healthy mind and lack of the sense of humour is an indication of a diseased or morbid mind. It is said that beauty is power and humour, its award.

Remember that a smile costs nothing, yet it enriches those who receive it without impoverishing those who give. It makes the home happy, the school cheerful, the office gay. When you meet one who fails to smile, give one of your own, for, nobody needs a smile, so much as those who have none to give. Smile your way through life !

May you be happy and gay
And all your worries slip away !

JITENDER NARANG
B.Sc. (G) I.C. Ist yr.

Influence of Western Culture on Indian Youth

It is worthwhile to know the values of a culture but in order to know the Western culture, we have started adopting it. It is an added wisery to the cause of Indian culture and the preservation of its values.

Afterall our own cultural heritage is not less rich in content. It has a strict ethical code and with a story moral background. While trying to imitate the western culture, we forget our moral principles.

The influence of western culture on our youth reflects in a negative way. The present young generetion tries to copy the western culture blindly without realising what is good and what is bad for them. What we generally see in the name of western culture is a twisted or altered form of it. Youths in our society adopt only bad qualities of the western culture which are easy to put on and to continue with. Polishing one's face doesn't convey advancement, neither exposure of one's boby reflects westernization. Such exhibition is not worthy of being called a custom of western society.

In an attempt of imitation, we do many abnormal things. We listen to the western music and try to Indianise it in each and every manner and in doing so, we totally negate our classical music. People consider it as a shame and it is very fashionable to follow the westerns. In an even worst step, students become addicted to the dreadful dragon—drugs. Many students consume drugs just to achieve something new and higher. But in this mad fantasy, they become habitual and get reduced to it.

Indian people, especially the youths cannct escape the charge of disloyality towards Indian culture as they are the fore-runners in the race of adoption of western culture and are responsible for giving a back seat to Indian culture.

The attraction towards a foreign culture and dying patriotism are the signs of decay of Indian culture and these can lead to disastrous consequences if allowed to exist. We must replace them without losing any more time. This can be done by the import of ideas in a proper way and not just by imitation.

So, let us stop betraying our own culture and let us firmly decide that we will not be influenced by any other foreign sources and that we shall do our best for the prosperity of our own culture because progress does not mean westernization and westernization does not mean progress.

HARPAL SINGH
B.A. (H) English, IInd yr.

DALDAL

ATUL AGNIHOTRI
B.Sc. (Electronics) Ist yr.

DID YOU KNOW THAT . . . .

(a) ... ... the Psychiatry Ward of J.J. Hospital, Bombay, is equipped with 23 beds, and it actually houses between 50 to 60 patients ?

(b) ... ... 80-90% of the addicts who come to J.J. are on heroin ?

(c) ... ... in 1980, 188 patients were treated at the clinic at G. B. Pant Hospital, Delhi, in 1984, by August. 1550 addicts had registered for treatment ?

(d) ... ... till 1981 no heroin cases were registered at the clinic, and that 3 years later, they make up 68.50% of the total ?

(e) ... ... heroin is 200 times stronger than raw opium ?

(f) ... ... heroin's introduction in the Indian market had all the markings of a planned business strategy ? First, commonly used drugs mysteriously disappeared and became prohibitively expensive. Then, a new substitute (variously called "smack/brown sugar/power/sickness") came in at artificially lowered rates. Its highly addictive properties and easy availability did the rest. Soon heroin users were willing to pay 2-3 times the actual price to satisfy their craving.

(g) ... ... the Golden Crescent, comprising Afghanistan, Pakistan & Iran supply 85-90% of the heroin sold in New York ?

(h) ... ... the relatives who come to visit Afghan refugees in India are the main source of our drug inflow ?

(i) ... ... Thailand was initially just a conduit country for drug export (like India) today), but today of a population of 48 million, 300 000-500,000 are estimated to be drug addicts ?

(j) ... ... according to THE TIMES OF INDIA, almost every 2nd citizen of Varanasi is an opium addict ? .....Varanasi has 10 clandestine "kitchens" for processing

opium into crude heroin ? ... ... the takings from these "kitchens" total Rs. 1 lakh a day ?

(k) ... ... the Banaras Hindu University is notorious as a narcotics centre ? ... ... recently when the University was closed sine die, a heroin processing laboratory was unearthed in a hostel ?

(l) ... ... according to the Head of the Psychiatry Dept. of AIIMS, 80% of the from De-Addicts Centres resume their habit within 6 months of leaving the Centres ?

(m) ... ... under the VI 5-Year Plan, a scheme to begin a De-Addiction Clinic at AIIMS was included and a provision of Rs. 45 lakhs was made ? Till today, not a paisa has been spent ?

(n) ... ... the CBI, which is supposed to cater to the problems of drug-smuggling at an all-India level, has only 9 agents (all in Delhi), They do not have even proper wireless facilities !

(o) ... ... a spokesman of the Anti-Smuggling Wing of the Ministry of Finance admitted that drugs are not a priority on their list ? Arms, antiques, etc. are rated more important than drugs ? !!

(p) ... ... India, along with Turkey, is the only country in the world authorised by the UN ro cultivate poppy and extract opium ?

Courtsey : "THE PLAYERS"

MY IDEA OF A HAPPY LIFE

BHARAT BHUSHAN
B.A. IInd yaar

Happiness is a state of mind which is often independent of pleasure and pain. Everyone has his own philosophy of life. Some believe in "to eat, drink and be merry, for to-morrow you die," as an idea of a happy life. Others want to lead a life of aloofness. For a soldier fighting is a patriotic feeling. For a mountaineer, life is an adventure. For a lover, life is full of romance and beauty. For a poet it is an empty dream. Thus different peopie seek happiness in life in different things and ways.

There is none who does not want to lead a happy life. Happiness is however one of those things which are sought after than found. It is a shy bird, If we hurt it, it will fly from us. Despite our best efforts to seek happiness most of us remain unhappy throughout our life. As a matter of fact pleasure is a momentary excitement of the senses. It lies in outward things. The cinema for example, will give us pleasure but not happiness. It is a matter of senses. But happiness is an attitute of mind, a quality of the soul of a man. It lies within the power of one's ownself to be happy or unhappy, Milton, a famous English poet writes :—

"The mind is its own place,
And can make a hell of heaven,
And a heaven of hell."

So happiness is superior to pleasure, A well furnished bungalow, a car, a V.C.R. and other material things give us pleasure but not true happiness.

Now the question arises wherein lies true happiness. Pursuit of worldly things like wealth, power, position do not result in it. They bring selfishness, greed, pride and care in their wake. They make a man unhappy. Happiness depends not so much on our circumstances as on ourselves. The Kingdom of heaven is within us. The first essential of happiness is "a sound mind in a sound body." A man suffering from chronic indigestion or a damaged liver or some other physical allment cannot feel happy. In the same way a man suffering from a mental disease is unhappy as he cannot react to the word of senses in which he is placed in a healthy spirit. So good health make for happiness, otherwise, life becomes a burden.

Summing up my idea of a happy life, I think that it consists in a few simple wants satisfied with the sweet of one's own labour.

I would not like to live alone. My happiness would be incomplete if I do not have a few friends who would share the things I possess. I want the goodwill of the people and I would feel small, if others left me alone. Love of others makes life enjoyable. I would heip those person who are less fortunate in life than I am. It would go a long way in making my life happy. Solitude, righteousness, simplicity, love of nature and art are also some of others things which would give me true happiness.

Real hapiness lies in knowing ourselves—our place, function and aim in life. Above all, it lies in having a free mind with perfect peace. This can only come if we keep our heart and soul spiritually perfect. Too much love for materialism, a mad race for competition and mechanical life cannot give us true happiness. Let us simplify our wants to lead a happy life.

★ ★ ★

Practical Physics

K. D. PURI
B.Sc. Chem. (H) IInd yr.

A lady who once taught an adult-education class relates how she had a hard time convincing an elderly man that half a kilo of cotton weighed exactly the same as half a kilo of iron. The man shook his head slowly in disbelief, and she finally gave up when he said to her : 'Madam, you go down stairs and stand under the window outside and let me drop a half kilo of cotton on your head. Then let me drop a half kilo iron on your head. And then tell me which one is heavier."

Science Quiz

Ram Varma
B.Sc. (Final year)

1. ... ... have bulging eyes and see what is happing behind them.
2. Penicillin is an ... ... ,
3. ... ... is the largest plant of solar system.
4. Neils Bohr, a ... ... physicist first applied the quantum theory to build up an atom model.
5. The first professional geologist to go to the moon was ... ...
6. Dynamite was discovered by ... ...
7. The alloy ... ... is commonly used to make the heating element of electric heaters.
8. ... ... of an element have the same chemical properties but different masses.
9. Science secret communication is known as ... ...
10. ... ... is the element present in maximum amount in human body.
11. ... ... year is the distance travelled by the light in one year.
12. ... ... are used to reduce friction.
13. The ... ... is the only animal with four knees.
14. The first man to record the phase of Venus telescopically was ... ...
15. ... ... gave the theory of relativity.

With the answers arranged in the same sequence as the statements, the first letters of the answers will read. 'Rajdhani College'

---

1) Rabbits 2) Antibiotic 3) Jupitor 4) Danish 5) Harrison Schmitt 6) Alfred Bern hard 7) Nichrome 8) Isotopes 9) Cryptography 10) Oxygen 11) Light 12) Lubricants 13) Elephant 14) Galileo 15) Einstein

YZARC THINKINGS

RAJENDER RANA
B. Sc. (Gen) 1st year.

1. What would you call a sleeping bull ?

Bull dozer

× × × ×

2. Why should secrets not to be told in gardens ?

Because the beans stalk (Beans talk) there.

× × × ×

3. What gets wetter more than it dries ?

Towel.

× × × ×

4. Why do movie stars keep up cool ?

Thay have many fans.

× × × ×

5. What begins with 'T' ends with 'T' and full of 'T' ?

Teapot

× × × ×

6. What is the diffrence between A young girl of 16 and maid of 60 ?

One is happy & careless, the other is cappy & hairless

× × × ×

7. What is the difference between an umbrella and a woman ?

you can shut up the first one, but not the second one.

STRANGE BUT TRUE

Narendra Kumar
B Com. (H) Final year

Napolean born in 1760, Hitler born in 1889.
The difference is 129 years.

Napolean came to power in 1804, Hitler in 1933.
The difference is 129 years.

Napolean occupied Vienna in 1809, Hitler in 1938.
The difference is 129 years.

Napolean declared war on Russia in 1812, Hitler in 1941.
The difference is 129 years.

Napolean was defeated in 1816, Hitler in 1945.
The difference is 129 years.

Please help Laughing

Sunil Gupta
B. Sc. Ist yr.

1. Teacher : Write the spelling of blind pig.
   The students wrote BLND PG.
   Teacher : Where are the two I's ?
   Student : Sir, a blind pig has no eyes.

2. Lawyer : What is your age ?
   Girl : (with a sweet smile) Twenty five years and few months
   Lawyer : How many months ?
   Girl : About 30 months.

THIS IS CRICKET

RAM VARMA
B. Sc. (Final) year

"You give it a ten-minute exposure, and you don't even get a blurred photograph." Agreed cricket is a rather slow and sometimes a dull game, but what makes it almost a ridiculous game is perhaps the gentleman behind the microphone. For it seems a fundamental rule among all cricket commentators never to say anything in plain, hotest English. They will rather twist it into a confused, tortured metaphor.

And then even allowing for the excitability on the part of the commentator, there is Kapil Dev who comes racing in 'Over the wicket'. What does he do ? Praciice high jumps for the next olympics ?

Then there is also that calm voice reassuring you that although his ride is in a 'tight corner' (in a needle eye ?), Madan Lal is "setting down well keeping one end up". It is a see-saw going up and down as Madan settles 'down' to keep his end 'up' ?

Then of course, one can't forget Gavaskar 'driving handsomely through the covers or M. Amarnath "cutting the ball and sending it to the boundary" ? How Gavaskar gets permission to get a car into grounds, leave alone drive 'handsomely', and M. Amarnath to bring a knife to 'cut' the harmless ball and then heartlessly send it (to be hung ?) to the ropes, is anybody's guess.

Also there is the batsman who goes on his 'back foot' and then with his head high hooks and leaves one wondering which poor lady get 'hooked' to this proud guy.

While we are at it with Bedi-boy please tell us how he 'flights' the ball which ends up as a 'leg break' (is breaking legs legal ?) to the batsman ?

Arms are also cheap in this 'gentleman's game', because every other ball 'comes in with the arm'.

But the best is when Chandrashekar comes with the 'right arm round the wicket' to bowl his 'leg break' and a voice screams—"he's got 2 short legs-a-forward and a backward (help !)—a five leg, two slips (girlish !) a gully, a lover (to hide his 3 legs and lacy slips) and a 'Long off' to back him !!"

So much so for cricket jargon. But what happens to normally well balanced (mentally I mean !) people when they enter the commentator's box ? Are they poets sick at heart ? Or what else can one say of the commentator who informs listeners with a note of sympathy in his voice that Ravi Shastri was injured, while fielding at forward short leg, on his shoulder ? This is circus at its best !!

RELIGION-a noose around neck

ANAND SAGAR
B.A. (Hons.) IIIrd yr. English

No one is living with his eyes closed and immune to what is happening around everywhere.

What I mean here to say is that today the whole world is pacing towards progress but it's psyche is manacled with the rigidity of religion. Religion is the product of civilization, but today it is proving to be a dangerous epidemic which threatens the whole mankind and is hampering it's progress.

To make may arguments more persuasive I cite a few incidents. In India not a single day passes when there are no communal riots, whether it is a minor scuffle or a major brawl between different communities. November 1984 remains the darkest day in the history of Independent India, when a particular community went on rampage with looting and killing persons of different identity.

India's foreign policy had been formulated on panchsheel, which has been derived from Buddhism. But in contrast to it, in Sri Lanka the Buddhist clergy like others of their profession are bent to annihilate the Tamil minority simply on religious as well as on social grounds. The streets of Beirut are rained every day with bullets by the Militia men. Hitler thought Germans, of superior race than the Jews, so he tried his level best to eliminate the whole of Jews from Germany.

In return the Israelites have in their possession, the revered places of Christians and Muslims in Jerusalem. India's next wall neighbourer Pakistan has proclaimed itself as an Islamic state. It has even swooped to destroy the Ahmediyas, who are very well a part of the Moslem world. Certainly this is not the kind of universal love which the prophets of different religions preached.

Religion today is like a noose around one's neck which will lead to doom; Instead of bringing unification, it brings segregation. Today, man is busy excavating knowledge but is also busy burying himself in the ditch betng dug by him.

Laughing is the best Medicine

RAJEEV ARORA
B. Sc. (Gen.) Ist yr.

* A pretty young college girl got into a crowded D.T.C. bus. An elderly gentleman got up before he could say a word she gently pushed him back into his seat, saying "Thank you, but I really prefer to stand." The elderly man stood up again and she pushed him down and said that she wanted to stand. The third time he struggled to his feet shouting, "Madam, please let me off, I have already passed my stop.

* My wife often talks about her previous husband" said one to his friend. "You are lucky", replied his friend. "My wife often talks about her future husband."

HEY ! LET's LAUGH

ASHISH JHINGAN
B. Sc. (Chem.) Hons. 2nd yr.

* Tom : "I have been married 20 years and I'm still in love with the same woman."
Dick : "That's admirable."
Tom : "It's also dangerous. If my wife ever finds out she'll kill me."

* A girl to the fireman : "It must have taken a lot of courage to rescue me as you did ?"
Fireman : "Yes, I had to knock down three other guys who wanted to do it."

★

BELIEVE IT OR NOT

Collected by : Sanjay Aggarwal
B. Com. (H) IInd yr.

(1) The fastest production camera in the world is the Imacon 600, is capable of 600,000,000 pictures per second, with the maximum framing rate of 600 million frames per second.

(2) The longest venomous snake in the world, The king Cobra was found near Port Dicksan in Malaya in April, 1937, it measured 18 feet 9 inches long.

(3) The world's deepest Cave, 'Gouffredela Pierre Saint-Martin' in France is 4,370 feet below entrance.

(4) The highest bid in public auction was 5,544,000 dollars for a painting by Diego-Velazquez called portrait of 'Juan de Pareja' also known as 'The slave of Velazquez' bought by Widenstein Gallery, New York and sold by the Earl of Rodnor (U.K.)

(5) The world's largest submarine, is the nuclear powered submarine U.S.S. Ohio with 24 Trident missiles of 4,600 miles range and a submerged displacement of 18,400 tons.

(6) The world's most prolific murderer was established at the trial of Buhram, the Indian Thug, had strangled at least 931 victims with his yeliow and white cloth in the Oudh district between 1790 and 1840 A.D.

(7) The world's Kissing Champion, Jeffery R. Henzler of Indiana, Pennsylvania Kissed 3,225 girls in 8 hours at Regency Hall, Indiana, on March 5, 1977 at the rate of one per 8 93 seconds.

(8) The greatest bank robbery everdone was in Beirut Lebanon, when a gurrilla force blasted the vaults of the British Bank of the Middle East in Bab Idriss and cleared out safety deposit boxes with contents valued 50,000,000 dollars.

●●●

WANTED SOs.

Office of the Director General
Autority of Strikes, New Delhi.

Gautam Buddhiraja and Rakesh Manglik
B. Sc. Chem. (Hons.) I yr.

Applications are invited from bonafide students of Delhi University for the post of STRIKE ORGANISERS with Head-Quarters at the office of Director General, Authority of Strikes, New Delhi.

Appointment will be made temporarily for one year and may be made permanent if impressive results are produced during the first year.

PAY & ALLOWANCES :-

These is no pay for the post. However, special arrangement for lunch & dinner of HUNGER STRIKES will be made.

QUALIFICATIONS :-

1. Age- about 18-19 years.
2. Educational :- (a) Must have passed in IIIrd division in the last university exam.
   (b) Must have failed for at least two times during his college carrer.

ORGANISATIONAL :-

1. Ability to raise slogans of the highest volume.
2. Ability to organise strikes near university examinations.
3. Ability to interrupt and to find faults in all activities of university authorities.

Applications with attested copies of certificates should reach the office by March 30, 1985.

18/RAKA-84

BURNING HEARTS

LEENA
B. Sc. (Gen.) Ist yr.

Like the morning drops of dew
There are very - very few,

Who know to smile with their eye ;
Like the burning art,
Some are trembling in their heart ;
The ground is slippery,

So are their words,
Like the rain drops ;
Down rolls their eye drops ;
Like the large bay,

Their sorrows lay ;
Life is hard and wide,
They want to hide,
To them life is bore,

Because sorrows are more ;
Its hard for them to struggle,
With this horrible life ;
On this beautiful earth ;

The misfortunes took birth ;
To live a life
Full of hardships ;
But they too have heart,

And they too are
God's great art.

KNOWING A COMPUTER

ARVIND BAJAJ
B. Sc. (Gen.) Ist yr.

Man took a step forward when he learnt to count. Indian Temple builders introduced numbers into the art of construction. The abacus is the earliest known calculating device used in China 2000 years ago. The first calculating machine was made in 1642 by the great French Mathematician Blaise Pascal. In 1823 BABBAGE made a machine called 'Difference Engine'. The world had to wait for the advent of exciting field of electronics before a truly fast and automatic calculator could be made in 1946 in U.S.A. Eniac was the first electronic computer which used 19000 vaccum tubes and occupied the space of a large room. This could perform 5000 additions in one second. This was the dawn of first generation computers which used valves. The second generation computers came up in 1952 when transistors replaced the valves This increased speed, reduced size and lowered price. In 1964, the third generation computers, making use of integrated circuits (ICs) were developed, making the computer still faster and compact. Presently we are in the age of Fourth and Fifth generation computers, very large integrations (VLSI) whice have thousands of electronic components on a single chip.

What does a computer do ? Initially computer was thought to be only a fast calculating machine, but with its enormous capabilities, it is being thought as a "fast acting machine". Computer is being applied in banking, industry management, control financial management, sales control, space applications and medicines etc.

Not only this, home computers are finding great use in keeping record of the household items, budget and are being used for recreation purposes and amusement. Computer aided instructions are fast becoming an asset to student-teacher relations making the learning process more interesting. Microprocessor, which is the heart of a mini-computer is finding applications in cars, trains, aeroplanes, steel plants. Artificial intelligence, subject on which research is going on, will help to infuse intelligence in the computer hardwa e.

Lot of research is in progress in pattern recognition which will help to recognise even the scribbing on a paper and thus be useful to read hand written documents.

Will computers always be such a blessing ? Scholars and others are not sure. The power of computers can be missued. It is already being used in needless warfare. It can also adversely affect our lives.

In India, many people think that the advent of computers will cause a lot of unemployment. This is wrong. The application of computers opens a new field and another industry whose employment potentials are far more than the employees whose jobs we want to secure. It will cause only a shift of activity from primitive to modern, labourious and wasteful to easy and more purposeful, for the betterment of the society as a whole.

★ ★ ★

Mood ! Mood !! Mood !!!

ANIL ALAGH
B. Com. (H) Final yr.

The word 'mood' has become common in schools, colleges, offices etc. and every one is quite familier with this word uttered by every person in every society at every time and at every place.

You will find students saying early in the morning, "Mumma, today I am not in a mood to attend the school". It is the same and in greater force in colleges. If you ask you friend why he did not attend his school or college. he would shrug his shoulders and say, "Oh, I was not in a mood to attend the class".

People when asked for tea, would say, "No mood for tea". Very often when teacher comes in the class, the students shout with one voice, "we are in no 'mood to study'. Same is the case with teachers. If you go to some teacher to get something corrected, his reply would be, "I am not in a mood to do it now, come some other time", If you are thinking of going to the principal for some work, you must make sure that he is in a proper mood to listen to you sympathetically.

Dowry Preys Love Humanity Fraternity . . .

NARENDRA GUPTA
B.Sc. (G) Ist year

"Mrs. Neera, a 23 year old housewife of West Delhi colony, allegedly committed suicide today by setting herself on fire. Her father-in-law has reported that she herself set fire to her clothes after pouring kerosine on them".

(This extract has been taken from today in newspaper.) Hardly a day or two passes without hearing such news. Was this really a suicide? No, this was a death due to the insatiesic greed of bride's husband and in-laws. Now-a-days a mother-in-law forgets that once she was also a daughter-in-law, what would have happened to her if her mother-in-law had been of the same type She never thinks of her daughter who might receive the same fate.

This (insatiable greed) creates a wall of hatred between bride and her mother-in-law which results in the death of the former.

How does thts evil grow and from where? It is obvious from the present condition of our country. There are large number of people who are poor. Only a small percentage of the whole population is rich. Every one has a desire to become rich Most of the poor families think that they must get everything from the bride's house They do not think of the saying ILLGOTTEN IS ILLSPENT.

Any youngman who makes dowry a condition of marrying discredits his education and dishonours womanhood. Women should refuse to marry a man who demands price "DAHEJ" for marrying and a man should fight against this evil, even with his parents.

This dowry has emasculated us, constained our intellect and rendered us effiminate and so a strong public opinion must be created in condemnation of degrading practice of dowry and youngmen, who soil their hands with illgotten gold should be socially boycotted by the public. It is our moral duty to try our best to abolish this evil which of course with the greed and materialism has been tightening its deman like grip of our society.

Youth and Age Will Never Agree

VIVEK ARORA
B. Com. (H) Ist year

Youth is like a river emerging from its parent. It doesn't wait for anything and wants to capture the heights with vigour and vitality. Youth never wants to take things for granted and never wants to accept the laws and theories formulated by ancestors. It tries to improve the hypothesis by intraspection and circumspection. It wants to add something significant to the bank of knowledge and in the process it gains many experiences. There is such a hangover in this age that everything looks colourful and there is optimism to reveal the facts of life. It looks as if there is no limit for aspirations and imaginations. Most of the great discoveries and inventions take place in this age. Youth has snapped the sky, measured the ocean and wrested with the nature, for many of her hidden treasures.

After the age of optimism, there come some stroms which shatter the ideas and free thoughts of youth. The economic, political, social and physical factors bind the youth to make its thinking rational and confine it to the limits imposed by ancestors. This is the time when the river comes into plains from the mountains. The age of maturity and experiences comes. The experiences which a person has gained in his youth, cannot be implemented in the old age due to various factors which mould his life and attributes. These experiences can only be helpful for the next generation which will again ask the proof of hypothesis and theories. The new generation will not take things for granted, but it will try to prove it by actually doing them. Rightly some one has said if youth is given after youth the world would have been different.

Youth and age have contradicted each other since the evolution of mankind and whenever some equilibrium is formed between these, the world has witnessed stupendous esclation in the intended field. The need of today is the reconciliation these to ages, which is indispensable for human welfare.

The Shakespearen Romance

SNEH
B.A. Eng. (Hons.) Ist yr.

Questions	Answers
1. Who were the bride and bride-groom ?	1. "Romeo and Juliet".
2. When did he propose ?	2. "Twelfth Night".
3. What did she reply ?	3. "As you like it".
4. Who were the bridegroom's best friends ?	4. "Two Gentlemen of Verona".
5. Who prepared the wedding breakfast ?	5. "Merry Wives of Windsor".
6. What was the honeymoon like ?	6. "A Midsummer Night's Dream".
7. Where did they live after marriage ?	7. "Hamlet".
8. How would you describe their first quarrel ?	8. "Much Ado About Nothing".
9. What was the bride-groom's chief occupation ?	9. "Taming of the Shrew".
10. What was their married life like ?	10. "Tempest".

अवलोकन

राजधानी कॉलेज छात्र-संघ 1984 – 85

विगत वर्षों के समान इस वर्ष भी दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र-संघ के चुनावों के साथ राजधानी कालेज छात्र-संघ के चुनाव दिनांक 8 सितम्बर 1984 को सम्पन्न हुए। चुनाव का संचालन डा० जे० पी० मिश्र (मुख्य चुनाव अधिकारी), डा० सुरेन्द्र सिंह राव, डा० नरेन्द्र कुमार गौतम, डा० धर्मेन्द्र नाथ, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री एल० पी० मित्तल, श्री सुधीर उपाध्याय तथा डा० विशन सिंह यादव (परामर्शदाता छात्र–संघ) ने किया। छात्र-संघ की कार्यकारिणी के लिए श्री मनोज मदान (अध्यक्ष), श्री सुनील शर्मा (उपाध्यक्ष), श्री अरूण गौड़ (सचिव), श्री संदीप चतरथ (सहसचिव) तथा जय भगवान (हिन्दी आनर्स-द्वितीय वर्ष), हेमचन्द,(इतिहास आनर्स-द्वितीय वर्ष) मनोश खोसला (अर्थशास्त्र आनर्स-प्रथम वर्ष), हरीश सचदेव (राजनीति शास्त्र आनर्स–तृतीय वर्ष), रवीन्द्र सिक्का (इंगलिश आनर्स-द्वितीय वर्ष), विजय कुमार सिंघानिया (बी० काम आनर्स–प्रथम वर्ष), महेश यात्रा (बी० काम आनर्स-प्रथम वर्ष), अरविन्द मेहता (बी० काम० आनर्स-द्वितीय वर्ष), सजीव कौशिक (भौतिकी आनर्स–द्वितीय वर्ष), चन्द्रशेखर (रसायन आनर्स-द्वितीय वर्ष), राजेन्द्रसिंह छाबड़ा (बी०ए० पास-द्वितीय वर्ष), चन्द्र कमल (बी०ए० पास-प्रथमवर्ष), सुभाष चन्द (बी०ए० पास द्वितीय वर्ष), महेन्द्रसिंह भाटिया (बी०ए० पास-द्वितीय वर्ष), सुशील कुमार शर्मा (बी०ए० पास तृतीय वष), परमिन्दर कुमार (बी०एस–सी० (सामान्य) प्रथम वर्ष), सुरेश कुमार (बी०एस-सी० (सामान्य) द्वितीय वर्ष), तथा प्रवीण यादव (बी०-एससी० सामान्य प्रथम वर्ष) छात्र-संघ कायकारिणी के सदस्य रूप में सफल घोषित किए गए।

श्री अश्विनी कुमार (बी०ए० सामान्य) तथा श्री शेरसिंह (बी० एस-सी० सामान्य) दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र-संघ के केन्द्रीय पार्षद के रूप में चुने गए।

छात्र-संघ का उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय में चीनी एवं जापानी अध्ययन विभाग के प्रोफेसर डा० बी० पी दत्त द्वारा सम्पन्न हुआ। छात्र-संघ ने अध्ययन-अध्यापन सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के प्रयास के साथ-साथ शैक्षणिक यात्रा तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया। वतमान शैक्षणिक सत्र के अंत में छात्र-संघ ने कालेज में एक सांस्कृतिक सप्ताह सारग-85' का भी आयोजन किया। इसका उदघाटन गढ़वाल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति श्री बी० डी० भट्ट द्वारा सम्पन्न हुआ। 21 फरवरी से 23 फरवरी तक डा० रमाशंकर श्रीवास्तव के संचालन में नाटक-समारोह आयोजित हुआ जिसका उद्घाटन कालेज के प्राचार्य डा० रायमोहन पाल ने किया। इस प्रतियोगितात्मक आयोजन में दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कालेजों के नाट्य दलों ने भाग लिया। पारितोषिक–वितरण हिन्दी रंगमंच के प्रसिद्ध नाटककार डा० लक्ष्मी नारायण लाल द्वारा सम्पन्न हुआ।

—डॉ० विशन सिंह यादव

छात्र–संघ के अध्यक्ष की ओर से—

इस वर्ष 18 से 23 फरवरी का पूरा सप्ताह अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों—'सारंग–85, की चहल–पहल से गूंजता रहा। यह अपने ढंग का प्रथम सफल आयोजन था। इसमें वाद–विवाद, गीत-गज़ल, वाद्य, सामान्यज्ञान, रंगोली, मेंहदी तथा अभिनय की प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुई जिनमें दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इन विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन में हमें अपने सहपाठियों और गुरुजनों से पूर्ण सहयोग मिला जिसके लिए हम उनके आभारी हैं। श्री कश्मीरी लाल जी के भी हम विशेष आभारी हैं जिन्होंने श्री सत्य सांई सभा, दिल्ली की ओर से 'सारंग-85' के अन्तर्गत भाषण प्रतियोगिता प्रायोजित करवाई। निश्चय ही इस वर्ष का आयोजन कालेज-छात्र संघ के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़कर गया।

—मनोज कुमार मदान

RAJDHANI COLLEGE DRAMA FESTIVAL
SARANG-85

This year an Inter College Drama Festival was held as the landmark in the whole Delhi University from 21st to 23rd Feb. 85, in our college auditorium.

A Drama Festival Organising Committee was formed with Mr. Ramesh Kumar (B.A. Pass-II), Mr. Surya Prakash (B.Sc. II) & Mr. Sanjay Aggarwal (B. Com. Hons. II) who were the main figures to make the Festival a grand success. Moreover, the student Union President Mr. Manoj Madan made hectic efforts to cooperate with the Drama Organising Committee. Credit also goes to our respected teachers—Dr. R.S. Srivastava Dr. O.P. Sharma, Mr. S.C. Upadhyay, Dr. S.C. Narula, Dr. B.S. Yadav, Mr. K.K. Sharma, Dr. N.K. Gautam, Dr. Dharmendra Nath and Dr. B.K. Avinashi for their kind assistances and cooperation. As many as nine plays were staged by eight colleges of Delhi University. Rajdhani College staged two plays i.e., (Purane Patte— Hindi) written by Dr. R.S. Srivastava & directed by Sanjay Aggarwal and the Only English Play 'Romancres', Jamia Milia Islamic presented 'Harijan Dahan',Kirori Mal College presented 'Natak Nahin', 'Delhi Uncha Sunti Hai', by Dayal Singh College, 'Ek Akasmik Ghatna' by Indra Prastha College, 'Badshah Akabar' by Shivaji College, 'Strike' by College of Vocational Studies and 'Natak Nahin' by A.R.S.D. College. The college auditorium was packed on all three days and the plays were appreciated by the audience. The play 'Natak Nahin' presented by Kirori Mal College was awarded the Best Play presentation by the Judges—Mr. Hemant Misra, Mr. Ramesh Manchanda & Dr. O.P. Sharma. Many prizes and certificates were awarded to the participants by our chief guest Dr. Lakshmi Narain Lal.

We express our gratitude to the students, president, student union & teachers for their cooperation.

—Sanjay Aggarwal

अन्तर्कक्षा सांस्कृतिक स्पर्द्धा

इस स्पर्द्धा का उद्देश्य अपने महाविद्यालय की प्रतिभाओं को प्रकाश में लाना था। इसमें सात प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई— सामान्यज्ञान प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, अंग्रेजी तथा हिन्दी एकांकी, एकल गायन, पाश्चात्य नृत्य तथा रंगोली। चेस और कैरम की प्रतियोगिताएँ भी हुई। इन सभी में छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा उनकी प्रतिभा और प्रदर्शन के अनुरूप उन्हें पुरस्कृत किया गया।

—राजीव आनन्द

ENGLISH LITERARY ASSOCIATION

The beginning of the session was marked by a colourful get-together. As the freshers stepped in, they provided essence to the body of this organization by their enthusiastic involvement. Suggestions were exchanged and a plan of activities wa sorted out.

Paper reading on 'Antigone' took place on 27th Sept. '84. A fortnightly feature 'Chocolate Quiz' was also launched. This was followed by Lit. Quiz and Language Quiz. Teams from B.Com. (Hons.) and Chemistry Hons. also participated in the Lang. Quiz.

An on-the-spot essay competition was organised on 4-3-85. The association joined hands with Population Education Club of N.S.S. Unit of the College in organising another essay competition.

The inter-class Quiz competition was won by the English Hons. team. Students of Eng. Hons. 2nd and 1st year also went round other colleges and participated in a number of events. M. Usha of 2nd year won second prize in Bhagvan Sri Sathya Sewa Organisation's Declamation Contest and Bhupinder Singh of 1st year in the Lit. Quiz of S.V. College.

A farewell-cum-prize distribution function marked the end of the session.

—Harpal Singh
Eng. H. (2nd yr)

CHEMICAL SOCIETY

The office bearers for the academic session 1984-85 are—Ms. Manisha Tiwari President, Rajesh Mahajan, Vice-President, Chandra Sekhar, Secretary, Sandeep Arya, Jt. Secretary and Vinay Garg, Treasurer.

The inaugural address of the society was delivered by Dr. H.M.L. Chawla, Reader in I.I.T., New Delhi on 29.11.84. The lecture on 'Pollution' was informative.

An educational-cum-pleasure trip was organised to Mohan Meakin Industrial Complex & Dhasna Canal Rest House on 31-1-85. Besides acquiring knowledge about the various industrial units. the students thoroughly enjoyed themselves by inspecting the 'marble sculpture wing' in Mohan Meakins.

A General Science Quiz compared by Dr. Balraj Avinashi was organised on 12-3-85. The team comprising M/s. Sivaram, Navdeep Singh and Bhupinder Singh bagged the 1st prize. The teams adjudged braketed II were those of M/s Anuj Diwan Alok Sharma and Udai Razdaan and of M/s. Nidhinath Ashish and Gautam.

In the 3rd week of March the society held its Valedictory function in which the above mentioned prizes were distributed and the convenor of the Society, Dr. Balraj Avinashi gave a talk on 'Space' elaborating the space probe, research and utilization.

—Dr. B. K. Avinashi

N.S.S.—

SERVICE WITH COMPASSION

N.S.S. Unit, Rajdhani College with the co-operation of the Principal Advisory Committee and students leaders completed another year of fruitful activities. We had planned different type of activities to be taken up as Regular Programmes and special Camping Programme.

The year started with the routine type of orientation to the Volunteers and some eminent persons like Sh. N.K. Jain, (J.A.C.), Mrs Usha Banerjee Programme Co-ordinator, NSS, University of Delhi. Mr. J.K. Bhatia Assitt. Programme Coordinator, NSS University of Delhi, Prof. P.L. Govil, Head Deptt. of Social work. Sh. O.P. Chauhan Gandhi Darshan, explained at different gatherings the importance of NSS work in various fields.

Hobby Courses, very popular among the student volunteers were appreciated by the community also. The classes in paper cutting and pasting were very popular. One such design was presented to Dr. Usha Banerjee and Prof. P.L. Govil when they went to meet them in their respective offices. An Inter College Mehandi Competition was held during the SARANG-85 Festival of Rajdhani College in which attractive cash prizes were also awarded. Health Care and Beauty Care classes were conducted and they fascinated a lot of students.

Gardening and Nursery Development project was also very popular. Our efforts in the last two years in Akhil Bhartiya Netrahin Sangh have started bearing fruit. Now it is a beautiful sight on the nursery sight. We have developed new beds and are sure before the onset of the monsoon session we will be able to plant beautiful sapplings allaround the Blind Home which have been reared in our own nursery. The Gulmohar plants have come up and the year ahead will be full of flowers and greenery on the

front side of the institution. The fruit trees have started bearing fruits and we are sure that the blinds will be able to enjoy the guavas and anars growing within their own compound. Some more fruit trees are also planned to be planted this year.

Population Education was also very much appreciated by the students. Our visits to FPAI and other institutions were of great educational value to stndents and our student youth.

As a part of orientation to new volunteers and renewing our old contacts many visits were undertaken to the different welfare institutions in Delhi working for the welfare of those who are not able to rise up in the main stream of life due to one or the other handicap. Our visits to Federation for the Welfare of Mentally Retarded, Multipurpose Training Centre for the Deaf; Cheshine Home; Nirmal Hriday; Sewa Kutir and Blind Relief Association were really motivating and many more students enquired about possibilities of work that could be taken up for these persons.

In the event of unfortunate riots after the sad demise of our beloved Prime Minister Mrs. Indira Gandhi Our students under the institutional guidance of Sh. S.N. Mukerjee worked for the welfare of riot hit people in different ways. Collection of Funds for Central Relief Committee, Surveying ihe relief Camps, Rendering all possible help to voluntary association like Red Cross in the distribution of relief material were some of the programmes taken up by our students. A report of the dead during these riots was submitted to the university office with a list of dead and their dependents residing in Sultanpuri (J.J. Colony).

One of the major achievements of this year was the selection of our two volunteers Maya Devi II yr. & Alok I yr. in the Republic Day Parade. As a part of International Youth Year the NSS youth was given a handy task of jogging and leading a tableause of the Ministry of Sports depicting the youth on the move. The students stayed for ten days in Jawaharlal Nehru Stadium and the programme Officer was given a chance to lead the group of 57 youth volunteers.

Some of the popular activities were Book Club, Photography Club, Cultural Group and Trekking Group. The Trekking Club is planning to make use of some of the sponsored programmes of DMA & YHA.

The Unit arranged two long term camps during the holidays and we were able to undertake really useful projects. We have prepared some reading material on different topics and are applying for special grants to our Universjty Head Office for the printing and circulation of such useful material.

We are sure that if the present atmosphere of participation and community work is given preference in the college community our NSS Unit can work still more vigorously.

SUDHIR UPADHYAY

N.C.C.

Students of the college took active part in N.C.C. activities during the year. Apart from regular weekly drills, they participated in Summer trek, cycle tour, Annual Training Camp and P.M.'S rally. Our outstanding cadet was Sgt. Sarabjit Singh who stood first from Delhi contingent at the Republic Day Camp. Other notable performances in various activities were by Cdt./Capt. D S. Bisht (Naval) Sgt. Jogesh Gupta (Army). Major O. P. Aggarwal provided competent leadership to the boys and encouraged them to along the path of Unity and Discipline—which is the motto of N.C.C.

SUNIL SONDHI

सब शिक्षक बनें तो शिष्य कौन बनेगा ? इसलिए हम सब शिष्य बनें।

●

जितने गहरे पानी में जाओ, उतने ही ज्यादा रत्न मिलते हैं।

●

भूलों के साथ संग्राम करना ही जीवन है।

—महात्मा गांधी

शोक-श्रद्धांजलि

राजधानी कॉलेज के समस्त सदस्य और छात्रगण भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के आकस्मिक निधन पर अपना गहरा शोक व्यक्त करते हैं ।

कॉलेज के कर्मचारी श्री विश्वनाथ मिश्र, राजेश (छात्र) तथा श्रीभगवान यादव (छात्र) के भी आकस्मिक निधन पर हम अपना शोक व्यक्त करते हुए उन सभी की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्राथना करते हैं ।

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS REQUIRED UNDER CLAUSE '19-D' OF THE PRESS AND REGISTRATION OF BOOKS ACT

1.	Place of Publication	...	Raja Garden, New Delhi-110015.
2.	Periodicity of Publication	...	Annual
3.	(a) Printer's Name	...	R. M. Pal
	(b) Nationality	...	Indian
	(c) Address	...	Rajdhani College, Raja Garden
		...	New Delhi-110015.
4.	(a) Publisher's Name	...	Principal R. M. Pal
	(b) Nationality	...	Indian
	(c) Address	...	Rajdhani College, Raja Garden,
		...	New Delhi-110015.
5.	(a) Editor-in-chief	...	Principal R. M. Pal
	(b) Nationality	...	Indian
	(c) Address	...	Rajdhani College, Raja Garden,
6.	Name & Address of individuals who own the newspaper and partners or shareholders.	...	Rajdhani College, Raja Garden,
		...	New Delhi-110015.

I, R.M. Pal, hereby declare that the particlars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
R. M. PAL

Printed at : BHAWANA ART PRESS B-260, Indra Nagar, Delhi-110033. Phone : 7119775, 7120790